₹45

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

फरवरी, 2015

आशा खबर

जानिए अपना भविष्य

वेलेंनटाइन डे पर खास

सोलमेट

सशक्त भाजपा सशक्त भारत

साथ आएं देश बनाएं

भाजपा के सदस्य बने

मोबाइल से निशुल्क डायल करें

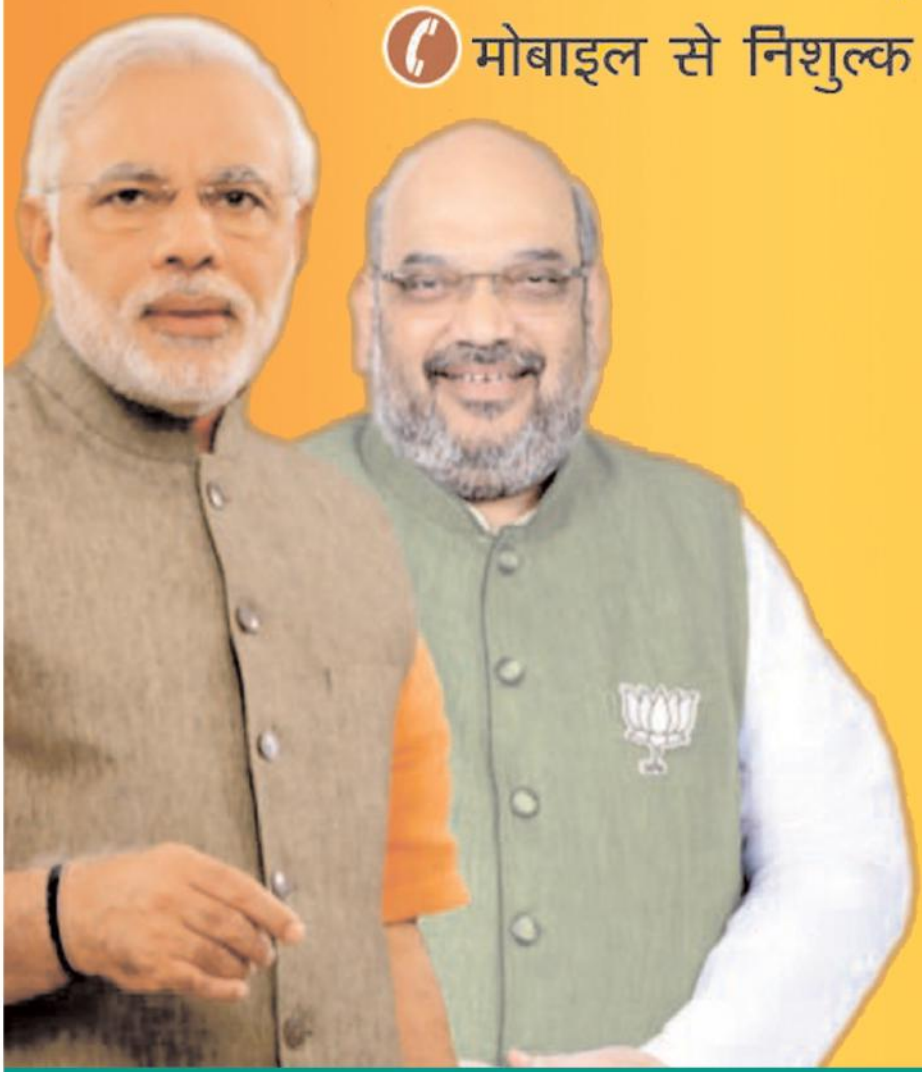

1800 266 2020

विदुप अग्रहरी
नेता, भाजपा

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

आशा खबर

सच का दम

वर्ष-1 अंक 4 फरवरी 2015

सम्पादक

रजनी कान्त श्रीवास्तव

मुख्य सलाहकार सम्पादक

पुनीत शुक्ला,नवीन श्रीवास्तव,संजय कुमार श्रीवास्तव, डॉ. नीरज

सह सम्पादक

दीपक कुमार सिंह

संवादाता

उत्तर प्रदेश	विपुल श्रीवास्तव
दिल्ली	मुकेश कुमार कुशवाहा
बिहार	रौशन कुमार
राजस्थान	सत्य नारायण
महाराष्ट्र	रुपेश कुमार
इलाहाबाद	शैलेष त्रिपाठी
भदोही	परवेश श्रीवास्तव
वाराणसी	अमित पांडेय
मिर्जापुर	मृत्युंजय कुमार चौधरी
बलिया	राजेन्द्र श्रीवास्तव
गाजीपुर	अखिलेश शर्मा
कौशाम्बी	प्रमोद कुमार यादव
बांदा	शैलेष कुमार गुप्ता
झांसी	सत्य देव
फतेहपुर	आदित्य मिश्रा
लखनऊ	प्रदीप सिंह
छायाकार	गिरीश चन्द्र
विधि सलाहकार	पी० सी० श्रीवास्तव,सुप्रीम कोर्ट
	शशि शेखर मिश्रा, हाईकोर्ट
	अवनीश कुमार श्रीवास्तव,हाईकोर्ट
	धनजय कुमार सिंह,जिला कचहरी
	सत्य प्रकाश उपाध्याय,तहसील
	रविन्द्र नाथ श्रीवास्तवद्वतहसील
प्रबंधक	अमरीष कान्त श्रीवास्तव
प्रसार व्यवस्थापक	रजनीश श्रीवास्तव
विज्ञापन व्यवस्थापक	दीपक कुमार श्रीवास्तव
तकनिकी प्रबंधक	मोहित कुमार श्रीवास्तव
तकनिकी व्यवस्थापक	कुलदीप कुशवाहा
साज सज्जा प्रबंधक	आराध्या पांडेय
कम्पोजिंग व्यवस्थापक	रंजीत कुमार केसरवानी
ऑफिस व्यवस्थापक	दीपिका केसरवानी

सम्पादकीय कार्यालय

81/6/2ए, चकदोदी, नैनी
इलाहाबाद - 211008
फोन न - 9415680998-0523-2694058
www.ashkhabar.com
e-mail :- editor@ashakhabar.com

भारतीय सेना ही क्यों?

34,35

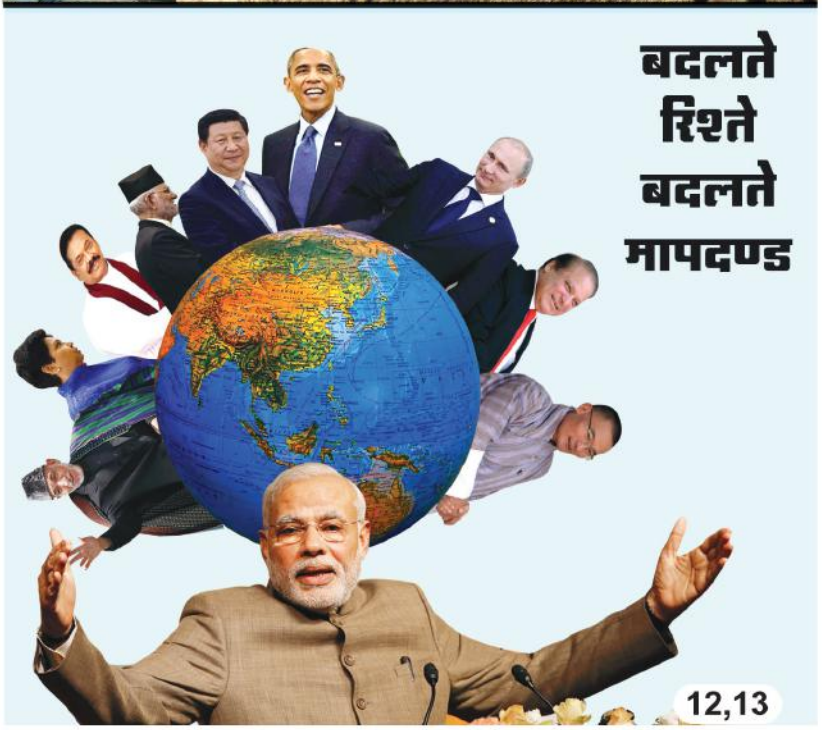

बदलते रिश्ते बदलते मापदण्ड

12,13

धोनी का टेस्ट से संन्यास विराट युग शुरु

54,55

सुहागरात के लिए 10 टिप्स

51

पत्रिका में प्रकाशित समाचारो/ रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार है इसमें प्रकाशक/सम्पादक की आम सहमति नही है रचना में कथनो/तथ्यों/आंकड़ो के लिये लेखक स्वयं उत्तरदायी है। उपरोक्त सभी पद अवैतनिक है।
स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक तारणी शरण श्रीवास्तव द्वारा भार्गव आफसेट प्रेस 2, बाई का बाग इलाहाबाद से मुद्रित एवं 81/6/2 ए चकदोदी नैनी इलाहाबाद से प्रकाशित। "सभी वाद-विवाद इलाहाबाद के सक्षम न्यायालय के अधीन मान्य होगा"

इन बातो का रखें ख्याल..

उपहार लेते समय

1. उपहार से अधिक व्यक्ति की भावनायें महत्वपूर्ण होती है, उपहार की कीमत नही देखनी चाहिए, बल्कि देने वाले की भावनाओं का सम्मान करना चाहिये उपहार आपको पसन्द ना आए, फिर भी देने वाले की भावनाओं का सम्मान करते हुए गिफ्ट लेते समय देने वाले को धन्यवाद देना ना भूले।

2. अगर कोई व्यक्ति कोरियर या पार्सल के माध्यम से आपके लिए उपहार भेजे तो, फोन से उसे धन्यवाद सहित प्राप्ति की सूचना देना ना भूले।

3. अपने करीबी लोगो द्वारा दिए गए उपहार का इस्तेमाल करने के बाद उन्हें यह जरुर बताएँ कि आपने उनके उपहार का इस्तेमाल कर लिया है, इससे देने वाले को बहुत खुशी मिलेगी।

4. अगर कोई आपको उपहार दे तो उसके सामने ही पैकिंग न खोले। अगर कभी ऐसा करना ही हो तो पहले देने वाले की इजाजत जरुर लें।

5. जब कोई उपहार दे तो उससे 'इसकी क्या जरुरत थीं', 'यह सामान तो पहले से मेरे पास था', 'यह तो बहुत महंगा होगा' जैसे जुमले कहने के बजाय उसके सामने अपनी खुशी का इजहार करें। इससे उपहार देने वाले व्यक्ति को भी अच्छा लगेगा।

उपहार देते समय

हमारे सामाजिक जीवन में कई ऐसे अवसर आते है, जब हम एक-दूसरे को उपहार देते है। उपहार अपनों के प्रति प्रेम प्रदर्शित करने का सबसे अच्छा जरिया है। लेकिन उपहार देते या लेते समय आपको कुछ बातो का विशेष रुप से ध्यान रखना चाहिए ताकि हर उपहार आपके लिए यादगार बन जाए।

1. किसी को उपहार देते समय उसकी आयु, रुचि और पसंद-नापसंद आदि का विशेष रुप से ख्याल रखना चाहिए।

2. जिनके साथ अनौपचारिक सम्बन्ध हो उन्हें उपहार देते समय उनकी जरुरत का भी ध्यान रखें लेकिन जिनके साथ औपचारिक सम्बन्ध हो उनके लिए उपहारों का चुनाव करते समय विशेष रुप से सजगता बरतें। ऐसे लोगो को ड्रेस या रोजमर्रा की जरुरत की दूसरी चीजें देने के बजाय बुके, पेन, शो पीसेज आदि देना ज्यादा अच्छा रहता है।

3. जरुरी नही कि आप हमेशा महंगे उपहार ही दें। आप अपनी सुरुचि और कलात्मक सूझबूझ का परिचय देते हुए कम कीमत में भी उपहार देने के लिए सुंदर वस्तुएं खरीद सकती है। इस लिहाज से हस्तशिल्प से बनी वस्तुएं बहुत अच्छी साबित होती है।

4. उपहार चाहे मामूली ही क्यों न हो, पर उसे हमेशा आकर्षक ढंग से पैक करना चाहिए। इससे लेने और देने वाले दोनो व्यक्तियों को खुशी मिलती है।

5. यह जरुरी नही है कि उपहार के रुप में हमेशा बाजार से कोई समान ही खरीद कर दिया जाए। अगर आपकी कोई सहेली पढ़ने की शौकीन है तो उसकी रुचि से सम्बन्धित 'आशा खबर' पत्रिका का सब्सक्रिप्शन उसे उपहार स्वरुप दें। अगर आपकी भाभी अपने सौंदर्य के प्रति सचेत है तो उन्हें किसी अच्छे ब्यूटी पॉर्लर का पैकेज या गिफ्ट वाउचर दे सकती है। इसी तरह बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए किसी बैंक के फिक्स्ड डिपॉजिट स्कीम का उपहार और धार्मिक प्रवृत्ति वाले बुजुर्गो के लिए किसी तीर्थस्थल की यात्रा के पैकेज टूर का टिकट बहुत अच्छा उपहार साबित होगा।

6. अंत में सबसे जरुरी बात यह है कि उपहार से प्राइस टैग हटाना ना भूले और उपहार देने के बाद लेने वाले व्यक्ति से बार-बार अपने उपहार का जिक्र न करें। इससे वह असहज महसूस कर सकता है।

क्यों न कुछ इस वैलेंटाइन डे

वैसे तो वैलेंटाइन वीक शुरु हो चुका है, और वैलेंटाइन डे नजदीक आ रहा है। युवा जोड़ो की बेसब्री भी परवान चढ़ती जा रही है। इस दिन उपहार देने-लेने का सिलसिला बड़ा आम होता है, इसलिए गिफ्ट हमेशा ऐसा होना चाहिए, जो दिल की बात आसानी से कह दें। अक्सर उपहार लेते वक्त लड़कों को लड़कियों की पसन्द पता होती है पर जब लड़कियो को गिफ्ट देने की बारी आती है तो वह हमेशा ही कन्फ्यूज रहती है। गिफ्ट ऐसा होना चाहिये जो दिल पर छाप छोड़ दे। अगर इस बार अपनी गर्लफ्रेंड या बीवी का वैलेंटाइन डे यादगार बनाना चाहते है तो उसे कुछ ऐसा तोहफा दें जिसे देखकर वह खुश हो जाए और आपको हमेशा के लिए अपना बना लें। गिफ्ट कुछ भी हो सकता है जैसे कि अगर आपके ब्वॉयफ्रेंड या पति को गैजेट का बड़ा शौक है तो उन्हें मोबाइल या आइपॉड दे सकती है। यदि आपकी गर्लफ्रेंड या पत्नी को कपड़ो का बहुत शौक है तो उसे रेड कलर की ड्रेस गिफ्ट कर सकते हैं। अगर आप को समझ में नही आ रहा है कि इस वैलेंटाइन पर उन्हें क्या गिफ्ट दिया जाए तो हमारे द्वारा दिये गए कुछ रोमांटिक गिफ्ट आइडियाज पर ध्यान दें.....

रिंग

लड़कियों को आभूषणों से बहुत प्यार होता है। इसको पा कर वह एक रानी की तरह महसूस करती है इसलिए उन्हें एक रिंग गिफ्ट करें और अपने दिल की बात उन तक पहुँचाएँ।

रोमांटिक डिनर

इससे कोई फर्क नही पड़ता कि आप उपहार में क्या दे रहे है बस वह उपहार आपके दिल की बातो को उजागर करने वाला होना चाहिए। अगर आप उन्हें एक स्वीट से कैंडल लाइट डिनर पर ले जाएगें, तो उन्हें अपने खास होने का एहसास होगा।

गैजेट

लड़को को गैजेट्स से बहुत प्यार होता है। लड़के टेक्नोफ्रीक होते है इसलिए उनका लगाव वीडियोगेम, मोबाइल या नए लॉन्च हुए आइपॉड की ओर ज्यादा रहता है। आप उन्हे कोई ऐसा गैजेट गिफ्ट कर सकती है जो उनके काम आए और जिसे वह बरसों से तलाश रहे हो।

खास हो जाय

परफ्यूम

अगर आपके प्रेमी या पति को भी परफ्यूम से प्यार है तो उन्हें एक महगाँ और ब्रांडेड परफ्यूम गिफ्ट करें। ब्रांड जैसे गेस, गूची या फिर डीजल हो सकता है। अगर आपका वैलेंटाइन कोई खास तरह के ब्रांड को पसंद करता है तो उसे वही खरीद कर दें।

स्टाइलिश वॉच

कोई जरुरी नही है कि हर आदमी केवल ब्रांडेड घड़ी ही पसंद करें। घड़ियों में वह बात होनी चाहिए जो एक ही नजर में आँखों को पसंद आ जाए। आपने अपने प्रेमी या पति की कलाई को तो देखा ही होगा, तो बस उसी को ध्यान में रख कर ऐसी घड़ी चुने जो उनकी पर्सनैलिटी को सूट करे।

फूलों का गुलदस्ता और चॉकलेट

अपने प्यार के एहसास को दर्शाने का इससे अच्छा उपहार तो हो ही नही सकता क्योंकि फूलों की ताजगी आपके प्यार को और भी ताजा बनाने का कार्य करेगी। लाल रंग के फूलो के गुलदस्ते के साथ उन्हें चॉकलेट देना बिल्कुल ना भूले।

उनके लिये मनपसंद व्यंजन बनायें

वैलेंटाइन के लिए उन्ही की मनपसन्द डिश बनाकर उपहार में दे। इससे उन्हें एहसास होगा कि आप उनके लिए कुछ भी कर सकते है और आप उनसे कितना प्यार करते है।

रेड ड्रेस

इस दिन के लिए उन्हें एक लाल रंग की खास ड्रेस गिफ्ट करें। ड्रेस के रुप में वह गाउन, टी शर्ट, सूट या साड़ी जैसा परिधान हो सकता है। कपड़े पाकर कोई भी खुश हो जाता है इसलिए हो सकता है कि इस दिन वह अपना दिल आपको दे ही बैठे।

पार्टनर को सरप्राइज देने के लिए लव लेटर लिखे

क्या आपने कभी अपने पार्टनर को लव लेटर लिखा है? शायद नही, तो इस वैलेंटाइन डे पर अपने दिल की बात लिखकर कीजिए, हाँ लेटर लिखते वक्त कुछ ऐसी बातों को अवॉइड करना होगा जो टाइम के साथ आउटडेटेड हो चुकी है, इसके लिए हमने कलेक्ट किए कुछ इनपुट्स जिनकी मदद से लेटर लिखते वक्त आप किसी भी तरह की गलती से बच सकेंगे।

अपने पार्टनर को सरप्राइज देने के लिए लव लेटर लिख रहे है तो ध्यान रखें कि कहीं उन्हें इम्प्रेस करने के बजाय डिप्रेस ना कर दे पहले और अब के लव लेटर में आ चुके है कुछ बेसिक चेंजेस जिसे जानना आपके लिए बेहद जरुरी है क्योंकि आप नही चाहेगें कि लव लेटर लिखने में आपकी मेंहनत बेकार चली जाए.....

शायरी का उपयोग न करे

नो डाउट पहले दिल की बात एक्सप्रेस करने के लिए शायरियाँ सक्सेसफुल फार्मूला हुआ करती थी, पर आज के सिनेरियों में यह पूरी तरह से फ्लॉप आइडिया है 'तू मेरा चाँद मै तेरी चाँदनी, तू मेरी धड़कन मै तेरी जिंदगी' जैसी शायरियों और पुरानी घिसी पिटी लाइनें जैसे- 'मै तुम्हारे बिना जी नही सकता या मै तुम्हारे लिए चाँद तारे तोड़ के ला सकता हूँ.....' इन सबकी आपके लव लेटर में 'नो एंट्री' होनी चाहिए, इन्हें पढ़कर आपका पार्टनर कही सो गया या हंसने लगा तो आपकी मेहनत गई पानी में इस एम्बैरेसमेंट से बचने के लिए अपने लव लेटर मे कुछ मॉडर्न और क्रिएटिव आइडियाज आपकी हेल्प कर सकते है।

कृपया फिल्मी स्टाइल में न लिखे

हिन्दी फिल्म स्टाइल 'फूल तुम्हें भेजा है खत में'... 'फूल नही मेरा दिल है'.... या 'ये मेरा प्रेम पत्र पढ़कर तुम नाराज ना होना....' इस तरह के टिपिकल हिंदी फिल्मी गानों से अपने लेटर की ओपनिंग ना ही करें तो अच्छा है वरना आपके प्रपोजल का भगवान ही मालिक होगा समय आ चुका है कि अब 80 के जमाने से बाहर निकलकर आप 21वीं सदी में आ जाए....

अपने पार्टनर को महत्व दें

आप चाहते है कि आपका पार्टनर इम्प्रेस हो जाए तो गलती से भी चार पेज का लम्बा-चौड़ा लेटर लिखने की भूल ना करें, लेटर जितना सिम्पल शॉर्ट और टु द प्वांइट होगा उतना ही अच्छा होगा फालतू बातें लिखना अवॉइड करें जैसे उनकी आँखों का कलर क्या है उनके बोलने का स्टाइल कितना अच्छा है या फिर उनका डियो कितना महकता है इन फिजूल की बातों में उन्हें कोई इंट्रेस्ट नही होगा।

कही का ईट कही का रोड़ा वाली सिचुएशन अवॉइड करे कुछ नया करो भाई! अगर आप लिखने में क्रिएटिव नही है तो बात नही नेट से ही दोस्ती कर लें पर लेटर में सब कुछ चोरी डॉट कॉम वाला हिसाब नही होना चाहिए, कॉपी करें लेकिन दिमाग से। ऐसे स्टेटमेंट्स लिखकर अपने पार्टनर के आगे अपनी स्टुपिडिटी का सबूत ना दें कई बार लोगो को उर्दू लिखने का भी शौक होता है इसलिए ना आते हुए भी उस भाषा की टाँग तोड़ देते है जैसे 'नाचीज को कनीज', या फिर हर लाइन के बाद ईशांअल्लाह जैसे शब्द का प्रयोग करते है आप जिस भाषा में अच्छा महसूस करते है उसी भाषा का ही प्रयोग करें।

अगर आप अपने पार्टनर को ई-मेल द्वारा पत्र भेजना चाहते है तो उसमें कुछ ऐसी बातो का जिक्र करें जिससे आपका पार्टनर आपसे और भी ज्यादा क्लोज हो जाए और आपसे इम्प्रेस हो जाए.....

1. मेल पर लेटर भेज रहे है तो हैडिंग वाली लाइन 'प्लीज फांइड अटैच्ड माई लव लेटर....' लिखने की गलती बिल्कुल ना करें आप लव लेटर भेज रहे है किसी क्लांइट को मेल नही कर रहे साथ ही अटैचमेंट में लव लेटर भेजना बहुत ही मेकैनिकल तरीका है इससे आप अपने इमोशंस पर खुद पानी फेरने का काम करेगें इसलिए लव लेटर डायरेक्ट भेजे, विदाउट अटैचमेंट।
2. नर्वसनेस कभी-कभी समझ को ब्लॉक कर देती है सो लेटर भेजते वक्त एक बार ये क्रॉस चेक कर लें कि आईडी सही डाली गई है या नही।
3. अगर किसी की हेल्प ली है और उससे मेल अपनी आईडी पर फॉवर्ड कराया है तो कम से कम उसे अपने चेजेंस के साथ अपने गर्लफ्रेंड को फॉवर्ड करते वक्त देख लें कि सब्जेक्ट लाइन में एफडब्लू ना लिखा हो....

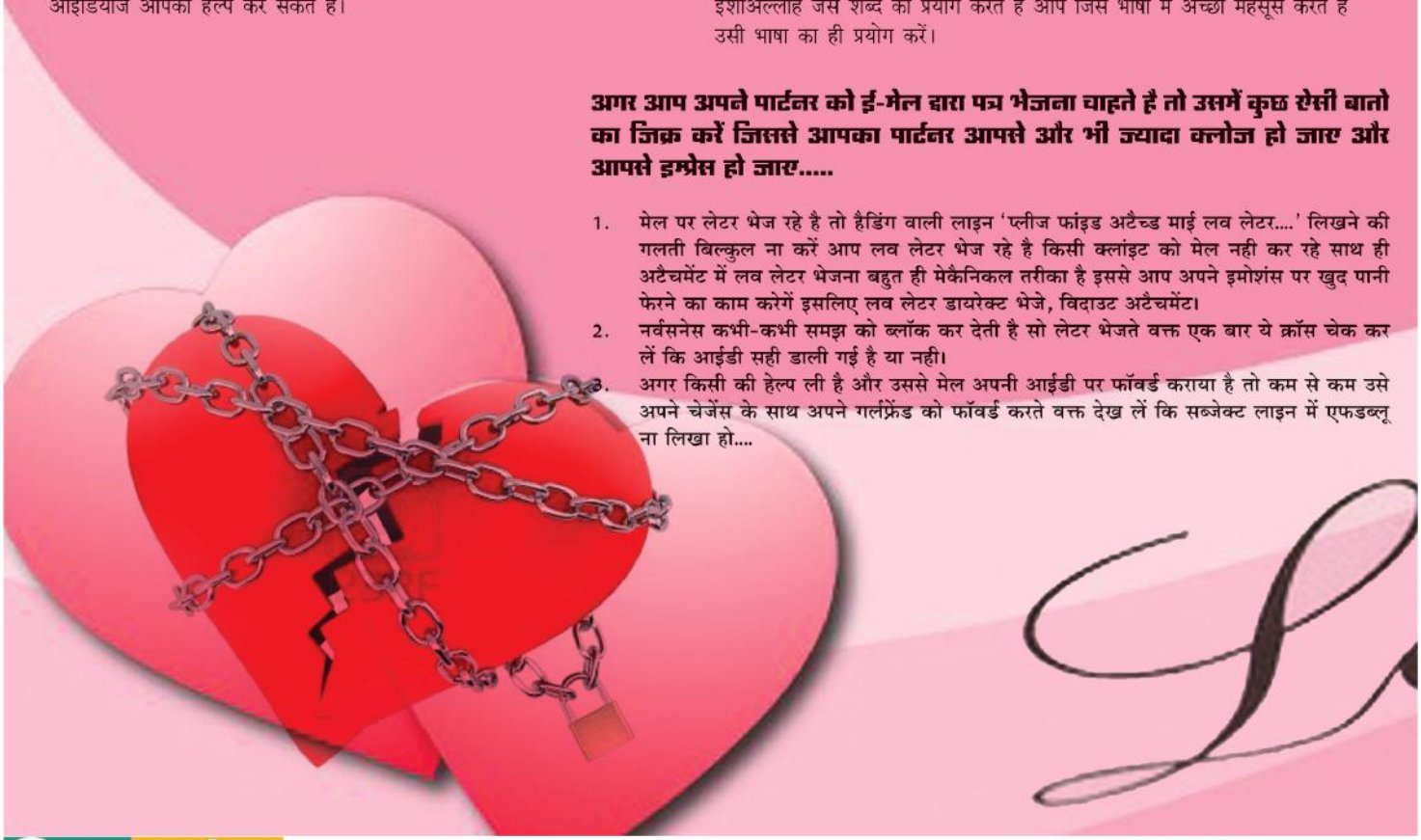

एक अनकही और एक अनसुलझी प्रेम कहानी...

कहते है कि इश्क मजहब से ऊँचा और जाति प्रथा से अलग होता है इसमें ना तो कोई जाति और ना ही कोई बंधन होता है इसको पाने के लिए इंसान क्या कुछ नही कर सकता है उसे ना तो समाज की फिक्र होती है और न ही रीति-रिवाज की, ये तो वो एहसास है जिसे हम चाह करके भी कभी नही भूल सकते है.....

ऐसी ही कहानी एक लड़के की है जो अपने गांव से पढ़ने के लिए एक शहर गया वो अपनी जिंदगी में कुछ करना चाहता था और आगे बढ़ना चाहता था लेकिन उसे ये नही मालूम था कि उसकी लाइफ में क्या है। वो जिस कॉलेज में पढ़ता था ठीक उसी कॉलेज में एक लड़की पढ़ती थी जो देखने में बिल्कुल ही अलग अंदाज की थी उस लड़के का उस लड़की पर दिल आ जाता है वो उसे देखने के लिए कई घंटो तक उसका इंतजार करता था लेकिन जब वो लड़की उसके पास से गुजरती थी तो उसे ये एहसास होता था कि मानो उसे जिंदगी में सब कुछ मिल गया हो...

लड़की भी उसे चाहने लगी थी लेकिन कुछ कारणो से उसे प्रपोज नही कर पा रही थी लेकिन लड़के ने हिम्मत जुटा कर उसे अपनी दिल की बात कह दी और लड़की ने उसे हॅसते हुए स्वीकार कर लिया । लेकिन अगर जिंदगी में ऐसा होता तो जिंदगी कितनी आसान होती मानो इंसान जो चाहता उसे यूं ही मिल जाता तो लोग भगवान के पास क्यों जाते ठीक उसी प्रकार उन दोनो के जीवन में यही समस्या थी क्योंकि यही हमारे समाज का एक नियम होता है कि यहाँ पर लोग एक दूसरे को खुश रहते हुए देख ही नही सकते, विभिन्न प्रकार के नियम कानून है जैसे जाति, रीति-रिवाज, ईर्ष्या, द्वेष, आदि की लोगो के मन में यही भावना होती है, लेकिन ये प्रेमी जोड़े बिना एक-दूसरे के जीवित नही रह सकते इन्हें ना तो किसी समाज, परिवार, रिश्तेदार-नातेदार आदि की चिंता थी ये तो बस एक दूसरे को पाना चाहते थे लेकिन हमारा समाज इन्हे इजाजत नही देता कि कोई प्रेम करे क्योंकि हमारे समाज में पुराने समय से ही प्रेम को घृणा की नजरों से देखा जाता रहा है। ये प्रेमी जोड़े हार नही मानने वाले थे चाहे समाज कितनी ही दुख तकलीफ इन्हे क्यो न दे इन्होने साथ जीने मरने की कसमें खाई और एक दूजे के बंधन मे हमेशा के लिए बंध गये।

लेकिन हमारे समाज में आज भी क्यों प्यार को घृणा की नजरो से देखा जाता है। क्या प्यार करना कोई पाप है? क्यो लोग मजहब के नाम पर दो प्यार करने वालो को अलग करते है कभी जाति के नाम पर, तो कभी परिवार के दुहाई के नाम पर आखिर ऐसा क्यों.....

किसी शायर ने सच ही कहा है कि-

ये इश्क नही आसां बस इतना समझ लीजिए....
इक आग का दरिया है और इसमें डूब के जाना है.....

रंजीत केशरवानी

इश्क इबादत

प्रेम एक अन्तर्राष्ट्रीय महापर्व है आज इश्क-विश्क, लव-शब सुनने में बड़े हल्के शब्द लगते है लेकिन असल में ये बहुत ही शक्तिशाली शब्द होते है लेकिन हमारे समाज में इश्क के बारे में कुछ और ही नजरियां है। ये शब्द सचमुच बहुत बड़े है और उसकी परिणति और भी महान होती है एक छोटी सी कथा है ओशो ने पुणे में अपने एक प्रवचन में इस कथा का उल्लेख किया था बात अकबर के जमाने की है, राजा अकबर अपने सैनिकों के साथ शिकार पर निकले और शाम होते होते रास्ता भटक गए, वह अकेले पड़ गए थे तभी नमाज का वक्त हो गया उन्होने अपना घोड़ा रोका और दुपट्टा बिछाकर नमाज पढ़ने लगे तभी एक युवती दौड़ती हुई निकली उसके धक्के से राजा गिर गए वह संभले और फिर से नमाज पढ़ने लगे जल्दी-जल्दी नमाज पूरी की और घोड़े पर सवार होकर उस युवती का पीछा किया. युवती को रोककर राजा ने उससे कहा कि मूर्ख स्त्री जब कोई नमाज पढ़ रहा हो तो उसके पास से नही गुजरा जाता है फिर वहां तो एक राजा नमाज पढ़ रहा था और तुमने उसे धक्का दिया यह सुनकर स्त्री ने सिर झुका लिया और कहा हे 'राजन मुझे क्षमा करें, मुझे नही पता था, लेकिन राजन मेरा एक सवाल है मै अपने प्रेमी से मिलने जा रही थी, मेरे प्राण वहां अटके थे कि वह कितनी देर से मेरी राह देख रहा होगा न जाने उसका क्या हाल होगा मुझे पता ही नही चला कि कोई नमाज पढ़ रहा है या मेरा धक्का उसे लगा राजन मै तो प्रेम मे थी और मुझे नही पता चला कि मैने आपको धक्का दिया और आप, तो ईश्वर की इबादत कर रहे थे, तो आपको मेरा धक्का कैसे पता चल गया 'इस घटना से अकबर को बहुत चोट लगी और बाद में उन्होनें इसे ''अकबरनामा'' में भी दर्ज कराया प्रेम के बाद की स्थिति का नया नाम इबादत है लेकिन पिछले पांच दिन में जिस तरह से एक तरफा प्यार ने अपनी कथित प्रेमिकाओं का कत्ल कर दिया उससे साफ है कि यहां प्रेम तो था ही नही क्योंकि जब किसी के अंदर प्रेम प्रकट होता है तो तब वहा किसी की हत्या तो क्या किसी के साथ गलत आचरण का भी प्रयोग नही करता है। प्रेम नफरत और प्रतिशोध और प्रतिकार की इबादत नही करता है।

लेखक/लेखिका
दीपिका केसरवानी
रंजीत केसरवानी

कब्ज का उपचार सुबह की सैर...

कब्ज के रोगियों के लिए प्रातः भ्रमण (सुबह की सैर) रामबाण साबित होती है यदि रोगी इसके साथ भोजन में सुधार कर ले । प्रातः भ्रमण कब्ज का ही नही बल्कि किसी भी रोग का सबसे बेहतर इलाज है। घूमने का समय सुबह-शाम कभी भी रखा जा सकता है लेकिन सूर्य निकलने से पहले सुबह की बेला में घूमना शरीर के लिए लाभदायक रहता है। भ्रमण करने से हृदय, अमाशय, फेफड़े, पाचन-संस्थान, मांसपेशियाँ, रक्तवाहिनियाँ तथा तंत्रिकाएँ स्वस्थ रहती है। सारे अंगो की क्रियाशीलता और गतिशीलता बढ़ जाती है, जिससे कब्ज के रोगियों को बहुत लाभ होता है। सैर करने के अनेक तरीके है। हर व्यक्ति को अपनी उम्र, शारीरिक स्थिति, मानसिक स्थिति और शारीरिक शक्ति के अनुसार सैर करने के तरीके अपनाने चाहिए।

धीरे-धीरे सैर करना

धीरे-धीरे सैर करने का तरीका उनके लिए लाभदायक होता है, जो शारीरिक रुप से कमजोर होते है तथा उम्र भी अधिक होती है। धीरे-धीरे घूमना स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है। इससे बुद्धि में तीव्रता आती है और पेट स्वस्थ रहता है।

वैद्यों का मानना है कि भोजन करने के बाद धीरे-धीरे घूमना भोजन पचाने में मदद करता है, पेट की अम्लता और गैस के विकारों को ठीक करता है। रात्रि के भोजन के बाद धीरे-धीरे घूमा जा सकता है। चहलकदमी में व्यक्ति की चाल दो किलोमीटर प्रति घंटे से थोड़ी कम ही होनी चाहिए। चहलकदमी की करते समय सांस को स्वाभाविक रुप से धीरे-धीरे चलने दे। तेज सांस लेने की जरुरत नही है। सामान्य सांस की क्रिया में सांस का केंद्र विशेषरुप से नियंत्रित रहता है। धीरे-धीरे घूमने से शारीरिक क्रियाएं थोड़ी-सी तेज हो जाती है, जिससे रक्तचाप सामान्य ही रहता है और रक्त की शर्करा नियंत्रित रहती है तथा पेट के सारे अंग सक्रिय हो जाते है। कब्ज छूमंतर हो जाता है। हर व्यक्ति को चाहे वह स्वस्थ हो या अस्वस्थ्य हो, धीरे-धीरे घूमने की आदत डालनी चाहिए

मध्यम गति से सैर करना...

मध्यम गति से सैर करने का मतलब है कि एक घंटे में पांच किलोमीटर की दूरी तय करना अर्थात् एक किलोमीटर की दूरी तय करने के लिए लगभग 12 मिनट का समय लगेगा। इस तरह की सैर से व्यक्ति अनेक रोगो से सैर करने के लिए लगभग तीन किलोमीटर जरुर टहलें। मध्यम गति से सैर करना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहता है। इससे कमर दर्द और मोटापा दूर हो जाता है और कब्ज का नामोनिशान नही रहता। इस प्रकार की सैर से शरीर को मस्तिष्क के कार्यकलाप बेहतर होते है। मध्यम गति से सैर करने के लिए सुबह का समय बेहतर होता है, क्योंकि सुबह के समय वायुमंडल में ऑक्सीजन पर्याप्त मात्रा में होती है। मोटे लोग रात्रि को भोजन करने के बाद भी 15-20 मिनट मध्यम गति से भ्रमण कर सकते है। ऐसा करने से भूख अच्छी लगती है और मोटापा कम होता है तथा कब्ज की समस्या नही रहती।

तेज गति से सैर करना...

तेज गति से सैर करना या ब्रिस्क वॉकिंग सेहत के लिए सबसे अधिक लाभदायक है। इससे शरीर में फुर्ती आती है, ताजगी बढ़ती है, पाचन क्रिया सही रहती है और कब्ज का निवारण होता है। तेज गति से घूमने की क्रिया दो तरह से हो सकती है- एक तो जल्दी-जल्दी चलते हुए और दूसरी आगे-पीछे हाथ हिलाते हुए। सैर तब तक करें जब तक शरीर में पसीना न आ जाए। चाहें सर्दी हो या गर्मी अथवा बरसात। आपको इतना जरुर घूमना चाहिए कि पसीना आ जाए लेकिन घूमने की क्रिया में थकान नही होनी चाहिए। तेज घूमने से शरीर का वजन नियंत्रित रहता है और कब्ज भी पैदा नही होता। दूसरे प्रकार के तेज घूमने को जॉगिंग कहा जाता है। इस क्रिया में कोहनी को 90 अंश पर मोड़ लें और घोड़े की तरह तेज चलें। इस प्रकार से चलना ह्रदय और पेट के लिए बहुत ही लाभदायक होता है। इस तरह घूमने से ह्रदय की सामान्य धड़कन जो 72 बार होती है, वह 130 से 170 बार तक होनी चाहिए। यह 30-40 वर्ष की उम्र के लोगो के लिए है। 40-60 वर्ष की उम्र के लोगो के लिए ह्रदय की धड़कन 100-120 बार से अधिक नही होनी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति उच्च रक्तचाप का रोगी हो तो उसे तीव्र गति के भ्रमण से परहेज करना चाहिए। तीव्र गति से भ्रमण करने के लिए यह जरुरी है कि शुरु-शुरु मे आप धीरे-धीरे चलना शुरु करें, फिर मध्यम गति से और अंत में तेज गति से इसी तरह से जब तेज गति से चल रहे हो तो अचानक ही आराम की व्यवस्था में न आएं बल्कि तीव्र गति से मध्यम गति और अंत में चहलकदमी पर आ जाएं।

बदलते रिश्ते बदलते

किसी भी राष्ट्र का अस्तित्व उसकी अन्तर्राष्ट्रीय छवि के आधार पर आंका जाता है। संयुक्त राज्य अमेरिका अगर आज विश्व रंगमंच पर मुख्य नायक बन कर उभरा है तो उसकी शक्ति का कारण इसमें निःसंदेह है इससे कोई भी राजनीतिक पण्डित नकार नही सकता, लेकिन केवल शक्ति के आधार पर ही संयुक्त राज्य अमेरिका 'वन मैन शो' बन कर अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर छाया है, यह सोच बेमानी है कूटनीतिक स्तर पर किये गये जोड़-तोड़ और तोड़-जोड़ ने उसको कितना लाभ पहुँचाया है, इस मर्म को राजनीतिक विश्लेषक भली-भाँति समझते है। सत्तर और अस्सी के दशक में उसको करारी टक्कर देने वाला सोवियत संघ जो अखंड था अगर वो आज खण्ड -खण्ड में बँटकर बिखर गया है तो उसका पूरा - पूरा श्रेय अमेरिका के कूटनीतिक प्रयास को ही दिया जा सकता है। अपने सबसे बड़े व मुख्य प्रतिद्वन्द्वी को जब वह शक्ति से नतमस्तक न कर सका तो उसने भेद की ऐसी नीति चली की वह बिना लंगड़ी लगाये चारो खाने चित् हो गया। जिसके थपेड़े आज भी उसे यदा-कदा लगते रहते है, ब्रिसबेन में हुए जी-२० सम्मेलन में पश्चिमी देशों के घोर विरोध ने पुतिन को यह जता दिया है कि आज की तारीख में वह दारासिंह के सामने किंग-कॉंग भी नही है जो थोड़ी देर भी उसके सामने अपनी हेकड़ी दिखा सके। पिद्दी पहलवान ऐसा उसे खिसियाई बिल्ली बन कर कभी आस्ट्रेलिया को दांत- दिखाने पड़े तो कभी कनाडा के हार्पर पर झपटना पड़ा और जब न बनी तो सम्मेलन ही छोड़कर भागने की धमकी देने लगा।

कहने का तात्पर्य यह है कि सोवियत संघ ऐसा आत्मनिर्भर और सुपरपॉवर देश अगर अमेरिका के सामने कही दिखाई नही पड़ रहा है इसकी वजह कुछ और नही केवल और केवल कूटनीतिक स्तर पर उसका नकारापन ही है 'वारसा पैक्ट' बना कर वह अमेरिका के 'नाटो संगठन' को अच्छी टक्कर दे रहा था अमेरिका कही वियतनाम में फंसा या तो कही कोरिया में तो कही क्यूबा में भारी हानि उठा रहा था और हर जगह सोवियत रुस उस पर हावी था। संयुक्त राज्य अमेरिका को जब इस मर्म का अनुभव हुआ तो उसने अपनी भूल सुधारते हुए वारसा पैक्ट को ही पहले मटियामेट कर सोवियत संघ को अकेला कर दिया और फिर अपनी खुफिया एजेन्सी सी०आई०ए० को रुस की कमजोरियों का पता लगा कर बिखेर देने के लिए छोड़ दिया फलस्वरुप नब्बे के दशक में तत्कालीन रुसी राष्ट्रपति 'बोरिस येल्तसिन' ग्लाइकनास्त और पेरीस्त्राइका (खुलेपन और स्वतंत्रता) की नीति ले कर आ गये,बदलाव की बयार बही जो बाद में बावण्डर बन कर सोवियत संघ का कैम्प ही उखाड़ गई, रुस केवल देखता रहा अपनी बर्बादी को।

अफगानिस्तान मे कब्जा जमाये बैठी सोवियत रुस की फौज वापस होने लगी, वारसा पैक्ट में शामिल राष्ट्र बिखर गये, संगठित सोवियत संघ करीब 14 गणराज्यों मे बंट कर कमजोर होता चला गया, ये अमेरिका की कूटनीतिक सफलता ही थी। अब अमेरिका में भी संयुक्त राज्य अमेरिका है, अफ्रिका में भी संयुक्त राज्य अमेरिका है, यूरोप में भी संयुक्त राज्य अमेरिका है और एशिया व आस्ट्रेलिया में भी संयुक्त राज्य अमेरिका ही दिखाई दे रहा है। जिधर देखूँ तेरी तस्वीर नजर आती है। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में जो उसने तगड़ी इमेज बनाई उसका फायदा उठाकर उसने पश्चिमी एशिया के तेल कारोबार पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया, रुस को आगे बढ़ने से रोक दिया और चीन को एक परिधि में बांध कर रखा। इराक और अफगानिस्तान को बारुद और शोलों से भर देने वाला यू०एस०ए० अगर कूटनीतिक स्तर पर थोड़ा असफल होता तो उन्ही परिस्थितियो से घिर गया होता, जिन परिस्थितियॉ से होकर वियतनाम और क्यूबा में गुजरा था। सऊदी अरब, कुवैत और टर्की ने इराक पर आक्रमण के वक्त संयुक्त राज्य अमेरिका की मदद में कोई कमी या कसर नही छोड़ी जिसे केवल भय के कारण ही दी या की गई मदद तो नही ही समझा जा सकता निश्चय ही अमेरिका के कूटनीतिक चालों का परिणाम ही इराक और अफगानिस्तान में युद्व के परिणाम के रुप में सामने आया। माना जा सकता है कि 'टर्की' नाटो का सदस्य है और इस वजह से अमेरिका की मदद करने के लिए प्रतिबद्ध है, परन्तु बहुसंख्यक मुस्लिम देशो को अपने दत्तक पुत्र इजरायल का शत्रु होने के बावजूद भी अपने साथ खड़ा कर लेना कोई हंसी का खेल न था। इसके पीछे केवल अमेरिका की शक्ति का भय नही है। परिष्कृत कूटनीतिक चालो के बल पर ही सुपरमैन बना अमेरिका विश्व की एक मात्र सर्वोपरि सुपरशक्ति है, जिसका कोई सानी ही नही।

इस समूचे विश्लेषण को भारत की कूटनीतिक असफलता के मापदण्ड को निश्चित करने के लिए देखा जा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय अखाड़े में भारत स्वंय को स्वघोषित महान् कहने के बावजूद पिद्दी पहलवान ही है। अगर ऐसा न होता तो उससे शक्ति में कही न ठहरने वाला नीमजान् पाकिस्तान आखें न दिखा रहा होता लाख कोशिशों के बावजूद भी भारत का मोस्टवाण्टेड अपराधी या यूं तो कहा जाये अपराधी आंतकवादी बगल मे ही कराची में बैठकर अन्तर्राष्ट्रीय फोन कॉलो पर बतिया न रहा होता , जैसा कि खुफिया सूत्र बताते है, कूटनीतिक घोर असफलता के कारण हम पाकिस्तान का ही कुछ नही कर पाते, चीन तो

मापदण्ड

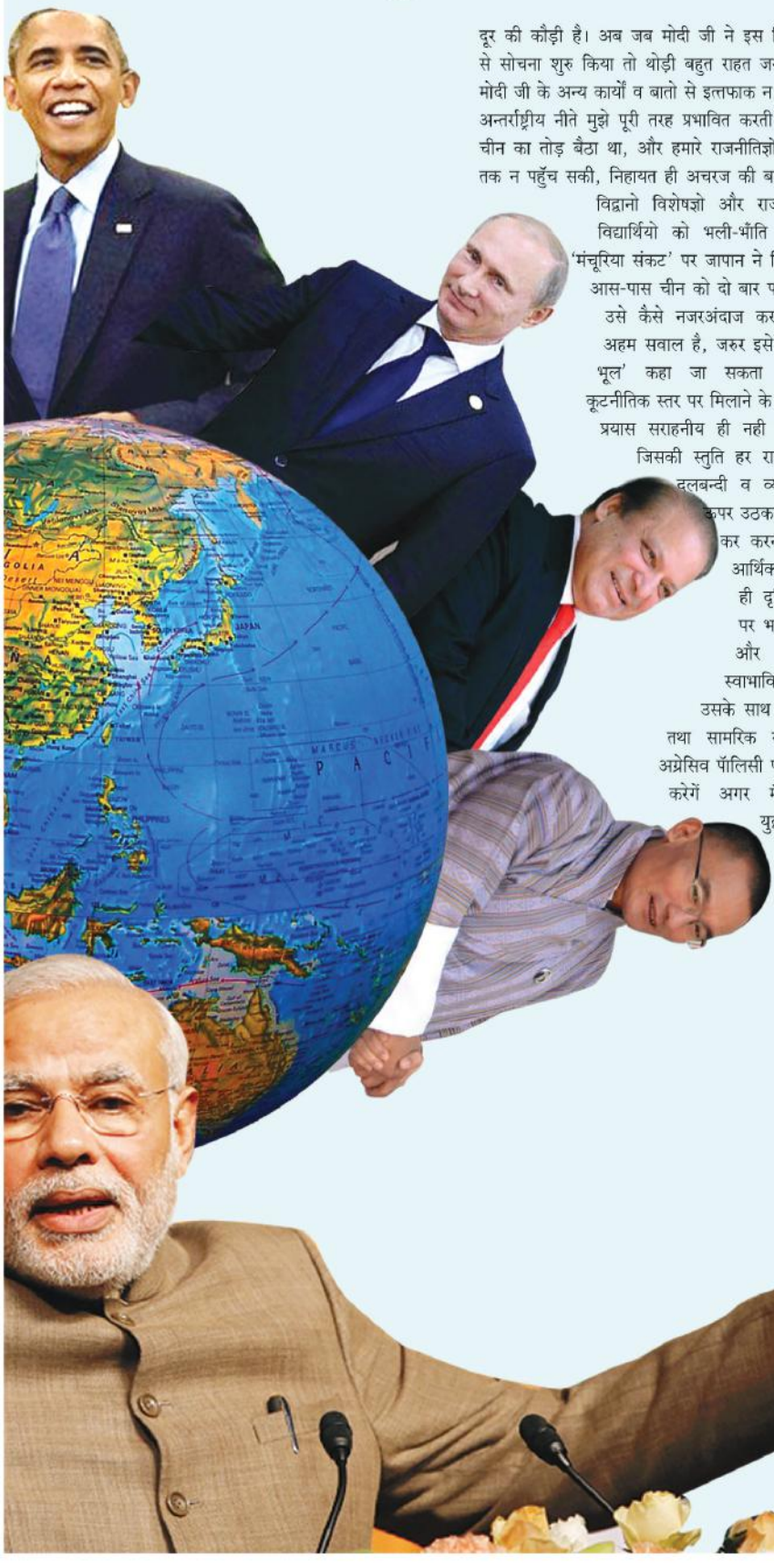

दूर की कौड़ी है। अब जब मोदी जी ने इस विषय पर गम्भीरता से सोचना शुरु किया तो थोड़ी बहुत राहत जरुर महसूस हुई है। मोदी जी के अन्य कार्यों व बातो से इत्तफाक न रख कर भी उनकी अन्तर्राष्ट्रीय नीते मुझे पूरी तरह प्रभावित करती है। एशिया में ही चीन का तोड़ बैठा था, और हमारे राजनीतिज्ञों की दूर-दृष्टि वहाँ तक न पहुँच सकी, निहायत ही अचरज की बात है। राजनीति के विद्वानो विशेषज्ञो और राजनीतिक शास्त्र के विद्यार्थियो को भली-भाँति मालूम होगा कि 'मंचूरिया संकट' पर जापान ने द्वितीय विश्व युद्ध के आस-पास चीन को दो बार पछाड़ा है। फिर हम उसे कैसे नजरअंदाज करते आये यह एक अहम सवाल है, जरुर इसे राजनीतिक 'भारी-भूल' कहा जा सकता है। जापान को कूटनीतिक स्तर पर मिलाने के नरेन्द्र मोदी जी का प्रयास सराहनीय ही नही स्वागत् योग्य है, जिसकी स्तुति हर राजनीतिक दलो को दलबन्दी व व्यक्तिगत स्वार्थो से ऊपर उठकर राष्ट्रीय सोच बना कर करनी चाहिए। जापान आर्थिक व सामरिक दोनो ही दृष्टि कोणों से चीन पर भारी पड़ता आया है और साथ ही उसका स्वाभाविक शत्रु भी है उसके साथ किये गये आर्थिक तथा सामरिक समझौते चीन की अग्रेसिव पॉलिसी पर अंकुश का काम करेगें अगर मैनुवर (सम्मिलित युद्धाभ्यास) प्रारम्भ हो गया, जैसा की समझौते के तहत है तो घुसपैठिया चीन अरुणांचल प्रदेश को अपना कहने से पहले कई बार सोच-गा। आर्थिक स्तर पर भारतीय माल को भारत में ही बाजार न मिले उसकी मुहिम अधूरी ही रह जायेगी। साफ है कि चीन 'डॉण्टिंग पोजीशन' (निरुत्साहित व डरा हुआ) में आ जायेगा और यह प्रभाव मनोवैज्ञानिक होगा। अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति में नरेन्द्र मोदी की ये पहल स्वागत योग्य है, भलीभूत होने पर भारत की साख में इजाफा होगा इसमें कोई सन्देह नही दूसरी तरफ चीन को ब्रिक्स में साथ लेकर खड़ा हो जाना उनकी ऐसी दुरंगी चाल है, जिसमें चीन फंसता भी जा रहा है और हंसता भी जा रहा है।

ऑस्ट्रेलिया का दौरा उन अप्रवासी भारतीयो के लिए राहत का पैगाम लाया है, जो दशकों से अश्वेत प्रताड़ना का दशको झेलने जा रहे थे जिनकी सुध कोई नही ले रहा था। किजी जैसे छोटे से देश के दौरे से उनकी छवि गुडविल वाली बनी है, निहितार्थ कुछ भी हो म्यांमार में भारत के बढ़ते हुए कदम, चीन को कूटनीतिक स्तर पर घेरते हुए नजर आ रहे है।

दक्षिणी अमेरिका का देश ब्राजील, अफ्रिका,साऊथ अफ्रिका, एशिया में जापान, यूरोप में परम्परागत् मिश्र, रुस और आस्ट्रेलिया, पांचों महाद्वीपों में भारत के कदम को मजबूती से जमाने का संकल्प लिये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अन्तर्राष्ट्रीय नीति को भारत को विश्व रंगमंच पर एक नया सितारा बना कर अस्तित्व सिद्ध करने की उत्साहित उमंग के रुप मे देखा जा सकता है। ग्लोबलाइजेशन को केवल आर्थिक आधार पर समझना आउटडेटेड हो गया है, भूमण्डलीकरण के इस दौर में राजनितिक की परिभाषाएँ बदलने लगी है, इस दृष्टि से मोदी अप-टू-डेट है। संकुचित दलगत राजनीति से हट कर स्वार्थी चालो से आगे बढ़कर सभी राजनीतिक दलों को राष्ट्रीय हित में अन्तर्राष्ट्रीय सोच पैदा करनी होगी। केवल भारत महान् या सबसे आगे होगें हम भारतवासी या जय हो! कहकर हम अपनी कुण्ठा ही, सफलता के आईने में भ्रमित होकर देखते आये है, कुण्ठा की चादर ओढ़ कर सोने से अच्छा है, संघर्ष के साथ सफलता की ओर मजबूती से बढ़ाये गये दो कदम, तभी हमारा भारत महान होगा।

जिधर देखूँ तेरी तस्वीर नजर आती है

अफगानिस्तान मे कब्जा जमाये बैठी सोवियत रुस की फौज वापस होने लगी वारसा पैक्ट में शामिल राष्ट्र बिखर गये, संगठित सोवियत संघ करीब 14 गणराज्यों मे बंट कर कमजोर होता चला गया, ये अमेरिका की कूटनीतिक सफलता ही थी। अब अमेरिका में भी संयुक्त राज्य अमेरिका है, अफ्रिका में भी संयुक्त राज्य अमेरिका है, यूरोप में भी संयुक्त राज्य अमेरिका है और एशिया व आस्ट्रेलिया में भी संयुक्त राज्य अमेरिका ही दिखाई दे रहा है। जिधर देखू तेरी तस्वीर नजर आती है। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में जो उसने तगड़ी इमेंज बनाई उसका फायदा उठाकर उसने पश्चिमी व मध्य एशिया के तेल कारोबार पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया, रुस को आगे बढ़ने से रोक दिया और चीन को एक परिधि में बांध कर रखा। इराक और अफगानिस्तान को बारुद और शोलो से भर देने वाला यू०एस०ए० अगर कूटनीतिक स्तर पर इतना भी थोड़ा भी असफल होता तो उन्ही परिस्थितियो से घिर गया होता, जिन परिस्थितियाँ से होकर वियतनाम और क्यूबा में गुजरा था।

लेखक- पुलीत शुक्ला

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका
आशा खबर
सब का दम

एक खूबसूरत बालकनी

किसी मित्र या मेहमान को जब हम अपना घर दिखाते है उस समय हम बड़े गर्व से कहते है, हमारी बालकनी से क्या नजारा दिखता है, लेकिन घर के इसी खूबसूरत कोने को हम अक्सर नजर अंदाज करते है और इसका भरपूर उपयोग करने से चूक जाते है। थोड़ा ध्यान दिया जाए तो इसे सबसे खूबसूरत जगह बनाया जा सकता है।

स्मॉल इज ब्यूटीफुल यानी छोटी चीजें खूबसूरत होती है। यह कथन ई. एफ. शूमाकर ने अर्थशास्त्रक सिद्धांत समझाने के लिए कहा था, लेकिन ऐसा ही कुछ हम अपनी छोटी सी बालकनी के लिए भी कह सकते है। आज बड़े शहरो के छोटे घरो में ना बगीचा होता है और न ही पोर्च। ऐसे में बालकनी एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। बस जरुरत है तो थोड़ी सी रचनात्मक योजना की।

खिड़की- बालकनी से जुड़ी अहम चीज है खिड़की। अक्सर बड़े शहरो में इतने पास-पास और ऊंची इमारते होती है कि बालकनी से बाहर नजर डालने पर चारों तरफ यही सब नजर आता है। इसलिए सबसे पहले इस बात का निर्णय लें कि बालकनी को व्यक्तिगत जगह बनाने के लिए कैसे एक नए स्वरुप में ढाला जा सके। जैसे ची-ब्लाइंड लगाकर या फिर फ्रेंच खिड़की बनाकर उस जगह को नया स्वरुप दिया जा सकता है। इसे ऐसा बनाने के दो फायदे है पहला आप जब चाहें इसे बंद करके अपनी प्राइवेसी को बनाए रख सकते है और दूसरा शाम को इन्हें खोलकर बाहर के खुशनुमा मौसम का मजा उठा सकते है।

व्यक्तिगत जगह - बालकनी का उपयोग निजी जगह के रुप में बहुत अच्छा हो सकता है। इसे आप बुक नोट में बदल सकते है। इसमें बुक शेल्फ रखकर और

आरामदायक कुर्सियों के साथ इसे घर की वह व्यक्तिगत जगह बना सकते है, जहां फुरसत के कुछ पल गुजारें जा सकें। किताबों के अलावा यहां म्यूजिक सिस्टम रखा जा सकता है ताकि फुरसत के पल में आप आराम से संगीत की धुनो के साथ मनपंसद किताब पढ़ सकें। इसके अलावा जमीन पर गददा डालकर और उस पर दो चार कुशन रखकर उसे और आरामदायक लुक दे सकते है। आप चाहें तो इस बालकनी में शीशें का दरवाजा या स्लाइडिंग डोर लगाकर और कमरों से अलग कर सकते है।

डाइनिंग रुम- बालकनी को डाइनिंग रुम भी बनाया जा सकता है। बस, छोटी टेबल और तीन-चार कुर्सियों को लगा लीजिए। सुबह- शाम ताजा हवा के साथ सर्दियो में पूरे परिवार के साथ दोपहर का खाना खाइए और गर्मी में डिनर या काफी का मजा लीजिए।

गार्डन या लैंडस्केप - यदि आप फ्लैट में रहते है और आपको बागवानी का शौक है तो बालकनी आपके लिए सबसे उपर्युक्त जगह है। पूरे घर मे ये ऐसी जगह होती है जहां पेड़ो को अच्छी धूप के साथ खुली हवा मिल सकती है। आप गमलो में मौसमी पौधो के साथ बोन्साई भी लगा सकते है।

ऑफिस एक्सटेंशन - अगर आपका काम ऐसा है कि आपको उसे घर पर लाना पड़ता है या फिर घर से ही आप कुछ व्यवसाय करना चाहते है तो यह उपयुक्त जगह है। कम्प्यूटर, ऑफिस टेबल, दो कुर्सियां और एक अलमारी के साथ इसे तैयार किया जा सकता है।

फ्री स्पेस- इस जगह को किसी और रुम में तब्दील नही करना चाहते तो इसे फ्री स्पेस की तरह इस्तेमाल कीजिए। बैम्बू, विंड चाइम्स, पेड़-पौधे, वॉटर-बॉडीज और फ्लोटिंग फ्लॉवर्स के साथ इसे सजा लें। जब भी घर मे पार्टी हो या फिर पारिवारिक समारोह हो तो इसमें ये अतिरिक्त जगह लिविंग रुम के एक्सटेंशन की तरह उपयोग की जा सकती है।

लेखक- नीरज धवन

सात समझदारियां

1. पहले यह पता कर लें कि आपकी बालकनी में कितना वजन सहने की क्षमता है, उसी हिसाब से उसकी डिजाइनिंग सोचे।
2. बालकनी को आप जो भी मौसम को ध्यान में रखकर बनाएं कही ऐसा न हो कि बारिश आपके महंगे सामान को नुकसान पहुचां जाए।
3. बालकनी के इस नए स्वरुप में आप अपना अधिकतम समय किस वक्त बिताएंगे। दिन में या रात में। दिन में तो फिर रोशनी की ज्यादा परेशानी नही होगी, लेकिन आप उसे स्टडी और काम के लिए उपयोग कर रहे है तो उसमें लाइटिंग का खास ख्याल रखे।
4. प्लान बहुत सोच समझ कर बनाएं। इस छोटी सी जगह में हर इंच महत्व रखती है। आप जो भी फर्नीचर या सामान रखें वह जगह के हिसाब से रखे कि वह स्टोर रुम न लगें।
5. आप यहां हरियाली रखना चाहते है तो उन पौधों क चुनाव करें जो आपके फ्लैट के मौसम के अनुकूल हो यह महत्वपूर्ण इसलिए है क्योंकि अगर पौधे मौसम के अनुरुप नही होगें तो आपकी मेहनत व्यर्थ होगी।
6. पानी का ध्यान रखे। अगर आप बहुत तरह के पेड़ पौंध लगा रहें है तो उन्हें नियमित पानी की आवश्यकता होगी।
7. ऐसा रंग को चुने जो आपके अंदर के कमरो से मेल खाता हो। ताकि बालकनी घर का ही एक हिस्सा लगे।

B. B. Property Dealer
बब्बी बाबू
sales & Purchase
off : Tulsiani plaza, Civil Lines, Alld. Res : 69, Rani Mundi, Alld.
www.bbpropertydealer.alld.in bbpropertydealer.alld@gmail.com
Ram Dhawan
9984601222
Shyam Dhawan
9839449555

नारी और सौन्दर्य

1 पीली सरसो, हल्दी मजीठ- 10-10 ग्रा., बेसन, मसूर का आटा प्रत्येक 50-50 ग्रां. और खसखस का दाना 25 ग्रा.- सबको महीन पीसकर, आवश्यकतानुसार लेकर बकरी का दूध अथवा केवड़े के अर्क में मिलाकर रात में सोते समय चेहरे पर लेप करें और सुबह ठंडे पानी से मुंह अच्छी तरह धो लें इससे चेहरे की आभा बढ़ जाती है।

2 मसूर की दाल को बारीक पीसकर नींबू का रस में मिलाकर रात को मुंह पर लेप करें सुबह चेहरे को गर्म जल से धो ले।

3 पीली सरसों तथा चिरौंजी के दानों को समान भाग में लेकर गाय के दूध में महीन पीस लें इस लेप को थोड़ा गरम करके चेहरे पर मालिश करें इस क्रिया को रात में सोते समय करें और गुनगुने पानी से धों ले इसे योग से मुहांसे दूर होकर सुदंरता बढ़ती है।

4 नीम के बीज को देशी सिरके में महीन पीसकर रात में चेहरे पर लेप करे और सुबह गरम पानी से धों ले इससे काले तिल तथा झॉइयां नष्ट होती है साथ ही सौन्दर्य की वृद्धि होती है।

5 10 ग्रां. सुहागा का कपड़छन चूर्ण 20 ग्रां. चमेली के तेल मे मिलाकर रात में चेहरे पर लगाए सुबह गरम पानी से धों ले इससे काले तिल तथा झाइयां नष्ट होती है।

6 जायफल को दूध में चंदन के समान घिसकर चेहरे पर लेप करने से काले, नीले दाग दूर हो जाते है, बाद में सरसों के तेल की मालिश करने से चेहरे की खूबसूरती बढ़ती है।

7 कड़वे बादाम की गिरी को देशी सिरके में पीसकर रात में आखों के नीचे लगाएं और सुबह गर्म पानी से धोएं इससे आखों के नीचे के काले दाग दूर होते है।

8 2-4 केसर के फूल को रात भर दूध में फुलनें दें, सुबह इस दूध में रुई के फाहे को डुबोकर चेहरे को साफ करें आपकी रंगत में काफी फर्क नजर आएगा।

9 चेहरे को यदि नियमित नारियल पानी से धों ले तो चेहरे के दाग-धब्बें खत्म होते ही है साथ ही टैनिंग से भी राहत मिलती है। और रंग भी साफ होता है इसलिए नारियल का पानी भी ब्लीच के लिए प्रयोग कर सकती है।

लेखिका- दीपिका केसरवानी

शशि शेखर मिश्रा
एडवोकेट
हाईकोर्ट इलाहाबाद
9454699799
7388780099
7388354549
चैम्बर नं.- 53-A, नई बिल्डिंग हाईकोर्ट इलाहाबाद निवास/ कार्यालय, 548-M/22, ऊँचवागढ़ी, राजापुर इलाहाबाद

विष्णुगुप्त (चाणक्य)

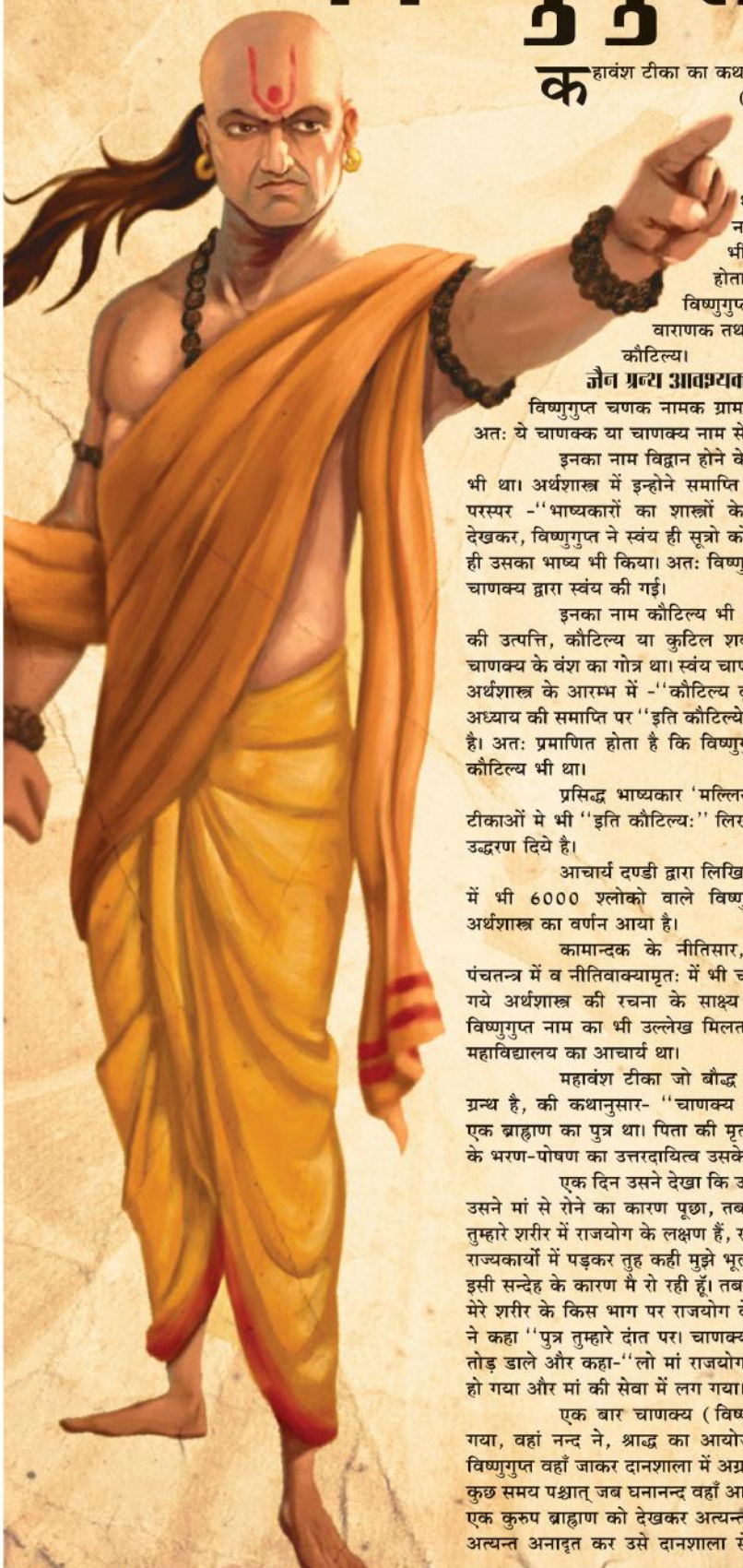

कहावंश टीका का कथन है कि चाणक्य (चाणक्क) तक्षशिला निवासी एक ब्राह्मण का पुत्र था। उसके अन्य नामो का उल्लेख भी इतिहास में प्राप्त होता है। जैसे- विष्णुगुप्त, पक्षिणस्वामि, वाराणक तथा कौटिल्य।

जैन ग्रन्थ आवश्यक सूत्र के अनुसार विष्णुगुप्त चणक नामक ग्राम में उन्पन्न हुए थे, अत: ये चाणक्क या चाणक्य नाम से जाने जाते थे।

इनका नाम विद्वान होने के कारण विष्णुगुप्त भी था। अर्थशास्त्र में इन्होने समाप्ति पर लिखा है कि परस्पर -''भाष्यकारों का शास्त्रों के अर्थ में मतभेद देखकर, विष्णुगुप्त ने स्वंय ही सूत्रो को लिखा और स्वंय ही उसका भाष्य भी किया। अत: विष्णुगुप्त नाम की पुष्टि चाणक्य द्वारा स्वंय की गई।

इनका नाम कौटिल्य भी था। कौटिल्य शब्द की उत्पत्ति, कौटिल्य या कुटिल शब्द से हुई है, यह चाणक्य के वंश का गोत्र था। स्वंय चाणक्य ने अपने ग्रन्थ अर्थशास्त्र के आरम्भ में -''कौटिल्य कृतम शास्त्रम तथा अध्याय की समाप्ति पर ''इति कौटिल्येर्थ शास्त्रम'' लिखा है। अत: प्रमाणित होता है कि विष्णुगुप्त का एक नाम कौटिल्य भी था।

प्रसिद्ध भाष्यकार 'मल्लिनाथ ने भी अपनी टीकाओं मे भी ''इति कौटिल्य:'' लिखकर अर्थशास्त्र के उद्धरण दिये है।

आचार्य दण्डी द्वारा लिखित दशकुमार चरित में भी 6000 श्लोको वाले विष्णुगुप्त द्वारा रचित अर्थशास्त्र का वर्णन आया है।

कामान्दक के नीतिसार, विष्णु शर्मा के पंचतन्त्र में व नीतिवाक्यामृत: में भी चाणक्य द्वारा लिखे गये अर्थशास्त्र की रचना के साक्ष्य है। इन ग्रन्थो में विष्णुगुप्त नाम का भी उल्लेख मिलता है जो तक्षशिला महाविद्यालय का आचार्य था।

महावंश टीका जो बौद्ध धर्म से सम्बन्धित ग्रन्थ है, की कथानुसार- ''चाणक्य तक्षशिला निवासी एक ब्राह्मण का पुत्र था। पिता की मृत्यु के पश्चात् माता के भरण-पोषण का उत्तरदायित्व उसके ऊपर आ पड़ा।

एक दिन उसने देखा कि उसकी मां रो रही है, उसने मां से रोने का कारण पूछा, तब मां ने कहा -पुत्र तुम्हारे शरीर में राजयोग के लक्षण हैं, राजप्राप्ति के पश्चात् राज्यकार्यो में पड़कर तुह कही मुझे भूल तो नही जाओगे। इसी सन्देह के कारण मै रो रही हूँ। तब विष्णुगुप्त ने पूछा मेरे शरीर के किस भाग पर राजयोग के चिन्ह है तब मां ने कहा ''पुत्र तुम्हारे दांत पर। चाणक्य ने पत्थर से दांत तोड़ डाले और कहा-''लो मां राजयोग का चिन्ह समाप्त हो गया और मां की सेवा में लग गया।

एक बार चाणक्य (विष्णुगुप्त) पाटलिपुत्र गया, वहां नन्द ने, श्राद्ध का आयोजन कर रखा था। विष्णुगुप्त वहाँ जाकर दानशाला में अग्रासन पर बैठ गया। कुछ समय पश्चात् जब घनानन्द वहाँ आया तो अग्रासन पर एक कुरुप ब्राह्मण को देखकर अत्यन्त कुपित हुआ और अत्यन्त अनादृत कर उसे दानशाला से निकलवा दिया, तभी से अपने अपमान के प्रतिशोध के लिए यह एक शक्तिशाली और वीर सहयोगी की खोज में भटकने लगा। घूमते-घूमते एक शिकारियों के गांव में पहुँचा, जहाँ राजा का खेल, खेलता हुआ चन्द्रगुप्त कई बालको को जो उसके साथी थे, प्रजा बनाकर और स्वंय राजा बनकर न्याय तथा अन्याय का निर्णय कर रहा था, चाणक्य उसकी राजकीय प्रतिभा से अत्यंत प्रभावित हुआ, और उसने चन्द्रगुप्त को 1000 पण में खरीदा लिया।

कथा सरित् सागर के अनुसार-'शकटार' जो पूर्व में मगध का महामात्य था और धननन्द ने उसे मौर्य सेनापति की मित्रता के कारण कारागार में कैद कर रखा था। वक्रनास की सहायता से जब कारागार से मुक्त हुआ तो, वह धननन्द का शत्रु हो गया। उसने विष प्रयोग तथा एक दूसरे को लड़ाकर मगध में अव्यवस्था का वातावरण बना दिया। और अवसर पा कर विष्णुगुप्त को धननन्द के विरुद्ध भड़का दिया। क्योंकि उसे वह अत्यन्त अभिमानी, हठी और ज्ञानी प्रतीत हुआ। तब से विष्णुगुप्त ने नन्द वंश के विनाश का व्रत ले लिया और एक योग्य साथी की तलाश में घूमने लगा। शिकारियों के गांव में उसकी खोज पूर्ण हुई, जहाँ से एक हजार पण देकर चन्द्रगुप्त को ले आया।

जैन ग्रन्थ परिशिष्टवर्मन में भी कुछ-कुछ इसी प्रकार की कथा प्राप्त होती है। जब चाणक्य योग्य सहयोगी की खोज में भटक रहा था। तो विंध्याचल के जंगल में एक अदभुत दृश्य को देखा। एक युवक थककर मूर्छित पड़ा हुआ था और उसके पसीने को एक सिंह चाट रहा था। विष्णुगुप्त इस व्यक्ति को असाधारण पुरुष समझकर अपने साथ ले आया। इतिहास में यही व्यक्ति चन्द्रगुप्त के नाम से पूरे भारतवर्ष का प्रथम सम्राट हुआ।

लगभग इसी वक्त यूनान के मेसीडोनिया के शासक फिलिप द्वितीय का पुत्र और महान् विचारक तथा दार्शनिक अरस्तू का शिष्य अलेक्जेण्डर जो भारतीय इतिहास में सिकन्दर के नाम से प्रसिद्ध है, 326 ई0पू0 में विश्व-विजय करने के क्रम में भारतवर्ष पर आक्रमण किया। तत्कालीन भारतवर्ष असंगठित राज्यों तथा विखण्डित गणराज्यों का समूह मात्र था, अत: उचित प्रतिरोध न कर सका। आपसी द्वेष तथा धन के आकर्षण ने विदेशी शत्रु का भारतवर्ष में उचित स्वागत करवाया। तत्कालीन तक्षशिला के शासक आम्भि ने सिकन्दर के संग सन्धि कर ली ओहिन्द के पुल के निकट, वह सिकन्दर से मिला। भारतीय इतिहास के इस प्रथम देश द्रोही ने भारत की भौगोलिक रचना तथा गणराज्यो की दुर्बलताओ को सिकन्दर के समक्ष रखने में कोई भूल नही की। इससे सिकन्दर का विजय का कार्य सुगम हो गया।

परन्तु स्वाभिमानी पुरु ने उसकी अधीनता नही स्वीकार की और युद्ध क्षेत्र में साक्षात्कार की इच्छा प्रकट की। पुरु का राज्य झेलम तथा चिनाव के बीच फैला था। सिकन्दर आम्भि के संग पांच सहस्त्र सैनिकों के साथ झेलम की ओर बढ़ा। मार्ग मे पुरु के भतीजे, 'स्पेटिसीज' को हराया। अपने सेनापति 'कोनोस' को सिन्धु नदी का पुल तोड़कर झेलम पर पुल लगाने की आज्ञा दी। तत्पश्चात अपना दूत बनाकर, आम्भि को पुरु के समक्ष समझौते के लिए भेजा। परन्तु आम्भि को देखते ही गर्वीला पुरु आग-बबूला हो गया और अपने भाले से आम्भि पर प्रहार किया। बाद के मॉस में झेलम के तट पर घेरे के पश्चात सिकन्दर ने धोखे से झेलम नदी को पार किया।, जो मई का महिना होने के कारण बढ़ गई थी। बिजली गिरने की ध्वनि, झंझावत् ने .....

सिकन्दर की फौज का आभास श्री पुरु को न होने दिया। जब शत्रु सामने आ गया तब पुरु को ज्ञात हुआ कि यवनराज सिकन्दर झेलम नदी को पार कर चुका है। 'एरियन' के अनुसार- सिकन्दर के साथ मात्र 12,000 घुड़सवारो की सेना थी, जबकि पुरु के पास 4,000 अश्वारोही, 300 रथ, 200 हाथी तथा 30,000 पैदल सेना थी। 2000 पदाति तथा 120 रथ पहले ही पुरु के साथ युद्ध में जा चुके थे। परन्तु 'एरियन' के कथन में अतिशयोक्ति और पूर्वाग्रहता का आभास होता है। फिर भी इतना निश्चित है कि युद्ध अत्यंत भयंकर हुआ होगा। 500 अश्वरोहियों के साथ जब सिकन्दर ने आक्रमण किया, तब पुरु की सेना ने सिकन्दर के आक्रमण को छिन्न-भिन्न कर दिया परन्तु अश्वरोहियों के शेल प्रहारो ने हस्तिसेना को विचलित कर दिया फलस्वरुप वह अपने और पराये का भेद नही कर पाई, अत: पुरु की सेना को अपनी हस्तिसेना ने ही रौंदना प्रारम्भ कर दिया, और वर्षा के कारण विशाल धनुष गीली भूमि पर टिक नही पाये अत: प्रहार में अक्षम सिद्ध हुए। इन दो कारणो ने पुरु की पराजय निश्चित कर दी। जब उसे पकड़कर सिकन्दर के समक्ष लाया गया और पूछा गया कि तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जाए तो उसने कहा-'' जैसा एक शासक दूसरे शासक के साथ करता है। ''सिकन्दर ने इस स्वाभिमानी शासक को सम्मान सहित उसका राज्य लौटा दिया। यह सिकन्दर की कूटनीति थी, जो भारतवर्ष में उसकी विजय में बहुत काम आई।

'मुद्राराक्षस' के अनुसार पुरु (पर्वतक) किसी पर्वतीय क्षेत्र का शासक था, जिसकी हत्या चाणक्य (विष्णुगुप्त) ने विषकन्या द्वारा, चन्द्रगुप्त का राजमार्ग निष्कण्टक करने के लिए करवायी थी, परन्तु यूनानी लेखक इसे झेलम तथा चिनाव के बीच का शासक बताते है। पुरु को यूडीमस ने फिलिप के षडयंत्र से मारा था। 'मुद्राराक्षस बारहवीं शताब्दी' में विशाखा दत्त द्वारा रचित नाटक है। इसमें असंगत और अविश्वसनीय घटनाओं की भरमार है और अत्यधिक महत्वपूर्ण यह है कि यह 12वीं शताब्दी की रचना होने के कारण विश्वसनीय भी नही हो सकती। क्योंकि जो भी घटनाएँ घटित हुई वो सभी 326 ई0पू0-321 ई0पू0 अर्थात् डेढ़ हजार वर्ष पूर्व की है। अत: मुद्राराक्षस मात्र कही - सुनी घटनाओं का संग्रह अथवा लेखक की कल्पना प्रसूत घटनाओ का संग्रह भी हो सकती है। सिकन्दर ने 'झेलम' तट पर देवो को बलि दी, और दो नगरों निकाई तथा बुकेफाल की स्थापना भी की। 'बुकेफाल' सम्भवत: उसके घोड़े का नाम था। तत्पश्चात 'ग्लौचुकायन' को हराकर, जो चिनाव नदी के पश्चिम तट पर, निवास करते थे, पोरस के अधीन कर दिया। आगे बढ़ते हुए सिकन्दर ने रावी पार कर, कठ गणराज्य पर आक्रमण कर दिया और इनकी राजधानी 'सांगल' को घेर लिया। यही पर पुरु 500 घुड़सवारो के साथ सिकन्दर से आ मिला। कठों ने सिकन्दर को अपनी वीरता का ऐसा परिचय दिया कि सिकन्दर कभी न भूल सका। कठों ने अपनी पराजय देखकर एक झील से भागने की योजना बनाई, सिकन्दर को यह योजना ज्ञात हो गई, और उसने झील पार करते हुए कठो पर बाणों की वर्षा करवा दी तथा राजधानी 'सांगल' को जला डाला। स्त्री, पुरुषो तथा बच्चों का कत्लेआम एक ऐसी घटना थी जो भारतीय इतिहास में एक विश्व - विजेता की छवि पर प्रश्न चिन्ह लगाती है। इस युद्ध मे यवनो को भी अत्यन्त क्षति हुई और भारतीयों की वीरता का आभास भी प्रथम बार हुआ।

व्यास नदी के तट पर पहुँचने पर 'भगल' नामक एक सरदार ने (भगल नाम पाणिनी की अष्टध्यायी में प्राप्त होता है) नन्द साम्राज्य के विषय तथा उसके सैन्य शक्ति के विषय में सिकन्दर को बताया कि व्यास नदी के उस पार एक अत्यन्त शक्तिशाली राज्य है, जिसके पास अत्यन्त विशाल सेना है तथा वहाँ का शासक अत्यन्त धनी है। वहाँ की उर्वराभूमि प्रभूत अन्न उपजाने में समर्थ है तथा कृषक वीर है। इस वर्णन का समर्थन पोरस (पुरु) ने भी किया। . सिकन्दर इस वर्णन को सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ, परन्तु उसके सैनिकों ने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया। सिकन्दर के अपनी सेना में उत्साह जगाने और प्रलोभन देने के प्रयास असफल हो गए। अन्त में उसने हताशा में कहा- ''मै उन दिलों में उत्साह जगाने का प्रयास कर रहा हूँ जो निष्ठापूर्ण और कायरतापूर्ण डर से दबे हुए है। उसने कहा जो आगें न बढ़ना चाहता हो, वह लौट जाए और अपने देश में जाकर कहे कि वह अपने सम्राट को किस प्रकार छोड़कर भाग आए है। मै तो आगे बढ़ूंगा। वह तीन दिन शिविर से बाहर नही निकला। परन्तु उसकी सेना ने अपने निर्णय में कोई परिवर्तन नही किया। तब 'कोनोस ने कहा कि **-Seek not, to lead them against their inclination, for you. Will not find them the same men in the face, if dangers, they inter without heart in to their contest with the enemy."**

''कोनोस ने तो यहाँ तक कहा कि सिकन्दर लौट जाए और जब इच्छा हो, फिर लौट कर आ जाए। कोनोस के भाषण का समर्थन पूरी सेना ने किया। वास्तविकता यह थी कि वर्षो तक घर और परिवार से बिछुड़े हुए लोगो को घर की याद सताने लगी थी और जिस कठिनाई से झेलम तथा कठों से युद्ध में सफलता मिली थी, वह यवन सैन्य वाहिनी के लिए एक कटु मगर सत्य अनुभव था। उसके पश्चात नन्दो की विशाल सैन्य वाहिनी तथा सशक्त साम्राज्य के वर्णन ने उनके उत्साह को ठण्डा कर दिया। सिकन्दर ने नवम्बर मास में प्रत्यावर्तन प्रारम्भ किया। जलमार्ग से सेनापति 'नियार्कस' को भेज स्वंय थल मार्ग से प्रत्यावर्तित हुआ। मार्ग में 'सौभूति' नामक शासक से उसका नाटकीय ढंग से साक्षात्कार हुआ। वहाँ के कुत्तो ने सिकन्दर को अत्यंत प्रभावित किया। इसी समय कोनोस रुग्ण हुआ और मर गया।

सौभूति के पश्चात शिवि, अलगस्सोई आदि पर सिकन्दर ने आक्रमण कर विजय प्राप्त की। अलगस्सोई पर विजय के पश्चात जिस प्रकार सिकन्दर ने नृशंसता का परिचय दिया, वह मध्यकाल के आक्रमणकारियों, तैमूल लंग और चंगेज खाँ के अत्याचार से कुछ कम न थे। इन विजयों के पश्चात सिकन्दर ने मालवों तथा क्षुद्रक गणराज्यों पर आक्रमण किया। मालवो के युद्ध में सिकन्दर किले की दीवार पार करते समय, मालवो की बाण-वर्षा में बुरी तरह घायल हो गया, जब 'पर्डिक्कस' ने बाण निकाला तो रक्त का फौव्वारा फूट पड़ा। सिकन्दर की यह हालत देखकर युनानी उन्मत हो गए और जब किले पर अधिकार हो गया तो निरपराध, स्त्री, पुरुषों का कत्लेआम कर दिया गया। सिकन्दर को लगा हुआ यही घाव अप्रत्यक्ष रुप से उसके मृत्यु का कारण माना जाता है।

सिकन्दर ने 'मकरान' तट से वापसी प्रारम्भ की। जब वह 'कर्मेनिया' में था, तभी उसको फिलिप की हत्या का समाचार प्राप्त हुआ। वह 324 ई0पू0 में सूसा पहुँचा। तत्पश्चात 323 ई0पू0 में बेबिलोन में अत्यधिक मद्यपान, ज्वर और मालवों से प्राप्त व्रण ने इस महान् विश्व-विजेता के जीवन का ही अन्त कर दिया।

लगभग इसी समय पश्चिमोत्तर भारत में विप्लव का वातावरण बन गया, अथवा बना दिया गया। इन विप्लवों का जन्मदाता व नेता चन्द्रगुप्त को माना जाता है। 'जस्टिन' तो स्पष्ट कहता है पश्चिम तथा उत्तर भारत में विद्रोह का नेता चन्द्रगुप्त था। जस्टिन का यह भी कहना है कि चन्द्रगुप्त ने डाकुओं के झुण्ड एकत्रित किये। डाकुओ से लड़ाकू सीमान्त जनजातियों का अनुमान लगाना ही अधिक तर्कसंगत होगा। विदेशी अथवा यूनानी लेखक विष्णुगुप्त (चाणक्य) का उल्लेख कही भी नही करते परन्तु लगभग सभी भारतीय ग्रन्थों के लेखको के वर्णन से यह ज्ञात होता है कि पश्चिमोत्तर में विप्लव का नेतृत्व अवश्य चद्रगुप्त मौर्य कर रहा था, परन्तु कारण विष्णुगुप्त (चाणक्य) का कुटिल मस्तिष्क ही था। ग्रन्थ महावंश में स्पष्ट वर्णन है कि नवें नन्द शासक घननन्द का विनाश कर चाणक्य ब्राह्मण ने चन्द्रगुप्त मौर्य को सकल जम्बूद्वीप का शासक बनाया-

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका आशा खबर सच का दम

'मोरियान खत्तियानं वंसे जातं सिरीधरं'
चन्द्रगुप्तोति पंचजातं चणक्को ब्राह्मणो
ततो,नवम् धननन्दन्तं धातोत्वा चण्डकोधसा,
सकले जम्बूद्वापम्हि रज्जे समाभिसिंच सो॥

वायुपुराण में भी कमोवेश यही कथा प्राप्त होती है कि नवे धननन्द का विनाश कर कौटिल्य नामक ब्राह्मण चन्द्रगुप्त का राज्याभिषेक करेगा।

उद्धरिष्यति तान् सर्वान कौटिल्यः द्विजर्षभः।
कौटिल्यश्च चन्द्रगुप्तम् तु ततो राज्येभिषेक्ष्यति॥

इसी प्रकार का कथन भगवत् पुराण, मत्स्य पुराण ब्रह्मपुराण से भी प्राप्त होता है। अर्थशास्त्र, कथासरितसागर, वृहत्कथामंजरी में भी इसी प्रकार का वर्णन है। कामन्दक के नीतिशास्त्र के अनुसार भी चाणक्य द्वारा नन्दो का समूल विनाश और चन्द्रगुप्त मौर्य के सिंहासनारोहण की पुष्टि होती है। अतः विद्रोह के पीछे अवश्य कौटिल्य (विष्णुगुप्त) का कुटिल मस्तिष्क था।

कौटिल्य (विष्णुगुप्त) की प्रतिशोध की भावना के साथ-साथ, नन्द का निम्न जातीय होना भी तत्कालीन विप्लव में विष्णुगुप्त का हाथ होने का स्पष्ट संकेत करता है। क्योंकि विष्णुगुप्त (चाणक्य) ब्राह्मण था और वर्णाश्रम व्यवस्था से च्युत व्यक्ति को शासक के रुप में देखना उसे असहनीय था, क्योंकि वर्णाश्रम धर्म के अनुसार क्षत्रिय ही शासक करने के योग्य होता है। अर्थशास्त्र में स्वयं विष्णुगुप्त (चाणक्य) ने ऐसे ही विचार प्रकट किए हैः- कि जनमत अभिजात दुर्बल नरेश का तो स्वागत करता है,

दुर्बलमभिजातं प्रकृत्यः स्वयमुपनमन्ति ।
बलवतश्चानभिजातस्ययोपजायं विसंवादयन्ति॥

किन्तु अनाभिजात बलवान् का नही।

अर्थशास्त्र में एक स्थान पर लिखा है कि इस ग्रन्थ की रचना उस व्यक्ति ने की है, जिसने बलात् मातृभूमि तथा उसके शास्त्र तथा शस्त्र को नन्दो को दासता से मुक्त कराया।

येन शास्त्रं च शस्त्रं च नन्दराजगता च भुः।
अमर्षेणोद् धृतान्याशुः तेन शास्त्रमिदं कृतम्॥

इस श्लोक से ऐसा प्रतीत होता है कि चाणक्य (विष्णुगुप्त) के अनुसार नन्दो का शासन तत्कालीन भारतवर्ष के लिए कल्याणकारी नही था। विदेशी यात्रियों के विवरण से भी यह स्पष्ट होता है कि नन्दों के विरुद्ध, विद्रोह के पीछे जहाँ चाणक्य के व्यक्तिगत द्वेष तथा प्रतिशोध की भावना काम कर रही थी, वही वर्णाश्रम धर्म के पुर्नप्रतिष्ठा की भावना भी, क्योंकि 'प्लूटार्क' स्वंय लिखता है कि चन्द्रगुप्त सिकन्दर के पास गया था और उसे सूचना दी थी कि नन्द सम्राट अपनी निम्न जातियता के कारण अप्रिय है, अतः सिकन्दर मगध को सरलता से विजित कर सकता है।

योग्य सहयोगी प्राप्त होने के पश्चात विष्णुगुप्त ने गुप्त धन की सहायता से एक विशाल सेना एकत्रित की। 'महावंश टीका' के अनुसार विन्ध्याचल के वन मे जाकर, चाणक्य ने धन एकत्रित करना प्रारम्भ किया। प्रत्येक कर्षापण के 8 कर्षापण बनाये। इस प्रकार उसने अस्सी करोड़ कर्षापण एकत्रित किये और इस धन को एक गुप्त स्थान पर गाड़ दिया। 'परिशिष्टपर्वन' का भी कथन है कि चाणक्य ने गुप्त धन की सहायता से सेना एकत्रित की।

सैनिक भर्ती के लिए तत्कालीन पश्चिमोत्तर भारत की राजनैतिक व्यवस्था अत्यंत उपयुक्त थी। यवन सैनिक जो सिकन्दर के आक्रमण के पश्चात पश्चिमोत्तर भारत में रह गये थे या तो चन्द्रगुप्त मौर्य और विष्णुगुप्त (चाणक्य) के साथ धन के लोभ के कारण मिल गये या सिकन्दर के प्रत्यावर्तन के पश्चात विप्लव के समय चन्द्रगुप्त द्वारा विजिट कर लेने के पश्चात उसकी सेना का एक भाग हो गए।

तत्कालीन आयुधजीवी जातियाँ, जिनमें अधिकांश पश्चिमोत्तर भारत की जनजातियाँ थी, धन के लोभ में सरलता से विष्णुगुप्त व चन्द्रगुप्त मौर्य की सेना का एक भाग बन गई।

'जस्टिन' ने भी कहा है चन्द्रगुप्त मौर्य ने डाकुओं के झुण्ड एकत्रित किये। डाकुओं के झुण्ड से पश्चिमोत्तर भारत की आयुधजीवी जातियों और तत्कालीन विद्रोही सेना का ही अनुमान लगाना अधिक तर्कसंगत प्रतीत होता है। इस विद्रोह में सम्भवतः कुछ समय पश्चात पुरु भी सम्मिलित हो गया होगा, क्योंकि यूनानी लेखों के सूक्ष्म अध्ययन से ऐसा ही प्रतीत होता है और इसी कारण उसे अपने जीवन से भी हाथ धोना पड़ा।

'महावंश टीका' के अनुसार अपनी सम्पूर्ण सेना को विष्णुगुप्त ने चन्द्रगुप्त मौर्य के नेतृत्व में दे दिया और इसी सेना को लेकर चन्द्रगुप्त में मगध पर प्रथम आक्रमण किया जो असफल हुआ। जैन ग्रन्थ परिशिष्टपर्वन से भी इसकी पुष्टि होती है। 'महावंश टीका' के अनुसार जब चन्द्रगुप्त और विष्णुगुप्त मगध पर प्रथम आक्रमण में असफल हुए तब वह इसका कारण जानने के लिए छदमवेश में घूमने लगे, घूमते-घूमते वे एक ग्राम में पहुँचे वहाँ एक घर में एक माँ अपने बच्चें को गरम पुए बनाकर दे रही थी और बच्चा पुए को बीच में से खाने का प्रयास करता था और जल जाता था, तब माँ ने कहा ''तुम चन्द्रगुप्त के समान व्यवहार कर रहे हो, तब लड़के ने पूछा माँ मैं क्या कर रहा हूँ और चन्द्रगुप्त ने क्या किया था? तब माँ ने कहा -'तुम्हारी तरह उसने भी मध्य भाग को प्रथम हस्तगत करने का प्रयास किया था। जिस प्रकार पुए में मध्य भाग अत्यंत गर्म होता है उसी प्रकार साम्राज्य का केन्द्र भाग अत्यंत शक्तिशाली होता है। अतः चन्द्रगुप्त को पहले सीमान्त प्रान्तो को विजित करना चाहिए था, तत्पश्चात केन्द्र भाग मगध को स्थगत करना चाहिए था। यह सुनकर चन्द्रगुप्त और विष्णुगुप्त ने अपनी योजना परिवर्तित कर दी और प्रथम सीमान्त प्रान्तों को विजित किया तत्पश्चात मगध पर आक्रमण किया। इस आक्रमण में वे सफल हुए और उनका मगध पर अधिकार हो गया, परन्तु विष्णुगुप्त ने नन्दराज की हत्या नही की वरन् उसे पाटलिपुत्र छोड़कर चले जाने की आज्ञा दी। सम्भवः इसके पीछे विष्णुगुप्त का परिपक्व मस्तिष्क काम कर रहा था, विजय के पश्चात तत्काल नंदराज की हत्या से विद्रोह होने का भय था और साम्राज्य अभी मात्र विजित किया गया था। विजित साम्राज्य का संगठन अतिआवश्यक था और संगठन के लिए समय की आवश्यकता थी। क्योंकि कुछ ग्रन्थों के अनुसार ऐसा संकेत प्राप्त होता है कि कुछ समय पश्चात धननन्द की हत्या विष्णुगुप्त (चाणक्य) के इशारे पर कर दी गई। मगध युद्ध अत्यंत भयानक रहा होगा।, क्योंकि नन्दों के पास अत्यंत अधिक लगभग दो लाख सैनिक थे, ऐसा यूनानी विवरण मिलता है। बौद्ध ग्रन्थ 'मिलिन्द पन्हो' से इस युद्ध की भयंकरता का अनुमान किया जा सकता है। इस ग्रन्थ के अनुसार भददशाल, नन्दराज की विशाल सैन्यवाहिनी का सेनापति था तथा युद्ध में हतो की संख्या 100 कोटि सैनिक, 10,000 हाथी, 1 लाख घोड़े तथा 5,000 रथी थे, परन्तु यह संख्या अतिशयोक्तिपूर्ण प्रतीत होता है। युद्ध अवश्य भयंकर और दीर्घकालीन रहा होगा। क्योंकि 'विशाखदत्त' के मुद्राराक्षस में षड़यन्त्रों के प्रति षड़यन्त्र, गुप्त मन्त्रणाओं के प्रति गुप्त मन्त्रणाओं का जैसा वर्णन किया गया है, उससे लगता है कि मगध पर विजय सरलता में प्राप्त न हुई होगी, एक दीर्घकालीन संघर्ष के पश्चात ही विष्णुगुप्त की बुद्धि और चन्द्रगुप्त की शक्ति के संयोग ने शक्तिशाली मगध साम्राज्य पर विजय प्राप्त की होगी। लगभग 322-321ई0पू0 में मगध के राजसिंहासन पर चन्द्रगुप्त का राज्याभिषेक हुआ। अतः सिकन्दर के प्रत्यावर्तन के पश्चात विदेशी क्षत्रपो का आपसी द्वेष और सिकन्दर के साम्राज्य पर उत्तराधिकार स्थापित करने के संघर्ष ने विष्णुगुप्त और चन्द्रगुप्त के कार्य को अत्यंत सुगम कर दिया होगा 323 ई0पू0 में जब सिकन्दर काल-कलवित हुआ, तब तक निश्चित ही भारत का पश्चिमोत्तर भाग स्वतन्त्र नही हुआ था, परन्तु विद्रोहाग्नि फैल चुकी थी। उसकी मृत्यु के पश्चात उसके सेनापतियों में साम्राज्य विभाजन के लिए संघर्ष प्रारम्भ हुआ। विभाजन को निश्चित करने के लिए 'ट्रिपेरेडिसस' की जो सन्धि हुई थी, उसमें भारतीय प्रदेशो का उल्लेख नही मिलता। इससे प्रमाणित होता है कि 321 ई0पू0 के पूर्व भारत यूनानियों की दासता से मुक्त हो चुका होगा। निश्चित तिथि का आकलन सम्भव नही है, परन्तु यह स्वतन्त्रता 323 ई0पू0-321 ई0पू0 के मध्य हुई होगी।

यदि पुराणो पर दृष्टि डाली जाये तो ज्ञात होता है कि चन्द्रगुप्त ने 24 वर्ष और बिन्दुसार ने 25 वर्ष तक शासन किया। दोनो के शासन का योग (24+25) होता है 49 वर्ष तक शासन किया। अतः चन्द्रगुप्त के राज्यारोहण की तिथि = अशोक के राज्यरोहण की तिथि + बिन्दुसार और चन्द्रगुप्त के शासन का समय = (273+49) का योग 322 ई0पू0है, अतः सम्भवतः 322 ई0पू0 तक पश्चिमोत्तर भारत से लेकर मगध तक चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन के अर्न्तगत आ गया था। अतः राज्यारोहण की तिथि 322 ई0पू0-321 ई0पू0 ही प्रमाणित होती है और क्योंकि मगध विजय महावंश टीका और परिशिष्टपर्वन के अनुसार पश्चिमोत्तर भारत के विजय के बाद की गई थी, अतः मगध विजय का काल 322 ई0पू0 माना जा सकता है। मगध विजय के पश्चात चाणक्य ने चन्द्रगुप्त का राज्याभिषेक करवाया और उसे मगध का सम्राट बना दिया। चाणक्य (विष्णुगुप्त) की प्रगाढ़ बुद्धि के बल पर ही चन्द्रगुप्त भारतवर्ष का सम्राट बन सका था, अतः उसने विष्णुगुप्त को अपना परामर्शदाता और प्रधानमंत्री नियुक्त किया।

विष्णुगुप्त प्रथम मौर्य शासक चन्द्रगुप्त के सम्पूर्ण राज्यकाल के दौरान उसका मुख्य परामर्शदाता तथा प्रधानमंत्री बना रहा है। तिब्बती लामा तारानाथ ने अपने बौद्ध धर्म के इतिहास में उल्लेख किया है कि चन्द्रगुप्त के मृत्यु के पश्चात भी चाणक्य चन्द्रगुप्त मौर्य के पुत्र बिन्दुसार 'अमित्रघात' के शासन काल में भी प्रधानमंत्री बना रहा, और राज्य कार्यो मे सहयोग देता रहा। चन्द्रगुप्त के काल में विष्णुगुप्त (चाणक्य) के निर्देशन तथा परामर्श से जिस मौर्य साम्राज्य की स्थापना हुई, वह बिन्दुसर के समय मे संगठित हो एक सुदृढ़ व्यवस्था में परिवर्तित हो गया। तारानाथ के अनुसार बिन्दुसार ने सोलह राजओं और अमात्यों का उच्छेद किया, इसकी पुष्टि जैन हेमचन्द्र के 'परिशिष्ट पर्वन' नामक ग्रन्थ से भी होती है। एक दीर्घकालिक युद्ध के पश्चात पूर्वी तथा पश्चिमी तट की भूमि बिन्दुसार के शासन के अर्न्तगत आ गई। अतः विष्णुगुप्त बुद्धि, बल, द्वारा मौर्य साम्राज्य का विस्तार करता रहा। विष्णुगुप्त ने 'सुबन्धु' नामक एक अमात्य की नियुक्ति बिन्दुसार की सेवा में की थी, परन्तु वह कृतघ्न निकला। वह चाणक्य (विष्णुगुप्त) की बढ़ी हुई अधिकार शक्ति से ईर्ष्या करने लगा। उसने बिन्दुसार के कान भरने शुरु कर दिये, परन्तु उसे सफलता न मिली।

विष्णुगुप्त (चाणक्य) को जब इन कुमन्त्रणाओं का पता चला तो मौर्य वंश के इस संस्थापक को अत्यंत दुःख हुआ। उसने राजकार्य छोड़कर वन में वानप्रस्थ का जीवन अपनाने का निर्णय कर लिया। बाद में बिन्दुसार और सुबन्धु दोनो को अपने कुकर्मों पर प्रायश्चित हुआ। वे चाणक्य के पास वन मे गए और उससे क्षमा मांगी। चाणक्य ने उन्हें क्षमा अवश्य कर दिया पर वन से लौटकर नही आया। अन्त में वन में ही साधारण पर्णकुटी में रहते हुए, प्राचीन भारत के इस महान् व्यक्तित्व ने अपने प्राण त्याग दिये।

लेखक- पुनीत शुक्ला

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका आशा खबर सच का दर्पण

विस्मयो योग भूमिका

शिव-सूत्र में एक सूत्र है जिस पर बहुत कम लोगो का ध्यान गया है। लेकिन यह महानतम है, क्योंकि इससे जीवन के गहनतम रहस्यों के द्वार खुलते है। इस सूत्र के आगे और सूत्र बहुत फीके है। इसे पढ़ते ही आपके प्राणों से 'अहा' का उच्छ्वास फूट पड़ता है।

शिव-सूत्र में एक सूत्र है जिस पर बहुत कम लोगों का ध्यान गया है। लेकिन यह सूत्र महानतम सूत्र है, क्योंकि इस सूत्र से जीवन के गहनतम रहस्यों के द्वार खुलते है। इस सूत्र के आगे और सूत्र बहुत फीके है। इसे पढ़ते ही आपके प्राणों से 'अहा' का उच्छ्वास फूट पड़ता है। यह सूत्र हैः विस्मयों योग भूमिकाः। विस्मय योग की भूमिका है। भगवान शिव कोई सामान्य योगी नही है- मनोयोगी है। सामान्य योग तो शारीरिक सौष्ठव की बात करता है और उसके बहुत आगे नही जा पाता। इसलिए हमारे देश में और आज तो विश्व के अनेक देशो में योग-प्रशिक्षण शिविर होते है, लेकिन वे शरीर की सीमा तथा उसके रहस्यों के पार नही जाते। विश्वभर में आज शारीरिक स्वास्थ्य तथा सौन्दर्य के प्रति जागरण बढ़ गया है, इसलिए योग भी लोकप्रिय हो गया है। इस समय निन्यानवे प्रतिशत योग बाजारु हो गया है। भगवान शिव ने योग-सूत्र के अतिरिक्त तंत्र-सूत्रों का एक बड़ा खजाना दिया है जो शिव-पार्वती संवाद के रुप में विज्ञान भैरव तंत्र के रुप में सदा से उपलब्ध रहा है, लेकिन दुर्घटना यह घटी है कि पश्चिम में तंत्र का अर्थ केवल सैक्स हो गया और उसका भी बाजारीकरण हो गया। जब यह सब पश्चिम से भारत में लौटता है,इम्पोर्टेड हो जाता है तो और भी विकृत हो जाता है। इस प्रक्रिया में योग व तंत्र दोनो विकृत हुए है इन दोनों में जीवन के महा रहस्य छिपे है। इनको समझने और इनकी अनुभूति करने में रहस्यों की परत-दर-परत खुलती जाती है। 'विस्मय योग की भूमिका है' इसका अभिप्राय समझाते हुए ओशो कहते है विस्मय का अर्थ शब्दकोश में दिया है- आश्चर्य। हालांकि आश्चर्य और विस्मय में बुनियादी भेद है। वे भेद समझ में न आएं तो अलग-अलग यात्राएं शुरु हो जाती है। आश्चर्य विज्ञान की भूमिका है, विस्मय योग की आश्चर्य बर्हिमुखी है,विस्मय अंतर्मुखी, आश्चर्य दूसरे के संबंध में होता है, विस्मय स्वयं के संबंध में एक बात। जिसे हम नही समझ पाते है जो हमें अवाक् कर जाती है जिस पर हमारी बुद्धि की पकड़ नही बैठती जो हमसे बड़ी सिद्ध होती है जिसके सामने हम अनायास ही किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते है, जो हमें मिटा जाती है- उससे विस्मय पैदा होता है। लेकिन अगर यह जो विस्मय की दशा भीतर पैदा होती है अर्तक्य, अचिंत्य के समक्ष खड़े होकर-इस धारा को हम बर्हिमुखी कर दें, तो विज्ञान पैदा होता है। सोचने लगें पदार्थ के संबंध में, विचार करने लगें जगत के संबंध में, खोज करने लगें रहस्य की, जो हमारे चारो ओर है- तो विज्ञान का जन्म होता है। विज्ञान आश्चर्य है। आश्चर्य का अर्थ है-विस्मय बाहर की यात्रा पर निकल गया। आश्चर्य और विस्मय में यह भी फर्क है कि जिस चीज के प्रति हम आश्चर्यचकित होते है, आज नही कल इससे परेशान हो जाएंगे, आश्चर्य से तनाव पैदा होगा, इसलिए आश्चर्य को मिटाने की कोशिश होती है। विज्ञान आश्चर्य से पैदा होती है, फिर आश्चर्य को नष्ट करता है, व्याख्या खोजता है, सिद्धान्त खोजता है, सूत्र चाभियां खोलता है और तब तक चैन नही लेता जब तक कि रहस्य मिट न जाए, जब तक कि ज्ञान हाथ में न आ जाए, तब तक चैन नही है। विज्ञान जगत से आश्चर्य को मिटाने में लगा है। एक तो ऐसी वस्तुएं है, जिन्हें हमने जान लिया- उन्हें हम 'ज्ञात' कहें कुछ ऐसी वस्तुएँ है, जिन्हें हमने जाना नही है, लेकिन जान लेगें, उन्हें हम 'अज्ञात' कहें और कुछ ऐसा भी है इस जगत में, जिसे हमने जाना भी नही है और हम जान भी न पाएगें, उसे हम 'अज्ञेय' कहें। परमात्मा अज्ञेय है। वह तीसरा तत्व है। विज्ञान इसलिए परमात्मा को स्वीकार नही करता, क्योंकि विज्ञान कहता है कि ऐसा कुछ भी नही है, जो न जाना जा सके। नही जाना होगा हमने अभी तक, हमारे प्रयास कमजोर है, लेकिन आज नही कल, केवल समय की बात है, हम जान लेगें। एक दिन जगत पूरा का पूरा जान लिया जाएगा, उसमें अनजाना कुछ भी न बचेगा। आश्चर्य से पैदा होता है और फिर आश्चर्य की हत्या मे लग जाता है। इसलिए विज्ञान को मै 'पितृघाती' कहता हूं वह जिससे पैदा होता है उसे मिटाने में लग जाता है।धर्म बिल्कुल विपरीत है। धर्म भी एक आश्चर्य भाव से पैदा होता हैः उस आश्चर्य भाव को शिव-सूत्र में विस्मय कहा है। फर्क इतना ही है कि जब धार्मिक खोजी, किसी स्थिति में आश्चर्य से भर जाता है, तो वह बाहर की यात्रा पर नही जाता, स्वयं की यात्रा पर जाता है। रहस्य अंर्तमुखी बन जाए, यात्रा खोज भीतर चलने लगें, पदार्थ की तरफ नही, स्वयं की तरफ मेरी खोज उन्मुख हो जाएः मेरा संधान पहले उसे जानने में लग जाए कि मै कौन हूं तो विस्मय। दूसरी बात जिसे समझ लेनी जरुरी है वह यह है कि विस्मय कभी भी चुकता नही जितना हम जानते है, उतना ही बढ़ता है। इसलिए विस्मय एक विरोधाभास है क्योंकि जानने से विस्मय नष्ट होना चाहिए। लेकिन बुद्ध या कृष्ण या शिव या जीसस, उनका विस्मय नष्ट नही होता।

क्रोध पर

एक बार मुझे जोधपुर की जेल में प्रवचन देने के लिए बुलाया गया। जब मैं वहां कैदियो के बीच बैठकर उनसे बाते कर रहा था, तो मैने उनमें से एक कैदी से पूछा, ''भाई, तुम्हें किस अपराध में जेल हुई है?'' उसने जवाब देते हुए कहा, 'गुस्सा करने के अपराध मे।' 'मतलब?' मैने पूछा। यह सुनकर वह रोने लगा... थोड़ी देर बाद उसने मुझे बताया, ''मुझे शराब पीने की आदत थी। मेरी पत्नी ने मुझे कई बार समझाया, लेकिन मुझ पर उसकी बातों का कोई असर नही हुआ। तब हमारे बीच तय हुआ कि अगर मुझे शराब पीनी है, तो मैं घर के बाहर पिऊंगा, घर में नही। एक बार पत्नी कुछ दिनों के लिए मायके गई हुई थी। मैने सोचा कि अब दस-पन्द्रह दिन तक तो पत्नी आने वाली है नही, सो घर में ही महफिल सजने लगी। एक दिन जब मैं अपने दोस्तो के साथ बैठकर शराब पर रहा था तो अचानक पत्नी आ धमकी। आते ही वह तमतमा उठी और उसने मुझे मेरे दोस्तों के सामने ही खरी-खोटी सुनानी शुरु कर दी। मुझे गुस्सा आ गया मैनें सामने पड़ा पेपरवेट उठाकर उस पर दे मारा। वो पेपरवेट उसके सिर पर लगा और उसके सिर से खून की धारा बहने लगी। मै उसे लेकर डॉक्टर के पास भी गया, लेकिन वहां डॉक्टरो ने उसे मृत घोषित की दिया और उसकी हत्या के अपराध में मुझे ग्यारह वर्ष की जेल हो गई।'' उसने मुझसे कहा कि वह आज भी इस बात को लेकर पछता रहा है कि उसने गुस्सा क्यों किया?

गुस्सा मैने भी किया है और उसके दुष्परिणाम भी देखे है। यकीनन आपने भी अपने गुस्से के दुष्परिणाम जरुर देखे होगें। हालाकिं, हम सभी जानते है कि गुस्सा करने का कोई फायदा नही होता, लेकिन फिर भी हम गुस्सा करना नही छोड़ते। क्यों?

हमे गुस्सा क्यों आता है?

किसी भी व्यक्ति को गुस्सा तब आता है जब वह बहुत ज्यादा कमजोर पड़ जाता है या स्वंय को कमजोर महसूस कर रहा होता है। इसलिए तो, हमे हमेशा कमजोर पर ही गुस्सा आता है। अक्सर एक पिता अपने बच्चों पर, एक मालिक अपने नौकर पर और एक बच्चा अपने खिलौने पर अपना गुस्सा निकालते हुए दिखाई देता है। और जो किसी दूसरे पर गुस्सा नही निकाल पाता, वह निरीह मूक जानवरो पर अपनी खीझ उतार देता है। ऐसे लोग किसी से कुछ कह नही पाते, इसलिए सड़क पर से पत्थर उठाकर किसी कुत्ते को मार देते है अथवा गाय या बकरी को छड़ी से मारने लगते है। दूसरा, गुस्सा हमेशा दूसरे की गलतियो पर आता है, अपनी नही। उदाहरण के लिए, आप शेविंग कर रहे है और गलती से ब्लेड से आपका गाल कट गया, तो आप किस पर गुस्सा करेगें? किसी पर नही। हां, अगर आप किसी हजाम के पास जाते है और उसके हाथों आपको ब्लेड लग जाए तो आप उसकी पूरी दुकान सिर उठा लेते है। गुस्से में हम अपनी बड़ी सी बड़ी गलती भी भुला बैठते है, लेकिन दूसरे की छोटी बात भी हमें पहाड़ लगने लगती है।

ऐसा इसलिए होता है क्योंकि क्रोध हमेशा नीचे की ओर बहता है। इसलिए इसका परिणाम इतना घातक होता है। एक बार क्रोध करने से हमारी एक हजार ज्ञान-कोशिकाएं जलकर नष्ट हो जाती है। जो लोग दिन मे दस बार गुस्सा करते है उनकी दस हजार ज्ञान-कोशिकाएं नष्ट होती है। आप गुस्सा करेगें तो आपका दिल कमजोर होगा, रक्तचाप असंतुलित होगा, भूख नही लगेगी, नींद भी नही आएगी। क्रोध का एक अन्य दुष्परिणाम यह भी है इससे आपका स्वयं पर नियंत्रण समाप्त जाता है। इसलिए गुस्से में इंसान मूर्खतापूर्ण कार्य करता है। इतना ही नही, गुस्से में व्यक्ति अपशब्दो का प्रयोग भी करता है। क्रोध आने पर सारी समझदारी एक तरफ हो जाती है और मुंह से गालियां झरने लगती है। देखते ही देखते, हमारे द्वारा किया गया थोड़ा-सा गुस्सा हमारे मैत्रीपूर्ण संबंधो को समाप्त कर देता है।

इसके विपरित, जो क्रोध नही करता वह एक समय भोजन करके भी ऊर्जावान बना रहता है। उसका स्वयं पर नियंत्रण बना रहता है।

क्रोध को कैसे जीतें?

क्रोध का एक इलाज है- धैर्य। 10 मिनट का धीरज आपके 10 घंटे की शांति को बर्बाद होने से बचा सकता है। एक समय की बात है, रुसी संत गुर्जिएफ मृत्यु-शैया पर थे। उनका एक अनुयायी अपने पुत्र के साथ उनसे मिलने आया। उसने कहा, 'महात्मन, मेरे पुत्र को कुछ जीवनोपयोगी शिक्षा दे। 'गुर्जिएफ ने उस लड़के को ध्यान से देखा और कहा, 'बेटा जब भी कोई तुम पर क्रोध करें, तो तुरंत उसका जवाब मत देना। जवाब जरुर देना, लेकिन चौबीस घंटे बाद।' वह युवक सहमत हो गया। अब उसे जब भी गुस्सा आता, साथ ही संत की बात याद आ जाती है।

क्रोध एकमात्र ऐसा कषाय है जिससे हमारी आत्मा भी गिरती है, मन में संत्रास भी पैदा होता है, और हमारे सम्बन्ध भी कटते है

हालांकि हम सभी जानते है कि गुस्सा करने का काई फायदा नही होता, लेकिन फिर भी हम गुस्सा करना नही छोड़ते । क्यों?

और चौबीस घंटे बाद वह भूल ही जाता है कि उसे गुस्सा किस बात पर करना है।

वास्तव में, जो लौकिक और अलौकिक दोनो प्रकार के स्वर्ग का अधिकरी होता है।

गुस्से को नियंत्रण में रखने का दूसरा तरीका है- प्रेम। उदाहरण के तौर पर आपको एक और कहानी बताता हूँ- एस. पी. महोदय अपने लाव-लश्कर के साथ एक दंगाग्रस्त क्षेत्र में पहुँचे। मोहल्लें के लोग बहुत गुस्साए हुए थे। उनमें से किसी एक ने एस. पी. के मुंह पर थूक दिया। यह देखते ही थानेदार ने रिवाल्वर निकाल ली और उस व्यक्ति पर तान दी। वह गोली चलाने ही वाला था कि एस.पी. ने कहा, 'ठहरो, क्या तुम्हारें पास रुमाल है?' 'हां, सर है।' थानेदार ने कहा और तुरंत रुमाल निकालकर एस.पी. को दे दिया। एस. पी. ने रुमाले से मुंह पोछने के बाद थानेदार से कहा, 'हमेशा याद रखना जो काम रुमाल से निपट जाए उसके लिए रिवाल्वर चलाना बेवकूफी है।'यदि आपके कारण किसी को गुस्सा आ जाए तो क्षमा मा-ंगना न भूले। क्षमा एक छोटा, लेकिन बहुत ही शक्तिशाली शब्द है। यही है क्रोध को जीतने का कारगर फार्मूला कि जो काम प्रेम भरे शब्दों से पूरा हो सकता है, उसके लिए तैश क्यों खाया जाए। क्रोध तभी करें जब क्रोध करने के अतिरिक्त कोई विकल्प ही न बचें। क्रोध-मुक्ति का एक और तरीका है- स्वयं को क्रोध से विलग कर लेना। अर्थात् क्रोध का वातावरण बनने पर उस स्थान से अलग हो जाएं। किसी दूसरे कमरें में चले जाएं, कुछ अच्छा-सा संगीत सुन ले, नही तो सफाई कर ले, मतलब कि अपना ध्यान बंटा दे। अगर ऐसा नही कर सकते यानि कि वहां से हटना मुमकिन नही है, तो ठंडा पानी पी ले । जब दूध में उफान आता है तो पानी के छीटें डालकर उफान को रोक देते है या गैस बंद कर देतें है। ठीक उसी तरह क्रोध का तापमान कम करने के लिए ठंडा पानी पी लीजिए, वह भी ठंडा हो जाएगा। आप ठंडा होकर देखिए तो सही, अगला ठंडा बर्फ हो जाएगा। एक बात और यदि आपके कारण किसी को गुस्सा आ जाए तो क्षमा मांगना न भूले। क्षमा एक छोटा, लेकिन बहुत ही शक्तिशाली शब्द है, जो किसी के गुस्से को एक ही क्षण में आधा कर देता है।

लेखक- दीपक कुमार सिंह

ब्लैक एंड व्हाइट कुर्ती

(विंटरशाइन निटिंग यार्न)

सामग्री

400 ग्राम ब्लैक ऊन, 90 ग्राम सफेद ऊन सिलाई नं. 9 और सिलने वाली सुई।

विधि

अगला भाग - 150 फंदे डालकर सीधे के ऊपर उल्टा और उल्टे के ऊपर सीधा फंदा डालते हुए 1" तक बुने। बार्डर के ऊपर 4" बुनते हुए दोनों तरफ से 9-9 फंदे बॉर्डर के चॉक के लिए रखें। 8" बुनने पर सीधा बुनते हुए हर चौथी सिलाई में 1-1 फंदा दोनों तरफ से घटाते हुए 6" तक बुने फिर 1" सीधा फिर हर 6वी सिलाई में 1-1 फंदा बढ़ाते हुए 7" तक बुनें। बॉर्डर से 18" ऊपर बीच से फंदघटाते हुए गोलाई में 3.5" में सारे फंदे बंद कर दे। इसी प्रकार पिछला भाग बुनें।

बाजू

52 फंदे डालकर सीधे के ऊपर उल्टा और उल्टे के ऊपर सीधा 1.5" बॉर्डर बुनें। । फिर दिए हुए ग्राफ की तरह डिजाइन बुनें और साथ में दोनों तरफ से हर 6वी सिलाई में 1-1 फंदा घटाते हुए 18" तक बुनें। इसी प्रकार दूसरी बाजू भी बुनें। बाजू, आगे वाले भाग, दूसरी बाजू और पिछले भाग के फंदे उठाकर डिजाइन डालते हुए 7" तक बुनें। गले में 4 सिलाई पर्ल की डालते हुए बंद कर दे और सुई से सिल दे।

मैरुन कैप

सामग्री

150 ग्राम मैरुन ऊन, 8 नं. की सिलाई।

विधि

सलाई पर 13 फंदे डालकर 1 स. सीधी, एक सलाई उल्टी बुनें। सीधी सलाई में 1 फंदा सी. 1 फंदा उल्टा बुनें। अब सारी सलाई उल्टी बुनें. सी. सलाई में 1 उ. फं. के 2 फं. करें सीधे फं. बिना बुने उतारें। उ. फ. के 2 फं. करें, सी. फं. उतारे। इसी प्रकार बुनें। उल्टे फंदे मे हर बार 1-1 फं. बढ़ाती जाएं। अब 80. फं, हो तो गा. स्टि. से इसका बॉर्डर बनायें। बीच के 25-25 फं. को गा. स्टि से ही 6 स. बुनने के बाद दोनो तरफ से 1-1 फं हर सिलाई मे घटाती जायें। 8 सलाई में घटा कर 2 स. बना कर जिस प्रकार फं घटाए थे उसी प्रकार बढ़ा ले। 6 सलाई बना कर फं. बंद कर दें। इसे डबल करके दोनों तरफ से सी लें। सीधा करके पीछे के बॉर्डर के साथ सी ले।

आपकी कैप तैयार है।

स्लीवलेस ग्रे स्वेटर

(रैबिट एक्सल निटिंग यार्न)

सामग्री 200 ग्राम ग्रे ऊन. सिलाई न. 10 और सिलने वाली सुई।

विधि अगला भाग - 120 फंदे डालकर 2 × 2 का 3.5'' बुनें तथा हर 6वी सिलाई में दोनो तरफ से 1-1 फंदा घटाएँ और बार्डर के ऊपर केबल का डिजाइन बुनें और बीचमें 18 फंदे 2 × 2 के बॉर्डर के रखें। इसी प्रकार डिजाइन बुनते हुए दोनो तरफ से हर 6वी सिलाई में फंदे घटाते हुए 6.5'' बुनें। फिर 1'' सीधा बुनें फिर हर 6वी सिलाई में 1-1 फंदा बढ़ाते हुए बॉर्डर के ऊपर 9'' तक बुनें। 9'' तक बुनने पर गलें की कटाई गोलाई में करें। 8'' होने पर 14 फंदे तीरे के रखें।

पिछला भाग- अगले भाग की तरह बुनें लेकिन गले की कटाई बॉर्डर के ऊपर 13'' बुनने पर करें। अगले - पिछले दोनो भागों को जोड़ कर गले और बाजू के फंदे उठाकर 8 सिलाई 2 ×2के बॉर्डर की बुने।

फंकी कैप

सामग्री 25 ग्राम फिरोजी वर्धमान ऊन, थोड़ा-थोड़ा ब्लैक व सफेद ऊन 10 नं. की सलाई।

विधि फिरोजी रंग से 70 फंदे डालकर एक सीधा, दो उल्टा की बुनाई करते हुए 8 सलाई बना ले। अब4 सलाई काली और 2 सलाई सफेद ऊन की स्टाकिंग स्टिच में बुनें। इसी तरह रंग बदलकर जब लं. 6 इंच हो जाए तो 3 फं. का एक करते हुए 10 फंदे रोक लें। इसे 30 सलाई स्टाकिंग स्टिच में फिरोजी, काली लगाते हुए बुनें। इसमें फोम या रुई डालकर सिल लें। नीचे सफेद फिरोजी मिलाकर फुदने लगा दें। आपका कैप तैयार है।

लेखिका-दीपिका केसरवानी

Wedding Collection Available
वैवाहिक साड़ियों की
Sunday Open
• लेटेस्ट कलेक्शन के साथ उपलब्ध
• डिजाइनर साड़ियाँ
• वैवाहिक एवं पार्टी वियर, लहँगा-चुन्नी
• सलवार सूट
नया व विशालतम रेंज उपलब्ध
दुलहन fashion के साथ
तुल्सियानी प्लाजा (कॉफी हाउस के सामने), सिविल लाइन्स
इलाहाबाद - फोन- 0532-2427594
E-mail :- info@dulhanfashion.in
Website: www.dulhanfashion.in

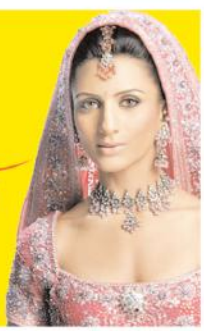

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका
आशा खबर
सच का दम

भारत पर हमले की आशंका सबसे ज्यादा

एम आई 5 का अलर्ट

ब्रिटेन की खुफिया एजेंसी एमआई-5 के आतंकी हमलों को लेकर सुरक्षा अलर्ट को भारत को पूरी गंभीरता से लेना चाहिए। सुरक्षा मामलों के विशेषज्ञों का मानना है कि भारत पर आतंकी हमले का खतरा सबसे ज्यादा है, क्योंकि भारत के पड़ोस में आंतक को पनाह मिलती है। इसलिए पश्चिमी देशो की तुलना में भारत को ज्यादा सतर्क रहने की जरुरत है। सुरक्षा मामलों के विशेषज्ञ सी उदय भास्कर ने कहा, एमआई-5 की चेतावनी को लेकर भारत में बहुत हौवा नही होना चाहिए। न ही किसी सूरत में इसे नजरअंदाज किया जाना चाहिए। भारत हमेशा दहशतगर्दी के निशाने पर रहा है। लेकिन यहां दहशतगर्दी ज्यादातर पाक प्रायोजित रही है। आईएस और अलकायदा जैसे संगठनो ने भारत को अब तक निशाना नही बनाया है। फिर भी आईएस अमेरिका, इजरायल की तरह ही भारत पर भी निशाना साधता रहा है। जिस तरह का माहौल बन रहा है उसमें आईएस और अलकायदा जैसे संगठन अन्य आतंकी संगठनों के लिए मातृसंगठन की भूमिका में आते नजर आ रहे है। ऐसे में संयुक्त आंतकी हमलो की संभावना को नकारा नही जा सकता है। भास्कर के मुताबिक भारत में पहले से कई तरह के अलर्ट जारी किए गए है। अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा की भारत यात्रा के मद्देनजर यहां काफी सर्तकता बरती जा रही है। भारतीय खुफियां एजेंसियों ने भी अलर्ट जारी किए है। इसीलिए कोई नया अलर्ट हमारी एजेंसियो की चिंताओं को पुख्ता करता है। पेरिस हमले के बाद से प्रमुख शहरों को अलग तरह के खतरों को लेकर भी सतर्क किया है। भास्कर ने कहा, पहले सिडनी, फिर पेशावर और अब पेरिस के हमलों का रुझान देखने के बाद कहा जा सकता है कि इस तरह के हमले होने के बाद नुकसान होना लाजिमी है।

विशेषज्ञों की राय

- ब्रिटिश एजेंसी के अलर्ट से भारतीय खुफिया विभागो की आशंका की हुई है पुष्टि।
- पाकिस्तान प्रायोजित आतंकियों के अलावा अलकायदा और आईएस से भी बड़ा खतरा।

सतर्क रहे पर घबराने की जरुरत नही

एमआई-5 के सुरक्षा अलर्ट को लेकर घबराने की जरुरत नही है। लेकिन भारत को अपनी पूरी तैयारी रखनी चाहिए। भारत में लश्कर और जमात जैसे संगठनो से ज्यादा खतरा है जो पाकिस्तान सरकार की मदद से हमारे देश को निशाना बनाने के लिए बेताब है। भारतीय खुफिया एजेंसियों ने भी लगातार अलर्ट जारी किए है। भारत में आईएस और अलकायदा जैसे संगठनो की ज्यादा नजर अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा की यात्रा को लेकर हो सकती है।

हमले को विफल करने के लिए क्षमता बढ़ाने की जरुरत

उदय भास्कर के मुताबिक भारतीय खुफियां एजेंसियो ने पहले से बेहतर प्रयास किए है। लेकिन हमारी क्षमता अभी भी बहुत कम है। सटीक सूचनाओं को लेकर कमियां है। सामान्य अलर्ट से सभी स्थानो को 24 घंटे चौकन्ना नही रखा जा सकता है। किसी पुलिस स्टेशन पर जाइए वहां हमारे पुलिस कर्मियों को कंम्प्यूटर का इस्तेमाल करना सही तरीके से नही आता है। आतंकी हमलों से सूचनाओं के आदान प्रदान उनके सटीक विश्लेषण के लिए तकनीक दक्ष टीम की बड़े पैमाने पर जरुरत है।

हम भी रहें सतर्क

- लोग आतंकी हमले के मद्देनजर भयभीत होने की वजह से सर्तकता बरते।
- बस अड्डे, रेलवे स्टेशन जैसे सार्वजनिक स्थलों पर संदिग्ध वस्तु होने पर पुलिस को सूचना दे।
- किसी व्यक्ति की संदिग्ध हरकत होने पर उसकी जानकारी पुलिस को दे सकते है।
- अति सुरक्षा वाले स्थानों पर सुरक्षा कर्मियों को जरुरी जांच में सहयोग करें।
- अपना व्यक्तिगत पहचान पत्र हमेशा अपने साथ रखें।
- सुरक्षा कर्मियों और प्रशासन द्वारा किए जाने वाले मॉक ड्रिल का हिस्सा बनें।
- हमला होने की स्थिति में आपातकालीन सेवाओं के लिए रास्ता छोड़े, भीड़ न लगाए।

रिटेल सेक्टर में पैर जमाइए

रिटेल एक ऐसा क्षेत्र है जहां यदि आपके पास सही तर्क क्षमता या दृष्टिकोण और एक अच्छा व्यक्तित्व है तो यहां आगे बढ़ने में आपकी एकेडमिक पृष्टभूमि भी ज्यादा मायने नही रखती ।

रिटेल एक युवा इंडस्ट्री है, जो ऐसे युवाओं को सुविधाए पलब्ध करा रही है, जिनके पास एक अच्छी निश्चित आय और बदलती हुई जीवनशैली है। यही बात रिटेल इंडस्ट्री के विकास को चलायमान रखने में भी मददगार साबित हो रही है। रिटेल अब देश का तेजी से विकास करता हुआ क्षेत्र ही नही, बल्कि ऐसा क्षेत्र बन गया है, जहां अवसरो की कमी नही है। इस क्षेत्र में काम करने के लिए आपमें सेल्स, मार्केटिंग, अकाउंटिंग, रचनात्मकता और प्रबंधन के गुणों का होना आवश्यक है।

रिटेल इंडस्ट्री किसी प्रॉडक्ट को उसके निर्माता से खरीदार एक सीधे उपलब्ध कराने पर केंद्रित है। रिटेल मैनेजमेंट के अंतर्गत किसी स्टोर के मैनेजर से ग्राहक की सीधी बातचीत और उनके बीच आपसी समझ शामिल होती है, जिससे ग्राहक की जरुरत को समझकर उसे उसकी पसंद की निकटतम वस्तु उपलब्ध कराई जा सके। आज शॉपिंग ने एक विज्ञान का रुप ले लिया है, जो ग्राहको से जुड़ी आवश्यक सूचनाएं उपलब्ध कराने के साथ ही यह भी सिखाता है कि इसका इस्तेमाल किस तरह से किया जाए। वही रिटेलर की सफलता सिर्फ ग्राहक के मस्तिष्क को समझने की क्षमता पर ही निर्भर करती, बल्कि यह बात भी मायने रखती है कि वह मार्केटिंग से जुड़ी कूटनीतियों को किस तरह से बनाता और लागू करता है।

वर्तमान में भारतीय रिटेल की स्थिति एक बूमिंग सेक्टर की है, जहां टाटा, रहेजा, रिलायंस और गोयनका जैसे बड़े नाम क्षेत्र में अपने ब्यूटी व हेल्थ स्टोर, अपरैल स्टोर, ज्वैलरी सुपरमार्केट, सेल्फ सर्विस म्यूजिक स्टोर, न्यूएज बुक स्टोर, एवरी डे लो प्राइस स्टोर, कम्प्यूटर और पेरिफेरल स्टोर, ऑफिस इक्विपमेंट स्टोर व होम कंस्ट्रक्शन स्टोर लेकर आ रहे है। वही इंटरनेशनल ब्रांड और अन्य रिटेल शृंखलाएं भी इस क्षेत्र में प्रवेश पाने के लिए बेसब्री से प्रतीक्षा कर रही है।

अभी तक इस क्षेत्र में 800 से भी ज्यादा स्टोर खोले जा चुके है और लगभग 100 से ज्यादा स्टोर खोले जाने की योजना है। यही कारण है कि इस इंडस्ट्री को सेल्स एग्जीक्यूटिव और स्टोर मैनेजर से लेकर उत्पाद से जुड़ी योजनाएं बनाने और खरीदने वालों के रुप में अधिक संख्या में लोगो की आवश्यकता है। रिटेल सेक्टर में काम के क्षेत्रों में स्टोर मैनेजमेंट, इन्वेंटरी मैनेजमेंट डिपार्टमेंट ले आउट मैनेजमेंट और कस्टमर सर्विस मैनेजमेंट शामिल है। इस क्षेत्र में ज्यादातर फ्रेशर अलग-अलग कार्यक्षेत्रों जैसे कैशियर, सेल्स, एडमिनिस्ट्रेशन, बाईंग, लॉजिस्टिक, मार्केटिंग, कस्टमर कॉन्टैक्ट टू स्टोर मैनेजर, कैटेगरी सेल्स मैनेजर, रीजनल मैनेजर, टेरीटरी मैनेजर और फिर नेशनल मैनेजर के पद तक पहुंचने के लिए ट्रेनी के रुप में शुरुआत करते है। एक स्टोर या रिटेल मैनेजर एक या उससे अधिक रिटेल आउटलेटों के कार्यो की योजना बनाने और उसे संयोजित करने का काम करता है। इनमें चाहे छोटे फ्रेंचाइजी जैसे स्पेशिएलिटी शॉप, फास्ट फूड चेन हो या सुपरमार्केट या डिपार्टमेंट स्टोर के कुछ खास भाग, दोनो ही शामिल हो सकते है। कई बार रिटेल मैनेजर स्टोर के अन्य भागों में भी काम करते है, जिससे उन्हें हर विभाग का व्यावहारिक अनुभव और किसी उत्पाद को बेचने के फायदे, मार्केटिंग और प्रबंधन से जुड़ी बातों को सीखने का मौका मिलता है। सीनियर लेवल पर जाने के बाद रिटेल मैनेजमेंट में स्टॉक मैनेजमेंट और पूरा सप्लाई चेन मैनेजमेंट शामिल होता है, जिसमें कट-कॉस्ट, सेल में बढ़त, क्वालिटी को बनाए रखने से जुड़ी बाते, ट्रेडिंग एनालिसिस और प्लानिंग शामिल होती है। रिटेल मैनेजमेंट के स्नातक स्तरीय फोर्स में दाखिले के लिए आधारभूत योग्यता बारहवीं है। वही कुछ संस्थान स्नातकोत्तर कोर्स भी उपलब्ध कराते है, जिसके लिए न्यूनतम योग्यता किसी भी विषय में तीन वर्षीय बैचलर डिग्री का होना है। रिटेल मैनेजमेंट के कोर्स मे सप्लाई चेन मैनेजमेंट, मार्केटिंग, इंफॉर्मेशन, फाइनेंस मैनेजमेंट, इन्वेंटरी मैनेजमेंट और रिटेल में अकाउंटिंग जैसे विषय शामिल होते है। यहां छात्रों को बिजनेस कम्युनिकेशन और ऑर्गनाइजेशन बिहेवियर के साथ ही सेल्स प्रमोशन और कस्टमर रिलेशनशिप मैनेजर के बारे में भी सिखाया जाता है। प्रशिक्षित व्यक्तियों की बढ़ती मांग को देखते हुए रिटेल शृंखलाओं द्वारा कई ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट स्थापित किए गए है। मुबंई स्थित के जे सोमैया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च स्टडीज सबसे पहले लॉन्च किया। यहां रिटेल मैनेजमेंट में अठारह महीने का पीजी डिप्लोमा कोर्स उपलब्ध है, जिसमें पैंटालून स्टोर में छह महीने की प्रोफेशनल प्रैक्टिस भी शामिल है। इसके अलावा वेलिंगकर स्कूल ऑफ रिटेल मैनेजमेंट स्टडीज और इंडियन रिटेल स्कूल भी रिटेलिंग और रिटेल मैनेजमेंट स्पेशियलाइज्ड प्रोग्राम कराते है। इसके साथ ही नई दिल्ली स्थित निफ्ट और पर्ल एकेडमी ऑफ फैशन भी अपैरल रिटेलिंग और मर्चेनडाइजिंग में विशेषज्ञता उपलब्ध कराने वाले संस्थानों में आते है। रिटेल क्षेत्र के जाने-माने नाम भारती वॉल मार्ट ने भी अमृतसर, बेंगलुरु, दिल्ली और महाराष्ट्र के कई केंद्रो में अपने ट्रेनिंग सेंटर स्थापित किए है, जहां शॉर्ट टर्म वोकेशनल सर्टिफिकेशन कोर्स कराए जाते है, जिससे वॉलमार्ट के द्वारा विकसित किए गए इस खास कार्यक्रमो के माध्यम से छात्रो को फ्लोर व सेल्स असिस्टेंट और सुपरवाइजर की बेहतर ट्रेनिंग दी जा सके। इसके अलावा भी ऐसी कई रिटेल शृंखलाएं है, जो रिटेल व्यापार में स्टाप को प्रशिक्षित और छात्रो को इंटरशिप उपलब्ध कराने का काम रही है। रिटेल एक ऐसा क्षेत्र है, जहां यदि आपके पास सही तर्क क्षमता या एप्टीट्यूड और एक अच्छा व्यक्तित्व है, तो आपकी एकेडमिक पृष्टभूमि ज्यादा मायने नही रखती। यहां जिस बात की जरुरत है, वह है अच्छा कम्युनिकेशन, ऑर्गनाइजेशनल और लीडरशिप के गुणो का होना। यह ग्राहको पर केंद्रित क्षेत्र है और यहां काम करने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि वह लोगो के साथ मिलजुल कर काम करने का आंनद ले। इसके अलावा प्रॉडक्ट की समझ के साथ ही आपमें गणितीय और काम को सटीक और साफ-सुथरे ढंग से करने के गुणो का होना भी आवश्यक है। इस क्षेत्र में अपने करिअर की शुरुआत आप 7,000 रुपए से 15,000 रुपए वेतनमान के बीच कर सकते है, जिसमें बोनस और अन्य सुविधाएं भी शामिल है। वही एक स्टोर मैनेजर का वेतनमान 25,000 रुपए से 30,000 रुपए तक हो सकता है, जो अनुभव के साथ बढ़ता रहता है। यह एक नई इंडस्ट्री है, इसलिए इसमें करिअर ग्रोथ की संभावनाएं ज्यादा है। इसके साथ ही ऐसे उम्मीदवार, जो प्रतिभाशाली है, एक साथ कई जिम्मेदारियों को निभा सकते है और जिनकी कम्युनिकेशन स्किल अच्छी है, उनके लिए यह क्षेत्र डिजाइनर बुटीक, फास्ट फूड चेन, सुपर मार्केट, कंपनी स्टोर, म्यूजिक स्टोर, इलेक्ट्रानिक शोरुम, आटोमोबाइल डीलर ये सभी रिटेल पेशेवरो को नियुक्त करते है।

लेखक- अमरीश कांत

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका आशा खबर सच का दम

100 साल पहले नौ जनवरी, 1915 को महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से लौटकर भारत आए थे। उनके आगमन के जश्न तमाम भारतीय प्रवासियों के सम्मान में हर साल नौ जनवरी को प्रवासी भारतीय दिवस मनाया जाता है।

प्रवासियों का सम्मान

महान प्रवासी भारतीय

- मोहनदास करमचंद गांधी बैरिस्टर के रुप में दक्षिण अफ्रीका गए थे। वहां 21 साल रहकर सत्याग्रह के प्रयोगों को सफलतापूर्वक आजमाने के बाद राजनीतिक कार्यकर्त्ता के रुप में लौटे।
- नौ जनवरी 1915 को सुबह साढ़े सात बजे एसएस अरेबिया से लंदन होते हुए मुबंई के अपोलो बंदर (गेटवे ऑफ इंडिया के निकट) पर उतरे। एक सप्ताह रुकने के बाद अहमदाबाद पहुंचे। इसीलिए इस बार का आयोजन गांधीनगर में मनाया जा रहा है।
- लेखक जोनाथन हाइलोप ने पुस्तक 'द कैब्रिज कंपेनियन टू गांधी मे लिखा है कि गांधी जी जब मुबंई पहुंचे तो उनका एक नायक के रुप में सम्मान किया गया। यहां के राष्ट्रवादी नेता उनके विचारों और नेतृत्व कौशल से बहुत प्रभावित दिखे और कई लोगो ने उनको देश के राजनीतिक भविष्य में अगुआ की भूमिका में देखा। तात्कालिक रुप से अंग्रेजो द्वारा उनको खतरे के रुप में नही देखा गया। इसीलिए मुंबई में उनके स्वागत् एवं सत्कार में कोई अड़चन नही आई ।

0.4 प्रतिशत

देश के कुल आबादी का हिस्सा प्रवासी है।

48.7 प्रतिशत

कुल भारतीय प्रवासियों में महिलाओं की हिस्सेदारी

2.5

करोड़-प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय (एमओआइए) के मुताबिक भारतीय प्रवासियों की कुल संख्या।

साल	रकम
2001-02	10.8
2002-03	17.2
2003-04	22.2
2004.05	21.1
2005-06	25.0

(अरब डॉलार)

2006-07	30.8
2007-08	43.5
2008-09	46.9
2007-10	53.9
2010- 11	55.9
2011-12	70.0

13 वां प्रवासी भारतीय दिवस

- इस बार सबसे ज्यादा 2500 प्रतिनिधि शिरकत कर रहे है।
- प्रवासी युवा भारतीयों को जोड़ने की मुहिम के तहत इस बार तीन सी कनेक्ट (जुड़ाव), सेलिब्रेशन (जश्न) और कंट्रीब्यूट (योगदान) का नारा दिया गया है।

प्रवासी भारतीय

दुनिया के लगभग हर मुल्क में प्रवासी भारतीय पाये जाते है जहां उन्होनें अपनी प्रतिभा-कौशल से न सिर्फ वहां अर्थव्यवस्था में अमूल्य योगदान दिया है अपितु अपने देश में धन का निवेश किया है। उनके आगमन के सम्मान में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल में 2003 से सात-नौ जनवरी को यह आयोजन किया जाता है और नौ जनवरी को प्रवासी भारतीय दिवस मनाया जाता है।

भारत मे मौके कर रहे इंतजार

प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन में पीएम ने कहा, आओं गांधी के सपनो का भारत बनाएं

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महात्मा गांधी के सपनों का भारत बनाने के लिए प्रवासी भारतीयों से इसके विकास मे और सक्रियता के साथ भागीदार बनने की अपील की। उन्होने कहा कि भारत में उनके लिए असीमित मौके इंतजार कर रहे है क्योंकि यह नई मजबूती के साथ उभरा है। महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने की 100 वीं साल गिरह पर यहां सवा लाख वर्गमीटर पर उनके जीवन पर दांडी कुटीर नाम से प्रदर्शनी भी लगाई गई है। इस मौके पर यहां 13 वे प्रवासी भारतीय दिवस समारोह का उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि आज से 100 साल पहले गरीब व ग्रामीण भारतीय की भावना को समझते हुए महात्मा गांधी अफ्रीका से भारत लौटे और अपना जीवन देश की आजादी और समाज की सेवा के लिए लगा दिया। आज पूरी दुनिया भारत को बहुत उम्मीद से देख रही है और अब जरुरत विश्वास और क्षमता दिखाने की है। उन्होने प्रवासी भारतीयों को देश के लिए बहुत बड़ी पूंजी बताया। साथ ही 200 से अधिक देशो में रह रहें 2.50 करोड़ से अधिक प्रवासी भारतीयों से देश को बदलने में मदद करने की अपील की। मोदी ने कहा कि भारत में दुनिया को वसुधैव कुटुंबकम का विचार दिया। भारतीय हमेशा से विश्व कल्याण की बात सोचते आए है। इसीलिए भारतीय दुनिया के किसी भी गली मुहल्ले मे बसने जाता है तो खुश हो जाते है कि चलो बचे जीवन को बेहतर ढंग से समझ पाएगें। उन्होने कहा कि भारतीयों के डीएनए में ही संस्कार है।

पीआइओं कार्ड वाले भारतीयों को आजीवन वीजा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पीआइओं कार्डधारक प्रवासी भारतीयों को आजीवन वीजा देने व भारत में आगमन वीजा देनी की घोषणा करते हुए कहा कि उन्हें खुद प्रवासियों के दुःख दर्द पता है। वीजा नही मिलने का एहसास भी वे जानते है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा प्रवासियों को वतन आने पर पुलिस थाने में हाजिरी लगानी पड़े यह उसके सम्मान और स्वाभिमान के खिलाफ है। सरकार ने अब उसे खत्म कर दिया है। उन्होने सत्ता मे आने के बाद मेडिसन स्क्वायर से सिडनी तक जो वादे किए उन्हें पूरा कर दिया है। केंद्रीय विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने सबका स्वागत करते हुए कहा कि महात्मा गांधी ने आधुनिक भारत की रचना की और भारतीयों को शोषण से मुक्ति दिलाई।

नमामि गंगे में भागीदारी की अपील

मोदी ने प्रवासी भारतीयों से देश को स्वच्छ बनाने और करोड़ो लोगो की आस्था के प्रतीक मां गंगा की सफाई के लिए 'नमामि गंगे' परियोजना में ज्ञान, धन, समय, और तकनीक के जरियें भागीदार बनने की अपील की है। उन्होने इस अवसर पर सौ व दस के सिक्के का लोकार्पण किया और कहा कि सिक्के अपने आप में इतिहास होते है। जो लोग इन्हें जमा करने का शौक रखते है उन्हे पता होता है कि ये अपने आप में एक इतिहास होते है।

लेखक- रजनीकांत

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका आशा खबर सच का दम

दिमाग का 'जीपीएस'

मस्तिष्क शरीर का सबसे जटिल हिस्सा माना जाता है और इसी दिमाग के 'जीपीएस सिस्टम' को खोजने के लिए इस बार का मेडिसिन का नोबेल पुरस्कार तीन वैज्ञानिक को मिला है।

इनमें से प्रोफेसर जॉन ओ कीफ ब्रितानी मूल के वैज्ञानिक है जबकि मे-ब्रिट मोजर और एडवर्ड मोजर नॉर्वे के है।

इन तीनो ने ये खोज की है कि हमारा दिमाग कैसे पता करता है कि हम कहाँ है और वह कैसे एक जगह से दूसरी जगह जाता है, इसलिए इसे दिमाग का 'जीपीएस सिस्टम' कहा जा रहा है।

तीनों वैज्ञानिको की ये रिसर्च हमें यह समझनें में मदद करेगी कि अल्जाइमर के मरीज क्यों अपने आस-पास के लोगो और चीजों को पहचान नही पाते।

नोबेल एसेम्बली का कहना है कि यह खोज हमारे लिए उस समस्या का समाधान लेकर आया है जिससे हमारे वैज्ञानिक और दार्शनिक सदियों से जूझते रहे है।

यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन के प्रोफेसर ओ कीफ ने साल 1971 में मस्तिष्क के भीतरी 'पोजिशनिंग सिस्टम' के पहले हिस्से का पता लगा लिया था।

इस खोज से ये जानकारी सामने आई थी कि जब भी कमरे के किसी हिस्से में चूहा उपस्थित होता है तंत्रिका कोशिकाएँ सक्रिय हो जाती है।

जबकि चूहे के कमरे के दूसरे हिस्से में होने से दिमाग की दूसरी कोशिकाएं सक्रिय हो उठती है।

ओ कीफ का तर्क है कि यही 'प्लेस' कोशिकाएं मस्तिष्क के भीतर एक मानचित्र तैयार करती है जो बताती है कि हम कहां है। साल 2005 में ब्रिट मोजर और एडवर्ड मोजर पति और पत्नी की टीम ने मस्तिष्क के एक अलग हिस्से का पता लगाया जो नाविको द्वारा चार्ट की तरह काम करता है।

मे-ब्रिट और एडवर्ड के अनुसार ये 'ग्रिड' कोशिकाएं अक्षांश और देशान्तर की रेखाओं को समझ सकती है। और इस तरह से मस्तिष्क को दूरी का आकलन करने और आवागमन में मदद करती है।

नोबेल कमिटी का कहना है कि ग्रिड और प्लेस कोशिकाएं मस्तिष्क का भीतरी 'जीपीएस' यानी महत्वपूर्ण पोजिशनिंग सिस्टम तैयार करती हैउन्होने आगे बताया कि अल्जाइमर, डिमेन्शिया जैसे मस्तिष्क रोगो सहित कई मस्तिष्क विकारों में यही पोजिशनिंग सिस्टम प्रभावित हो जाता है।

ग्लोबल पोजीशनिंग प्रणाली

ग्लोबल पॉजिशनिंग प्रणाली- एक वैश्विक नौवहन उपग्रह प्रणाली होती है। इसका विकास संयुक्त राज्य अमेरिका के रक्षा विभाग ने किया है। 27 अप्रैल 1994 से इस प्रणाली ने पूरी तरह से काम करना शुरु कर दिया था। वर्तमान समय में जीपीएस का प्रयोग बड़े पैमाने पर होने लगा है इस प्रणाली के प्रमुख प्रयोग नक्शा बनाने जमीन का सर्वेक्षण करने, वाणिज्यिक कार्य, वैज्ञानिक प्रयोग, सर्विलेंस और ट्रेकिंग करने तथा जियोकैचिंग के लिये भी होते है। पहले पहल उपग्रह नौवहन प्रणाली ट्रांजिट का प्रयोग अमेरिकी नौसेना ने 1960 में किया था। आरम्भिक चरण में जीपीएस प्रणाली का प्रयोग सेना के लिए किया जाता था लेकिन बाद में इसका प्रयोग नागरिक कार्यो में भी होने लगा।

जीपीएस रिसीवर अपनी स्थिति का आकलन पृथ्वी से ऊपर स्थित किये गए जीपीएस उपग्रहों के समूह द्वारा भेजे जाने वाले संकेतो के आधार पर करता है। प्रत्येक उपग्रह लगातार संदेश रुपी संकेत प्रसारित करता रहता है। रिसीवर प्रत्येक संदेश का ट्रांजिट समय भी दर्ज करता है और प्रत्येक उपग्रह से दूरी की गणना करता है। शोध और अध्ययन के उपरांत ज्ञात हुआ है कि रिसीवर बेहतर गणना के लिए चार उपग्रहों का प्रयोग करता है। इससे उपयोक्ता की त्रिआयामी स्थिति (अक्षांश, देशांतर रेखा और उन्नतांश) के बारे में पता चल जाता है। एक बार जीपीएस प्रणाली द्वारा स्थिति का ज्ञात होने के बाद जीपीएस उपकरण द्वारा दूसरी जानकारियों जैसे कि गति, ट्रेक, ट्रिप, दूरी, जगह से दूरी, वहां के सूर्यास्त और सूर्योदय के समय के बारे मे भी जानकारी एकत्र कर लेता है। वर्तमान में जीपीएस तीन प्रमुख क्षेत्रों से मिलकर बना हुआ है, स्पेस सेगमेंट, कंट्रोल सेगमेंट और यूजर सेगमेंट। भारत में भी इस प्रणाली के प्रयोग बढ़ते जा रहे है। दक्षिण रेलवे ग्लोबल पोजीशनिंग सिस्टम पर आधारित यात्री सूचना प्रणाली वाली ईएमयू आरंभ कर रहा है। ऐसी पहली ईएमयू (बी-26) ट्रेन ताम्बरम स्टेशन से चेन्नई बीच के मध्य चलेगी। इस ईएमयू मे अत्याधुनिक ग्लोबल पोजीशनिंग सिस्टम आधारित यात्री सूचना प्रणाली होगी जिसमें आने वाली ट्रेन का नाम, उस स्टेशन पर पहुंचने का अनुमानित समय, जनहित से जुड़े संदेश तथा यात्री सुरक्षा से संदेश प्रदर्शित किए जाएगें। प्रत्येक कोच में दो प्रदर्शक पटल है, जो विस्तृत दृश्य कोण प्रकार के है, व इनमें उच्च गुणवत्ता प्रकाश निकालने वाले डायोड है, जिससे कि कोच के अंदर कही भी बैठे या यात्री प्रसारित किए जा रहे संदेश को आसानी से पढ़ सकेगें। इसके अलावा टैक्सियों में खासकर रेडियों टैक्सी सेवा में इसका उपयोग बढ़ रहा। दिल्ली में दिल्ली परिवहन निगम की लो-फ्लोर बसों के नए बेड़े जुड़ें है इनकी ट्रैकिंग हेतु यहां भी जीपीएस सुविधा का प्रयोग आरंभ हो रहा है।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन अहमदाबाद के अंतरिक्ष अनुप्रयोग प्रयोग शाला ने डिस्ट्रेस अलार्म ट्रांसमीटर (डीएटी) नाम का एक छोटा यंत्र विकसित किया है। यह यंत्र ग्लोबल पोजीशनिंग सिस्टम पर आधारित चेतावनी प्रणाली है और बैटरी-चालित इस यंत्र का यूनिक आईडी नंबर होता है जो चौबीस घंटे हर पांच मिनट के अंतराल पर चेतावनी भेजता रहता है। इसके द्वारा बचाव दल कंम्प्यूटर स्क्रीन पर समुद्र में नाव की स्थिति को जान सकते है। इसे तटरक्षाकों द्वारा तटीय क्षेत्रों में प्रयोग किया जा रहा है।

लेखक- दीपक कुमार सिंह

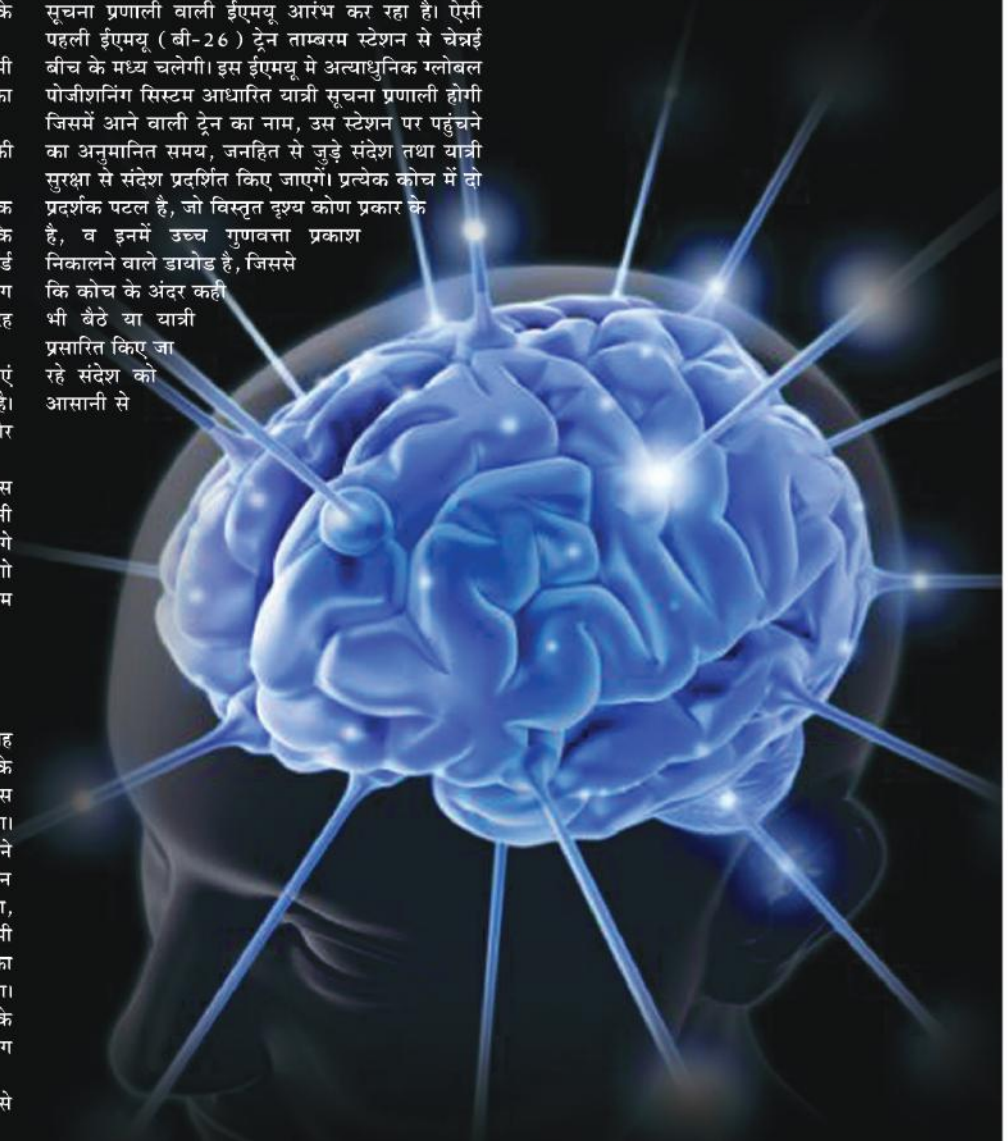

फरवरी घटनाक्रम

- नई दिल्ली में दूसरा अंकटाड सम्मेलन प्रारम्भ 1 फरवरी 1968.
- 1 फरवरी समाचार एजेंसियों का विलय करके भारत की एकीकृत एजेंसी समाचार का गठन 1976.
- 1 फरवरी पोप जॉन पॉल दूसरा का 10 दिन की भारत यात्रा पर दिल्ली आगमन 1986.
- 1फरवरी मातृत्व लाभ (संशोधन अधिनियम लागू) 1996.
- 2 फरवरी खेल प्रसारण अध्यादेश जारी 2 - 3 फरवरी 2007.
- 3 फरवरी 1988 भारतीय नौसेना में आई एन एस चक्र पनडुब्बी सम्मिलित
- 3 फरवरी 2001 सर्वदलीय बैठक में राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन समिति का गठन करने का निर्णय
- 3 फरवरी 2004 वित्त मंत्री जसवंत सिंह द्वारा वित्त वर्ष 2004-05 का अंतरिम बजट संसद में पेश।
- 4फरवरी 1990 केरल का एर्नाकुलम भारत में प्रथम पूर्ण साक्षर जिला घोषित।
- 4 फरवरी 1994 उड़ीसा के चांदी पुर समुद्र तट पर सतह से आसमान में मार करने वाले प्रक्षेपास्त्र आकाश का सफल परीक्षण
- 4 फरवरी 2004 केंद्र सरकार द्वारा पिछड़ा वर्ग (ओ.बी.सी) में क्रीमी •लेयर के लिये आयु सीमा 1 लाख से बढ़ाकर (2 लाख 50 हजार के राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के सुझाव को मंजूरी दी)।
- फरवरी 1999 योजना आयोग का पुर्नगठन कृष्ण चंद्र पंत आयोग के उपाध्यक्ष नियुक्त
- प्रसिद्ध ऊद्योगपति तथा टाइम्स ऑफ इंडिया समूह के प्रमुख अशोक।
- 5 फरवरी 2003 उपग्रह मैटसेट का नाम कल्पना एक की घोषणा की गई।
- 5 फरवरी 2007 बंगाल को फाइनल में हराकर मुंबई ने 37वीं बार क्रिकेट की रणजी ट्रॉफी जीती, कावेरी जल विवाद पर न्यायाधिकरण का फैसला।
- 6 फरवरी 1999 देश का पहला 'पेसमेकर' बैंक कलकत्ता में स्थापित।
- 6 फरवरी (2007) - 2006-07 में कृषिगत उत्पादन के दूसरे अग्रिम आकलन जारी।
- 7 फरवरी 1999 अनिल कुम्बले ने दिल्ली में पाकिस्तान के विरुद्ध एक पारी में सभी दस विकेट लेकर इतिहास रचा।
- 7 फरवरी 2007 में राष्ट्रीय आय सम्बंधी अग्रिम आकलन जारी।
- 8 फरवरी 1971 में कन्हैया लाल माणिक लाल, मुंशी का निधन।
- 8 फरवरी 2005 केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा पर्यावरण शिक्षा अनिवार्य विषय घोषित
- 9 फरवरी 2007 गुवाहाटी में 33 वे राष्ट्रीय खेलो का रंगारंग उद्घाटन।
- 10 फरवरी 1996 प्रधानमंत्री पी.वी नरसिंह राव द्वारा इन्सैट-2 सी देश को समर्पित।
- 10 फरवरी 2000 भारत बंग्लादेश के बीच ट्रेन सेवाओं प्रारम्भ करने का निर्णय। 11 सदस्यीय संविधान समीक्षा आयोग गठित, आगामी 25 वर्ष तक लोक सभा की सीटें न बढ़ाने का निर्णय।
- 10 फरवरी 2004 राष्ट्रीय कृषक आयोग का गठन।
- 11 फरवरी 1979 अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की सेल्यूलर जेल राष्ट्रीय स्मारक घोषित।
- 12 फरवरी 2002 आमिर खान की फिल्म लगान को 74 वे ऑस्कर पुरस्कारों में विदेशी भाषा में की सर्वश्रेष्ट फिल्म की श्रेणी में नामांकन मिला।
- 12 फरवरी 2005 सानिया मिर्जा हैदराबाद डब्ल्यूटीए खिताब जीतकर डब्ल्यूटीए खिताब जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनी।
- 12 फरवरी 2007 बगलिहार परियोजना के संबंध मे विश्व बैंक द्वारा नियुक्त स्वतंत्र विचारक का फैसला घोषित, प्रशासनिक सुधार आयोग की रिपोर्ट सरकार को प्रस्तुत।
- 12 फरवरी 2008 रुस के प्रधानमंत्री विक्टर जुवकोव भारत यात्रा पर आये।
- 14 फरवरी 1985 डा0 नगेन्द्र अन्तर्राष्ट्रीय न्यायलय के अध्यक्ष नियुक्त।
- 16 फरवरी 2004 बाल श्रम उन्मूलन की भारत अमेरिका परियोजना का नई दिल्ली में शुभारंभ।
- 16 फरवरी 2002 47 वें फिल्म पेज्यर पुरस्कार समारोह में लगाने को 8 तथा दिल चाहता है को 7 वर्गो में पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- भारतीय रेलवे का 150 वां वर्ष मनाने हेतु वर्ष 2002-03 यात्री सुविधायें घोषित।
- 16 फरवरी 1999 जय प्रकाश नारायण गोपीनाथ बार दोलोई (दोनो मरणोपरांत) अमर्त्य सेन तथा रविशंकर को भारत रत्न।
- 17 फरवरी 2003 भारत और पोलैण्ड के बीच प्रत्यपर्ण संधि पर हस्ताक्षर, सर्वोच्च न्यायलय के सेवा निवृत्त मुख्य न्यायधीश न्यायमूर्ति ए. एस. आनन्द द्वारा राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष के रुप में कार्यभार ग्रहण किया।
- 18 फरवरी 1998 गांधी नेता सी. सुब्रह्मण्यम भारत रत्न से सम्मानित। 12 वी लोकसभा में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनाकर उभरी और 18 दलों के साथ गठजोड़ किया।
- फरवरी 1999 भारत एवं बांग्लादेश के बीच बस सेवा हेतु समझौते पर हस्ताक्षर, सर्वोच्च न्यायलय द्वारा माँ को बच्चे का स्वाभाविक अभिभावक मानने सम्बंधी ऐतिहासिक निर्णय।
- 18 फरवरी 2007 गुवाहाटी में 33 वें राष्ट्रीय खेलो का समापन सेना ने जीती ओवर ऑल चैम्पियनशिप।
- 19 फरवरी 1994 सतह से सतह तक मार करने वाले प्रक्षेपास्त्र अग्नि का चांदीपुर में तीसरा सफल प्रक्षेपण।
- 19 फरवरी 1999 राष्ट्रीय विकास परिषद (एन.डी.सी) द्वारा नवी पंचवर्षीय योजना की स्वीकृत।
- 19 फरवरी 2005 भारत यमन में प्रत्यर्पण संधि हेतु सहमति।
- 20 फरवरी 1987 मिजोरम एवं अरुणांचल प्रदेश को राज्यो का दर्जा मिला।
- 20 फरवरी 1999 अमर्त्य सेन संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू.एन.डी.पी) के मानव विकास सलाहकार बने।
- भारत के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने दिल्ली-लाहौर बस सेवा का आरम्भ किया।
- 21 फरवरी 1990 ख्याति प्राप्त कथाकार अमृत लाल नागर का निधन।
- 21 फरवरी 2004 के 49 वे फिल्म फेयर पुरस्कारों की घोषणा।
- 21 फरवरी 1991 प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री नूतन का मुंबई में निधन ।
- 22 फरवरी 2004 गाजियाबाद के दादरी में रिलायंत इंडस्ट्रीज के 3500 मेगावाट् के गैस आधारित संयंत्र का शिलायांस किया।
- 23 फरवरी 2004 कर्नाटक विधान सभा भंग। श्री हरिकोटा स्थित अंतरिक्ष केंद्र में भीषण विस्फोट।
- 24 फरवरी 2000 कारगिल कांड की जांच हेतु गठित सुब्रहाण्यम समिति की रिपोर्ट में घुसपैठ की जानकारी न देने के लिये 'रा' दोषी करार।
- 24 फरवरी 2005 प्रथम राष्ट्रीय निर्मल ग्राम पुरस्कार वितरित।
- 25 फरवरी 1977 देहरादून में दूसरें भू-उपग्रह संचार केंद्र का उद्घाटन।
- 25 फरवरी 1983 भारत और सोवियत संघ द्वारा अंतरिक्ष शोध हेतु परस्पर सहयोग का समझौता।
- 26 फरवरी 1984 प्रधानमंत्री श्री मती इंदिरा गांधी द्वारा 'इन्सैट-1' मेगावाट का कलपक्कम एटमी रिएक्टर शुरु।
- 26 फरवरी 2000 प्रधानमंत्री द्वारा पूरे देश में प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य करने की घोषणा।
- 26 फरवरी 2007-08 का रेल बजट संसद मे प्रस्तुत।
- 26 फरवरी 2008 भारत द्वारा सबमरिन लांच बैलिस्टक मिसाइल (एसएलबीएम) का समुद्र के भीतर से पहला परीक्षण सफल वर्ष 2008-09 का रेलवे बजट संसद में प्रस्तुत किया गया।
- 27 फरवरी 1997 देश में पहला 'बेचमार्किंग केंद्र स्थापित।
- 27 फरवरी 2002 मुजफ्फरपुर से अहमदाबाद के मध्य चलने वाली 'सबरमती एक्सप्रेस' पर गुजरात के गोधरा रेल स्टेशन पर असामाजिक तत्वो पर हमला आगजनी में 55 मरें।
- फरवरी 2004 नई दिल्ली में एक सप्ताह का विश्व बांस सम्मेलन आरम्भ।
- 27 फरवरी 2006-07 की आर्थिक समीक्षा संसद में प्रस्तुत।
- फरवरी 2001 वित्तमंत्री यशवन्त सिन्हा द्वारा वित्तीय वर्ष 2001-02 का आम बजट लोकसभा मे प्रस्तुत रुड़की इंजीनियरिंग कॉलेज को आई.आई. टी. का दर्जा देने की घोषणा ।
- 28 फरवरी 2007-08 का केन्द्रीय बजट संसद में प्रस्तुत किया गया है।
- 29 फरवरी वर्ष 2008-09 का आम बजट संसद मे प्रस्तुत।
- 29 फरवरी 2004 14वीं लोक सभा के चुनाव कार्यक्रम की चुनाव आयोग द्वारा घोषणा।
- 29 फरवरी 2000 केंद्रीय वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा द्वारा वर्ष 2000-01 के बजट में 8,332 करोड़ के नयें कर रक्षा बजट मे 13 हजार करोड़ रुपये की वृद्धि देश की प्रथम किन्नर विधायक शबनम मौसी ने मध्य प्रदेश विधान सभा में शपथ ली।

संकलन- विपुल श्रीवास्तव

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका आशा खबर सच का दम

विश्व कप 1975

पहला विश्व कप 1975 में इंग्लैंड में आयोजित किया गया था। जिसे प्रूडेंशियल कप के नाम से जाना गया है। इस टूर्नामेंट में कुल 8 टीमों ने भाग लिया था। इन 8 टीमों में श्रीलंका और ईस्ट अफ्रीका की टीम भी शामिल थी। जिन्हें टेस्ट का दर्ज प्राप्त नहीं था।

पहला सेमीफाइनल

इग्लैंड बनाम आस्ट्रेलिया

इंग्लैंडः 93 रन, सभी आउट (36.2ओवर)

परिणाम- आस्ट्रेलिया 4 विकेट से विजयी

मैन ऑफ द मैच- जीजे गिलमॉर (आस्ट्रैलिया)

दूसरा सेमीफाइनल

वेस्टइंडीज बनाम न्यूजीलैंड

न्यूजीलैंडः 158, सभी आउट (52.2 ओवर)

वेस्टइंडीज पांच विकेट से विजयी

मैन ऑफ द मैचः कालीचरण (वेस्टइंडीज)

फाइनल

वेस्टइंडीज बनाम ऑस्ट्रेलिया

वेस्टइंडीजः 291-8 (60ओवर)

ऑस्ट्रेलियाः 274/10 (58.4)

वेस्टइंडीज 17 रनों से विजयी

मैन ऑफ द मैचः क्लायव लॉयड (वेस्टइंडीज)

हमारा प्रदर्शन

पहले विश्व कप का पहला मैच भारत और इंग्लैंड के बीच लॉर्डस के मैदान पर खेला गया। इसकी पहली गेंद मदन लाल ने फेंकी थी यी क्रिकेट इतिहास का 19 वां अंतराष्ट्रीय वन डे मैच था 60 ओवर के इस मैच में इंग्लैंड 202 रनों से भारी-भरकम अंतर से जीता। यह वह मैच है जिसमें गवास्कर ने पूरे 60 ओवर बल्लेबाजी करते हुए नाबाद 36 रन बनाए थे।

दूसरा मैच

भारत ने ईस्ट अफ्रीका को दस विकेट से हराया । अफ्रीकी टीम को 120 रनों पर समेट दिया। मदन लाल ने सर्वाधिक तीन विकेट लिए। इसके बाद गवास्कर (नाबाद 65) और मैन ऑफ द मैच फारूक इंजीनियर (नाबाद 54) ने टीम को विजय लक्ष्य तक पहुंचा दिया।

तीसरा मैच

भारत को न्यूजीलैंड ने चार विकेट से हराकर अभियान समाप्त कर दिया। भारत ने 230 रन बनाए। आबिद ने सर्वाधिक 70 रन जोडे। लेकिन टर्नर ने नाबाद 114 की बदौलत कीवीज को जीत दिला दी।

सर्वाधिक विकेट लेने वाले शीर्ष तीन गेंदबाज

खिलाड़ी	देश	मैच	विकेट	बेस्ट	ओसत
जीजे गिलमॉर	ऑस्ट्रेलिया	2	11	6-14	5.63
बीजी जूलिएन	वेस्टइंडीज	5	10	4-20	17.70
केडी बॉयस	वेस्टइंडीज	5	10	4-50	18.50

शीर्ष तीन बल्लेबाज

खिलाड़ी	देश	मैच	रन	उच्चतम	औसत
जीएन टर्नर	न्यूजीलैंड	4	333	171*	166.50
डीएल एमिस	इंग्लैंड	4	243	137	60.75
माजिद खान	पाक	3	209	84	75.45

विश्व कप 2015

14 फरवरी से शुरु होने जा रहे 11वें आइसीसी क्रिकेट विश्व कप की उल्टी गिनती शुरु हो गई है। दुनिया भर के क्रिकेट प्रेमी इसका बेसब्री से इंतजार कर रहे है। आज से 30 दिन बाद अगले 43 दिनों तक दुनिया 22 गज की होगी

खिताब बचाने की चुनौती

क्रिकेट के जनक इंग्लैड में पहला विश्व कप 1975 में खेला गया था और वेस्टइंडीज ने पहला चैंपियन बनने का गौरव हासिल किया था। कैरोबियाई टीम का वर्चस्व चार साल बाद फिर हुए विश्व कप मे भी बना रहा। इसे 1983 में तोड़ा कपिल देव की अगुआई वाली भारतीय टीम ने। इस टीम में सुनील गावस्कर, मदन लाल, कृष्णमचारी श्रीकांत और मोहिंदर अमरनाथ जैसे खिलाड़ी शामिल थे। यह विश्व क्रिकेट का टर्निंग प्वांइट था। जब अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट एशिया की ओर रुख करने को बेताब था और भारत इसका गढ़ बनने जा रहा था। यह वह दौर था जब भारत में वर्षो से एक छत्र राज करती आ रही हॉकी को क्रिकेट ने किनारे कर दिया। 1983 के बाद के परिदृश्य को देखे तो भारत अब विश्व क्रिकेट का बिग-बॉस बन गया है। क्रिकेट का जितना बड़ा बाजार यहां है उतना विश्व में कही नही है। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआइ) दुनिया का सबसे अमीर बोर्ड है और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आइसीसी) तक उसकी तूती बोलती है। यहां क्रिकेट धर्म है और क्रिकेटर देवतुल्य जो अरबो-खरबो में खेलते है। 28 साल बाद (2011 में) अपनी कप्तानी में भारत को फिर से विश्व विजेता बनाकर एक नया अध्याय लिखने वाले महेंद्र सिंह धोनी की युवा ब्रिगेड के सामने इस बार खिताब बरकरार रखने की सबसे बड़ी चुनौती है।

आइसीसी वनडे रैंकिंग

रैंक	टीम	रेटिंग
1	ऑस्ट्रेलिया	117
2	भारत	117
3	दक्षिण अफ्रीका	112
4	श्रीलंका	109
5	इग्लैंड	104
6	न्यूजीलैंड	99
7	पाकिस्तान	97
8	वेस्टइंडीज	96
9	बांग्लादेश	75

अब तक के विजेता

साल	मैदान	चैंपियन	कप्तान
1975	लॉड्स	वेस्टइंडीज	क्लाइव लॉयड
1979	लॉड्स	वेस्टइंडीज	क्लाइव लॉयड
1983	लॉड्स	भारत	कपिल देव
1987	ईडनगॉर्डन	ऑस्ट्रेलिया	एलन बॉर्डर
1992	मेलबर्न	पाकिस्तान	इमरान खान
1996	गदाफी	श्रीलंका	अर्जुन रणतुंगा
1999	लॉडस	ऑस्ट्रेलिया	स्टीव वॉ

पूल 'ए'

इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया श्रीलंका बांग्लादेश न्यूजीलैंड अफगानिस्तान स्कॉटलैंड

पूल 'बी'

दक्षिण अफ्रीका भारत पाकिस्तान वेस्टइंडीज, जिंबाब्वे आयरलैंड यूएई.

2003
ऑस्ट्रेलिया
कप्तान
रिकी पोंटिंग

2007
ऑस्ट्रेलिया
कप्तान
रिकी पोंटिंग

2011
भारत
कप्तान
महेंद्र सिंह धोनी

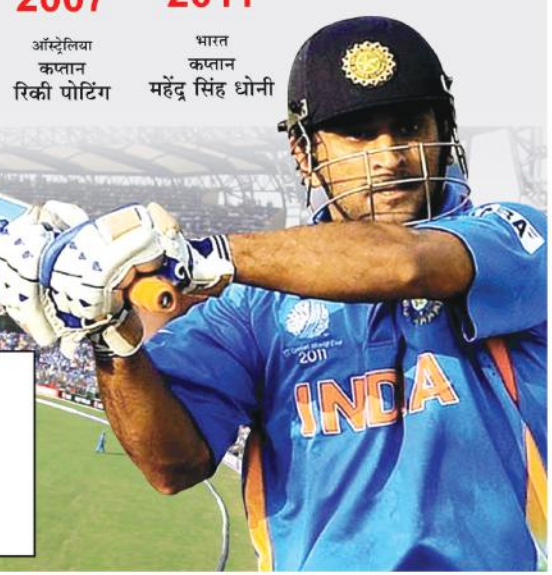

मैदान

मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड
मानुका ओवल, कैनबरा
सिडनी क्रिकेट ग्राउंड, सिडनी
ब्रिस्बेन क्रिकेट ग्राउंड, ब्रिस्बेन
साक्सटोन ओवल, नेलसोन
ईडन पार्क, ऑकलैंड
वाका ग्राउंड, पर्थ
एडिलेड ओवल, एडिलेड
सेडोन पार्क, हेमिल्टन
मैक्लीन पार्क, नैपियर
यूनिवर्सिटी ओवल, डुनेडिन
बेलेरिव ओवल, होबर्ट
हग्ले ओवल, क्राइस्टचर्च
वेस्टपैक स्टेडियम, वेलिंगटन

रिवीजन का काउण्ट-डाउन

दोस्तो, बोर्ड और ईयरली एग्जाम का काउण्ट-डाउन शुरु हो गया है। अब समय नए सिरे से बिल्कुल नया पढ़ने का नही, बल्कि रिवीजन और अपनी तैयारी को परखने का है। आज के टेक्नोएज में इसके लिए कई टूल्स भी मौजूद है। आइए जानते है इन सबकी मदद से कूल रहकर खुद को कैसे करे जोरदार परफॉर्मेंस के लिए तैयार.....

बोर्ड और एनुअल एग्जाम शुरु होने में अब बस कुछ सप्ताह ही बाकी रह गए है। रेगुलर पढ़ाई से आपने काफी हद तक खुद को इसके लिए तैयार कर लिया होगा, लेकिन क्या आपने ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर जाकर अपनी तैयारी को चेक किया है? अगर नही तो कोर्स का रिवीजन करने के साथ-साथ अपनी तैयारी को भी समय रहते जरुर चेक करे लें। तैयारी को परखने के लिए मॉक टेस्ट एक बेहतर जरिया होता है। ऐसी कई वेबसाइट्स है, जो न सिर्फ ऑनलाइन मॉक टेस्ट की सुविधा देती है, बल्कि वहां जाकर आप पुराने क्वैश्चन पेपर, गेस पेपर, प्रैक्टिस टेस्ट पेपर आदि के जरिये अपनी तैयारी को और स्ट्रॉन्ग कर सकते है।

जरुरी है मॉक टेस्ट

अगर आप बोर्ड या फिर एनुअल एग्जाम की तैयारी कर रहे है तो मॉक टेस्ट के लिए यह बेस्ट टाइम की शुरुआत करते है तो एग्जाम तक न सिर्फ तैयारी बेहतर हो जाएगी, बल्कि एग्जाम हॉल में निश्चित रुप से शानदार होगा। आप अपने स्ट्रेस लेवल को मैनेज करने के साथ-साथ टाइम मैनेजमेंट भी बेहतर तरीके से कर पाएगें।

अगर आप ऑनलाइन टेस्ट में हिस्सा लेने के लिए इस वेबसाइट्स की मदद ले सकते है। यहां सीबीएसई क्लास 3 से क्लास 12 तक के स्टूडेंट्स मॉक टेस्ट मे हिस्सा ले सकते है। क्लास 10 के लिए यहां पर मैथमेटिक्स और साइंस सब्जेक्ट्स से जुड़े मॉक टेस्ट का ऑप्शन दिया गया है। टेस्ट के दौरान 15 ऑब्जेक्टिव टाइप क्वैश्चंस को सॉल्व करने के लिए 30 मिनट का टाइम मिलेगा। टेस्ट कंप्लीट करने के बाद आप जान पाएंगे कि कितने क्वैश्चंस का आपने सही जवाब दिया है। इसके अलावा इस साइट से ओटीबीए मैटीरियल (ओपेन टेक्स्ट बेस्ड असेसमेंट) सैंपल पेपर आदि को फ्री में डाउनलोड कर सकते है।सीबीएसई बोर्ड और 12वी के एग्जाम की तैयारी के लिए आपको इस साइट पर यूजफूल मैटीरियल मिल जाएगा। यहां क्लास 10 और 12 के स्टूडेंट्स के लिए मॉक टेस्ट की सुविधा दी गई है। इससे आपको अपनी तैयारी को परखने का मौका मिल जाएगा। इसके अलावा यहां सीबीएसई एग्जाम्स से जुड़े टिप्स ऐड स्ट्रेटेजी सैंपल पेपर, क्वैश्चंस पेपर गेस पेपर आदि दिए गए है।

लार्न नेक्स्ट डॉट कॉम

अपनी तैयारी को टेस्ट करने के लिए यह यूजफूल साइट है। यहां सीबीएसई, आईसीएसई के अलावा दूसरे स्टेट लेवल बोर्ड के अलग-अलग सब्जेक्ट्स से जुड़े वीडियो लेसन भी दिए गए है। अगर आपको किसी सब्जेक्ट में कुछ परेशानी है तो वीडियों लेसन की मदद ले सकते है। इसके अलावा यहां ऑनलाइन टेस्ट की सुविधा भी दी गई है। इस टेस्ट में छठी से लेकर 10वीं क्लास तक के स्टूडेंट्स तक के हिस्सा ले सकते है। ऑनलाइन टेस्ट के दौरान 30 मिनट में 20 क्वैश्चंस सॉल्व करने होते है। इसके अलावा यहां प्रैक्टिस पेपर्स भी दिए गए हे। आप चाहे तो लर्ननेक्स्ट का ऐप गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड कर सकते है।

एग्जाम रेस डॉट कॉम

सीबीएसई बोर्ड एग्जाम से जुड़े स्टडी मैटेरियल की जरुरत है तो आप इस साइट पर विजिट कर सकते है। यहां पर आपको बायोलाजी, केमिस्ट्री, इकोनामिक्स, इंग्लिश, जियोग्राफी, हिस्ट्री, मैथमैटिक्स, फिजिक्स आदि सब्जेक्ट से रिलेटेड स्टडी मैटेरियल मिल जाएगा।

चेक योर परफॉर्मेंस

आपकी तैयारी कैसी है, अगर आप चेक करना चाहते है तो टीसी ऑनलाइन डॉट कॉम पर परफॉर्मेंस एनालिटिक्स दिया गया है, जिसकी मदद से आप जान सकते है कि किस सब्जेक्ट में आपका कौन सा एरिया स्ट्रॉन्ग और वीक है, किस एरिया में आप ज्यादा फास्ट और स्लो है।

इसके अलावा यहां 10वीं क्लास तक के अलग-2 सब्जेक्ट्स से जुड़े वीडियो ट्यूटोरियल्स और टेस्ट्स भी दिए गए है। टेस्ट्स को एक्सेस करने के लिए आपको पहले लॉग-इन करना होगा।

उड़ान का उठाएं फायदा

सीबीएसई ने उड़ान योजना की शुरुआत 11वीं और 12वीं में पढ़ने वाली ऐसी गर्ल्स स्टूडेंट के लिए की है जो आगे चलकर इंजीनियरिंग एंट्रेस देना चाहती है। हालांकि

cbse.nic.in/udanwebcast.htm

का फायदा सभी स्टूडेंट्स को मिल सकता है। यहां क्लास 11वीं और 12वीं के स्टूडेंट्स के लिए अलग-2 सब्जेक्टस से जुड़े कई सारे वीडियोज दिए गए हैं, जिसका फायदा 12वी एग्जाम की तैयारी करने वाले स्टूडेंट्स का इसका फायदा मिल सकता है।

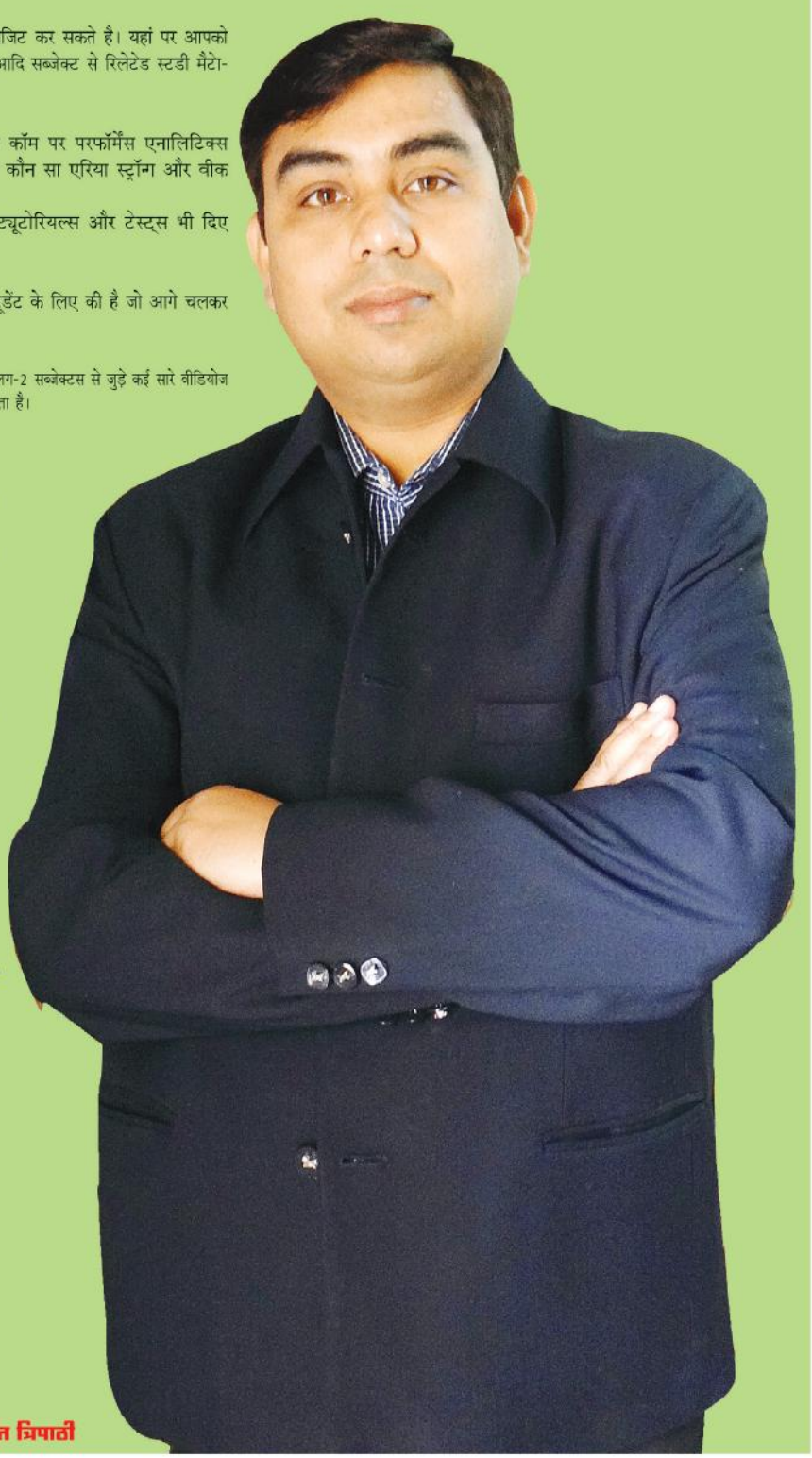

बोर्ड पेपर बच्चो की लाइफ का एक अहम हिस्सा होता है, जिसे लेकर बच्चे बहुत डरे से रहते है और माइन्ड पर प्रेशर ले लेते है, और उनके माता-पिता भी काफी चिन्तित रहते है। लेकिन अब परेशान होने की जरुरत नही है क्योंकि आप कूल माइन्ड से तैयारी कर सकते है। इसके लिये बहुत बेहतरीन तरीका है मॉक टेस्ट तैयारी को परखने के लिये मॉक टेस्ट एक बेहतर जरिया होता है। ऐसी कई वेबसाइट्स है जहाँ पर जा करके बच्चे आसानी से क्वैश्चन पेपर, ग्रेस पेपर, प्रैक्टिस टेस्ट आदि के जरिये अपनी तैयारी को मजबूत बना सकते है। तो बच्चो अब डरने की क्या बात है जब आपके पास ऑनलाइन वेबसाइट हमारे साथ है। इससे आपको अपनी तैयारी को परखने का मौका मिल जायेगा इसके अलावा यहॉ पर सीबीएसई एग्जाम से जुड़े टिप्स एड स्ट्रेटेजी सैंपल पेपर, क्वैश्चन पेपर आदि की जानकारी आप आसानी से प्राप्त कर सकते है।

लेखक- इंजी. अमित त्रिपाठी

Er. Amit Tirpathi (Chemistry Expert)
Director
Sai Study Center
Civil lines. Allahabad
Mob.9305124332

भारतीय सेना

"शहीदों की चिताओं पर लगेगें हर बरस मेले, वतन पर मिटने वालों का सदा बाकी निशां होगा"।

ये लाइने देश पर शहीद होने वाले क्रांतिकारियों के लिए लिखी गयी है। ये जुनून हमें देश सेवा के लिए प्रेरित करता है। तब उस समय जब हमें आजादी नही मिली, तब सुभाष चन्द्र बोस ने 'आजाद हिन्द फौज' की स्थापना की। यही से भारतीय सेना की नीवं पड़ी।

अब जब बात देश सेवा की आती है तो, इसमे भी रास्ते आग है, कोई डाक्टर, कोई वकील, कोई नेता, कोई समाज सेवी बनकर देश की सेवा करना चाहता है। पर जब बात देश की सुरक्षा की आती है, तो वहां सेना की भूमिका बढ़ जाती है और सेना बनती है देश पर मर मिटने का जज्बा लिए नौजवानो से पूरे विश्व में एक अकेला हमारा भारत देश ही है जहां सबसे ज्यादा युवा शक्ति है। और देश की सुरक्षा तभी हो सकेगी तब ये युवा देश के लिए कुछ करने को मन में ठान ले। हम डाक्टर, वकील, जन सेवक आदि बनकर देश की सेवा करते है पर इनकी सेवा सुरक्षा का जिम्मा हमारे फौजी करते है। वो सीमाओं पर जागते है तो ही हम चैन की नीदं सोते है वो लेह, लद्दाख जैसे बर्फीले जगहों पर तैनात रहकर सीमा की सुरक्षा करते है और हम यहां गर्म रजाइयों का मजा लेते है। फौज न होती तो हम सोच सकते है कि क्या होता।वर्तमान समय में युवा अपना भविष्य आईटी उद्योग, सरकारी उद्योग, साफ्टवेयर,फिल्ड, विदेश जाने के बारे मे सोचते है। सेना में जाने से वे कतराते है। क्यों ? अलग-2 कारण हो सकते है। जैसे कि-

ही क्यों?

बहुत ही कठिनाई पूर्ण जीवन

मौत का डर

घर वालो से दूर रहना पड़ेगा

पैसे कम मिलेगें

किसी प्रकार की सेवा नही मिलेगी

अगर यही सोच वीर अब्दुल हमीद ने रखी होती तो वो आज अमर नही होता और कारगिल की लड़ाई हम कभी नही जीतते। आज हम यहां बैठे ही नही होते।

मेहनत कहां नही है? अपना भविष्य बनाने के लिए मेहनत तो करनी ही है। बात रॉयल लाइफ, पैसे आदि की बात करे तो बता दूं कि डिफेन्स में 5-6 फिगर सैलरी और बोनस आदि मिलते है। इसके साथ ही अच्छी अनुशासन कैंपस फैसीलिटी आदि मिलती है। लक्जरी गाड़िया, कपड़े मिलते है। अच्छा खाना और समय पर मिलता है। कैंटीन की सुविधा जहां हर जगह से आधे दाम पर सब्सिडी के अलावा बहुत सारी अन्य सुविधाये प्राप्त होती है। फ्री चिकित्सा, अच्छी सुविधा के साथ कमरे, वाई-फाई समाचार, फ्री में घूमना और पिक्चर, डिस्को और पैंट्स की आदि सुविधा मिलती है।

कहने का मतलब अगर बिदांस, जिदांदिली और मस्ती के साथ जीना है तो डिफेन्स ग्रहण करें। हम युवा है। आज के गर्मखून के नौजवान आपकी माँ और बहनो को गंदी नजर से कोई देखे तो क्या चुप रहेगें नही ना तो भारत मां की रक्षा करने में संकोच कैसा निकालो डर को मन से विश्वास करो खुद पर, इच्छा बढ़ाओं, कदम बढ़ाओं और छू लो आंसमा को, कर लो मुठ्ठी में संमुद्रो को मतलब थल सेना ही नही, वायु सेना, जल सेना तीनो ही क्षेत्रो से भारत माँ की सुरक्षा करने का प्रण ले।

आखिरी बात ये कहना चाहूंगा कि मौत तो सबको आनी है। कोई गाड़ी के नीचे, कोई बीमारी से कोई एड्स से तो कोई कैसे-2 अगर तुम मां की सुरक्षा करते हुए एक शेर की तरह सीने पे गोली खाकर शहीद हुए तो अमर कहलाओगे। दुनिया याद रखेगी और युवाओं को सेना में जाने के लिए प्रेरित करेगें।

''उठो नौजवानों, शपथ लो कदम बढ़ाओं और एक देशभक्त बनो''

लेखव- विंग कमाण्डर अनूप मल्होत्रा

"A Military Point"
TRISHUL DEFENCE ACADEMY
SSB INTERVIEWS NDA CDS ICG A.F. - X/Y NAVY-AA/SSR
Our Branches - ALLAHABAD LUCKNOW BAREILLY
NDA Foundation
Join After CLASS
9th, 10th, 11th & 12th
CBSE UP BOARD ISC
CALL FOR ENQUIRY : 8400083030

भारत की सिलिकॉन वैली बेंगलुरु

जब भी आईटी, तकनीक और रोजगार की बात होती है, तो सबकी नजर बेंगलुरु पर होती है। आज यह शहर आईटी, साइंस, स्पेस से लेकर बैंकिंग, वित्त के साथ लगभग सभी क्षेत्रों में तेजी से विकास कर रहा है। लाखो लोगो को रोजगार देने वाले इस जीवंत शहर शिक्षा, शिक्षण संस्थान, रोजगार और इंफ्रास्ट्रक्चर पर एक रिपोर्ट.....

दुनिया के सबसे शक्तिशाली देश के राष्ट्रपति बराक ओबामा बेंगलुरु की आईटी इंडस्ट्री और आईटी प्रोफेशनल्स की काबिलियत और दक्षता का लोहा ही नही मानते, बल्कि अमेरिकी युवाओं को बार-बार सचेत भी करते रहते है और अमेरिकी स्कूलों को हिदायत भी देते है कि वे अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगी मानक विकसित करें ताकि उनके विद्यार्थी बेंगलुरु के लोगो से सीधी टक्कर ले सकें। इसकी वजह यूं ही नही है। आज बेंगलुरु की सॉफ्टवेयर, बीपीओं, एविएशन, स्पेस, साइंस और बॉयोटेक्नोलॉजी इंडस्ट्री की दुनियाभर में धाक है और ये देश में ही नही, बल्कि विदेशों में लाखों लोगो को रोजगार दे रही है। बेंगलुरु में करीब 1,500 सॉफ्टवेयर और 90 हार्डवेयर कम्पनियॉ पंजीकृत है, जो भारत की 28 लाख आईटी वर्क फोर्स में से 30 फीसदी प्रोफेशनल्स को रोजगार देने में सक्षम है। और इस बात का पूरा श्रेय यहां के बेहतरीन इंफ्रास्ट्रक्चर, उच्च राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के अलावा उच्च और बुनियादी शिक्षा को जाता है। यह शहर आज के दौर में भारत के अन्य अग्रणी शहरों की तुलना में कॅरियर संभावनाओं और रोजगार देने में सबसे आगे है। बेंगलुरु तेजी से हर क्षेत्र में विकास कर रहा है। जहां एक तरफ यह शहर आईटी उद्योग में भारत का सिलिकॉन वैली है, तो वही दूसरी तरफ एयरोस्पेस, एविएशन इंडस्ट्री, बायोटेक्नोलॉजी का हब भी है।

इतिहास- वर्ष 1015 में तमिलनाडु के चोल शासन से लेकर होयसल राजवंश, मराठा, हैदर अली, टीपू सुल्तान और अंग्रेजों के शासनकाल तक बेंगलुरु शहर का लंबा इतिहास रहा है। और इसी कारण इस शहर ने कई बदलाव देखे। इतिहासकारों के अनुसार उन्नीसवीं सदी में बेंगलुरु एक द्विनगर (द्विन सिटी) के नाम से जाना जाता था, तब यह पेट और छावनी नाम के क्षेत्रों में बंटा था। पेट में मुख्यतः कन्नड़वासी रहते थे, वही छावनी के निवासियों में तमिल प्रवासियों की बहुतायत थी। इस शहर के इतिहास में झांके तो पुराणो में इस स्थान को कल्याणपुरी या कल्याण नगर के नाम से जाना जाता था। अंग्रेजों के आगमन के पश्चात इस शहर को बेंगलुरु नाम मिला और अब इसे बेंगलुरु के नाम से जानते है। बेगुर के पास मिले एक शिलालेख से ऐसा प्रतीत होता है कि यह जिला 1004 ई. तक गंग राजवंश का एक भाग था। इसे बेगा-वलोरु के नाम से जाना जाता था, जिसका अर्थ प्राचीन कन्नड़ में रखवालों का नगर होता हे।

जीवनशैली और खानपान- एक 'मेट्रोपॉलिटन सिटी' के लिए जो कुछ जरुरी चीजें होनी चाहिए, वे सब कुछ यहां है। बड़े-बड़े और आकर्षक मॉल, ढेरो स्पॉ सेंटर, रिजॉर्ट और

बेंगलुरु में करीब 1,500 सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर कंपनियां पंजीकृत है, जो भारत की 28 लाख की आईटी वर्क फोर्स में से 30 फीसदी प्रोफेशनल्स को रोजगार देने में सक्षम है और इस बात का पूरा श्रेय यहां के बेहतरीन इंफ्रास्ट्रक्चर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों के अलावा उच्च और बुनियादी शिक्षा को जाता है।

पब शहर को आधुनिक पहचान देते है। इसी वजह से बेगंलुरु को भारत की पब राजधानी भी कहते है। इतना ही नही अंतर्राष्ट्रीय रॉक कंसर्ट के लिए यह शहर सबसे पंसदीदा जगह है। यहां पर कन्नड़ सबसे अधिक बोली जाती है लेकिन तमिल, तेलुगु और हिंदी का वर्चस्व है, इसकी वजह यह है कि एक अनुमान के अनुसार बेंगलुरु में 51 प्रतिशत से ज्यादा लोग भारत के विभिन्न हिस्सो से आकर बसे है। सुहाने मौसम और उद्यान होने के कारण इसे भारत का उद्यान नगर भी कहते है। व्यंजनो की विविधता से भरपूर इस नगर में उत्तर भारतीय, दक्कनी, चीनी तथा पश्चिमी खाने काफी लोकप्रिय है।

कहां रहें - बेंगलुरु में छात्र-छात्राओं के रहने की सुविधा अन्य शहरों की तरह है। आप यहां पेइंगगेस्ट, निजी छात्रावास, शेयरिंग फ्लैट्स का विकल्प चुन सकते है। सबसे अच्छा होगा कि जिस कॉलेज/संस्थान में आप एडमिशन ले रहे है पहले वहां के छात्रावास (यदि है तो) को प्राथमिकता दे, नही तो अध्ययनरत छात्रो से सलाह/अनुभव लेकर निर्णय ले सकते है।

कॅरियर के अवसर - शहर के पीन्या उद्योग क्षेत्र में कई लघु और मझोले स्तर का विनिर्माण उद्योग है। सैकड़ो राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीयस आईटी कंपनियों के कार्यालय यहां होने के कारण इसे सिलिकॉन वैली भी कहा जाता है जिसमें इफोसिस और विप्रो जैसी कंपनिया शामिल है। गौरतलब है कि यह शहर भारत के कुल आईटी निर्यात का एक-तिहाई योगदान देती है। बेंगलुरु आईटी इंडस्ट्री मुख्यतः दो भागो में विभाजित है पहला इलेक्ट्रानिक्स सिटी में सॉफ्टवेयर टेक नोलॉजी पार्क ऑफ इंडिया (एसटीपीआई) और दूसरा भाग-व्हाइटफील्ड में इंटरनेशनल टेक्नोलॉजी पार्क लिमिटेड (आईटीसीएल) कर्नाटक में करीब 2,200 साफ्टवेयर और 70 हार्डवेयर कंपनियां पंजीकृत है, जो भारत के कुल सॉफ्टवेयर निर्यात में 33 प्रतिशत का योगदान दे रही है।

1 **सिलिकॉन वैली ऑफ इंडिया-** बेंगलुरु कर्नाटक आईटी उद्योग का सबसे अहम केंद्र है। सरकार के आंकड़ो के अनुसार कर्नाटक से मौजूदा वित्त वर्ष में आईटी निर्यात बढ़कर एक लाख करोड़ रुपए हो जाने का अनुमान है, जो वित्त वर्ष 2010-11 में लगभग 85,000 करोड़ रुपए रहा था।

इलेक्ट्रानिक्स सिटी ः- इलेक्ट्रानिक्स सिटी बेंगलुरु के दक्षिणी इलाके में स्थित है, इसकी स्थापना 1978 में की गई थी। यह इंडस्ट्रियल पार्क 330 एकड़ में फैला हुआ है।

व्हाइटफील्ड :- व्हाइटफील्ड कलस्टर इंटरनेशनल टेक नोलॉजी पार्क, यानी अंतरराष्ट्रीय कंपनियो का घर है। इसकी स्थापना जनवरी 1994 में सिंगापुर और भारत के बीच संयुक्त उपक्रम के तहत की गई थी। इस पार्क में एसएपी, आईगेट, डेल, टीसीएस, हुएवई ओरकल जैसी अन्तर्राष्ट्रीय कंपनियो के मुख्यालय है।

2. **एरोस्पेस और एविएशन इंडस्ट्री -** बेगंलुरु को भारत की एविएशन राजधानी भी कहा जाता है। इसका भारत के कुल एरोस्पेस व्यापार में 65 फीसदी हिस्सा है। यहां बोइंग, एयरबस, गुडरिच, डायनामेटिक्स, हनीवेल, जीई एविएशन, यूटीएल और अन्य अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों के उनके शोध और अनुसंधान केंद्र है। यह उद्योग करीब प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रुप से 1,00,000 से ज्यादा लोगो को रोजगार दे रहा है।

3. **बायोटेक्नोलॉजी उद्योग-** शहर में बायोटेक्नोलॉजी तेजी से बढ़ता क्षेत्र है। एक अनुमान के मुताबिक भारत की 380 से ज्यादा बायोटेक्नोलॉजी कंपनियों में से 191 कंपनियां यहां स्थित है, जबकि 198 कर्नाटक में है और जो करीब-करीब 80,000 लोगो को रोजगार दे रही है।

4. **फ्लोरीकल्चर उद्योग -** अगर हम बेंगलुरु को फ्लोरीकल्चर की राजधानी कहें तो यह अतिशयोक्ति नही होगा। यह शहर जापान, सिंगापुर, पश्चिमी एशिया, रशिया, लंदन, हॉलैंड, जर्मनी और स्पेन तक को लाल गुलाब का निर्यात करता है। भारत के कुल गुलाब निर्यात में इस शहर का 90 फीसदी योगदान है। दूसरे नंबर पर पुणे का नाम आता है। बाजार पंडितो के अनुसार बेंगलुरु भारत का चौथा सबसे बड़ा एफएमसीजी (फास्ट मूविंग कंज्यूमर गुड्स) बाजार है। इतना ही नही लगभग हर राष्ट्रीय और अन्तरर्राष्ट्रीय कंपनियों का मुख्यालय यहां पर है, जिसकी वजह से पर्यटन, रीयल स्टेट, आयात-निर्यात, बैंकिंग और वित्तिय, विनिर्माण, टेक्सटाइल क्षेत्र में लाखो लोगो को रोजगार मिला हुआ है।

कई प्रमुख सार्वजनिक कंपनियों के मुख्यालय बेंगलुरु में स्थित है

हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल)
भारत इलेक्ट्रानिक्स लिमिटेड (बीईएल)
नेशनल एरोस्पेस लेबोरेट्रीज (एनएएल)
भारत हैवी इलेक्ट्रिस लिमिटेड (बीएचइएल)
भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड (बीईएमएल)
हिन्दुस्तान मशीन टूल्स (एचएमटी)

लेखक-अमरीष कान्त

घर से दूर पढ़ाई

मेंट्रो सिटीज के नामी संस्थानो में पढ़ने का सपना आमतौर पर हर स्टूडेंट का होता है। पैरेंट्स भी इसके लिए खासे परेशान रहते है। अच्छी पढ़ाई, बेहतरीन सुविधाएं और सबसे बड़ी बात बेस्ट प्लेसमेंट इसकी सबसे बड़ी वजह हो सकती है। पर क्या सभी के अरमान पूरे हो पाते है? जाने-माने संस्थान में एडमिशन न मिलने पर भी सिर्फ बाहर पढ़ने के नाम पर किसी भी इंस्टीट्यूट में दाखिला लेना कितना उचित है? बाहर पढ़ने की जिद आपकी जरुरत की बजाय कही महज दिखावा तो नही? अगर ऐसा है, तो सोचने की जरुरत है.....

देश के लाखों-करोड़ो स्टूडेंट्स में से कितनो को आइआइटी, एनआइटी, आइआइआइटी, डीयू, जेएनयू या इनके जैसे नामी-गिरामी संस्थानो में एडमिशन मिल पाता है? ब्रिलिएंट स्कॉलर्स को छोड़ दे तो एवरेज या बिलो एवरेज के लिए क्या ऑप्शंस है? दूर पढ़ने की चाह में आखिरकार इनमें से अधिकतर को उन प्राइवेट कॉलेजो मे एडमिशन लेना पड़ता है, जो अपनी बाहरी चकाचौध, हंड्रेड परसेंट प्लेसमेंट के दावे और जमकर की गई पब्लिसिटी के दम पर ऐसे स्टूडेंट्स प्रिपेरेशन करने में कामयाब हो जाते है।

जब दावे होते है फ्रास

फीस के रुप में लाखों चुकाने के बावजूद कोर्स के दौरान ज्यादातर कॉलेजो द्वारा न तो अपडेटेड फैकल्टी उपलब्ध कराई जाती है और न ही इंडस्ट्री के साथ इंटरैक्शन कराया जाता है। आखिर में प्लेसमेंट के नाम पर भी जब कोई ठेंगा दिखा दिया जाता है, तो वे कहीं के नही रहते। कोर्स कम्प्लीट करने के बाद भी स्किल्ड न होने के कारण कोई कंपनी उन्हें जॉब देने को तैयार नही होती । सालों तक ठोकरे खाने के बाद मिलती भी है, तो महज कुछ हजार की नौकरी। सवाल यह है कि आखिर बाहर पढ़ने के नाम पर दिखावा क्यों करें? लाखो खर्च करके बाहर घर-शहर के करीब रहते हुए अपेक्षाकृत किसी बेहतर संस्थान में पढ़ाई करके भी करियर की राह चमकदार बनाई जा सकती है। फिर खुद के भीतर झांकने और उसके अनुरुप कदम आगे बढ़ाने की बजाय क्यों करें दूसरो का अनुकरण?

ये रेस कहां ले जाएगी?

यूपी के सिद्धार्थनगर के सुयश श्रीवास्तव का परिवार चाहता था कि वे इंजीनियर बनें। फिर क्या था, 12वीं तक की पढ़ाई जिले में की। उसके बाद नोएडा के एक जाने-माने कॉलेज में एडमिशन ले लिया। फिलहाल वह बैचलर डिग्री के छठे सेमेस्टर में है। सामान्य परिवार के सुयश के पिता ने पढ़ाई के लिए जीपीएफ से लोन भी लिया है। उन्हें उम्मीद है कि साल दो साल में बेटे की नौकरी लग जाएगी, तो लोन भी चुकता हो जाएगा। इसी तरह बैंक कर्मी राजेश त्रिपाठी बेटी को इंजीनियरिंग- मेडिकल से अलग किसी क्रिएटिव फील्ड में डालना चाहते थे। काउंसिलिंग कराई, बेटी से पूछा और तय किया कि 12वीं के बाद उसे होटल मैनेजमेंट का कोर्स कराएंगे । बेटी ने भी पता किया नेशनल और स्टेट लेवल के कुछ होटल मैनेजमेंट संस्थानों में अप्लाई किया। ये दोनो एग्जाम्पल चमकदार करियर बनाने की चाह रखने वाले गोरखपुर-बस्ती मंडल के युवाओं के है, जिन्होने घर से दूर जाकर पढ़ाई करने में ही अपनी तरक्की देखी। गोरखपुर ही क्यों? आज पटना, धनबाद, रांची, हरिद्वार, अगरतला जैसे सुदूरवर्ती शहरो से स्टूडेंट्स दिल्ली एनसीआर के नोएडा, ग्रेटर नोएडा, गुड़गांव, फरीदाबाद, गाजियाबाद या फिर आगरा, अलीगढ़, मेरठ जैसे शहरो के प्राइवेट कॉलेजेज में पढ़ाई कर भविष्य के सपने बुन रहे है। पर क्या उनके ख्वाब पूरे हो पा रहे है या वे सिर्फ एक दिशा हीन रेस में शामिल है?

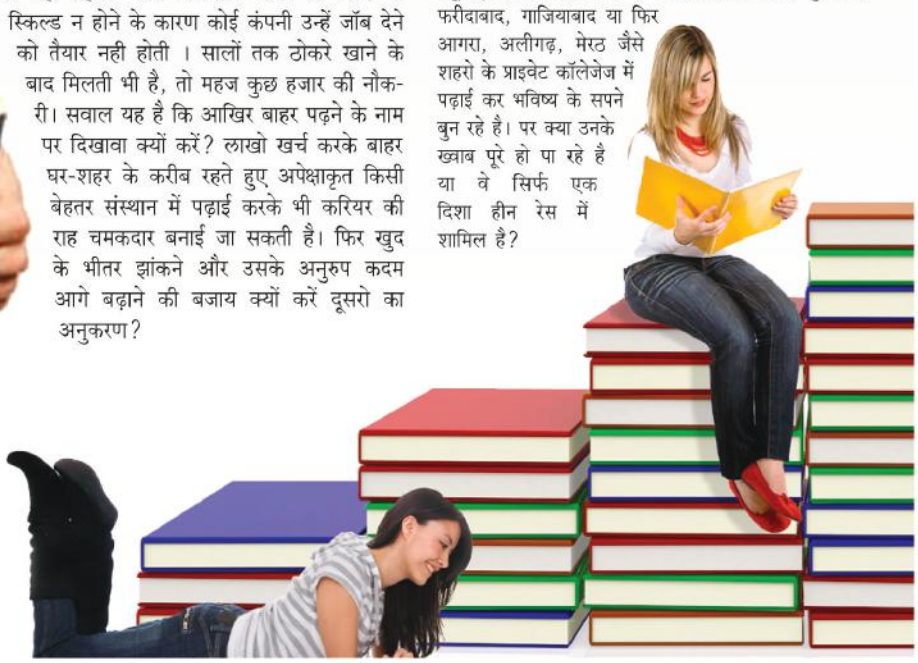

जरूरत या दिखावा?

गलत साबित हुआ फैसला

गुजरात के भुज जिले से मेरठ में डेंटल की पढ़ाई करने आई नेहा का अनुभव खास उत्साहजनक नही रहा। वे कहती है, आज उन्हें अफसोस होता है कि इतनी दूर से आकर यहां दाखिला क्यों लिया? बिहार के मोतिहारी की सुरुचि कहती है कि प्लेसमेंट केवल कॉलेज पर निर्भर नही करता, दरअसल यह स्टूडेंट पर भी निर्भर करता है। कुछ ऐसी ही कहानी पटना से यहां डेंटल कोर्स करने आई कोमल की भी है। वे कहती है कि कॉलेज शुरु से ही मान्यता प्राप्त होने का दावा करता रहा। दूर से आने की वजह से उन्हें पता नही चल पाया। सत्र तो पिछड़ा ही, ऊपर से एक साल में ही दो साल की फीस का भुगतान करना पड़ रहा है। कोर्स पूरा करने में कितने साल लग जाएंगे, इसका भी पता नही। यही पढ़ रही बिहार के बेगूसराय की रचना कहती है कि डेंटल कोर्स करने के लिए कॉलेज में दाखिला लेने का फैसला सही नही रहा। कॉलेज की स्थिति देखकर नही लगता है कि यहां प्लेसमेंट या कोई आफर मिलेगा, खुद मेहनत कर एग्जाम देना होगा या फिर क्लीनिक खोलकर बैठना होगा।

पैरेंट्स की ख्वाहिस पड़ी भारी

हरिद्वार के ऋषभ राजपाल को काउंसलिंग के दौरान मुजफ्फनगर के एक इंजीनियरिंग कॉलेज मे दाखिला मिल रहा था, लेकिन पिता चाहते थे कि बेटा दिल्ली या नोएडा के किसी कॉलेज से बीटेक करें। ऋषभ कहते है, मेरे डैडी को लगता है कि दिल्ली, नोएडा जैसे एजुकेशन हब या मेट्रोपोलिटन सिटी में पढ़ने से बच्चे का फिजिकल और मेंटल दोनो तरह से ग्रोथ होता है। इसलिए उन्होने नोएडा के एक प्राइवेट इंजीनियरिंग कॉलेज मे बीटेक (इलेक्ट्रानिक्स ऐंड टेलीकॉम) में मेरा एडमिशन करा दिया। वैसे तो कॉलेज की रेप्युटेशन अच्छी है, फिर भी मैंने कुछ सीनियर स्टूडेट्स से प्लेसमेंट रिकार्ड के बारे में पता किया। जवाब सैटिस्फैक्ट्री मिला।

यहां ऑरेंज, भारती एयरटेल, एरिक्सन जैसी कंपनियो के अलावा, इंडियन नेवी भी हायरिंग के लिए आती रही है। आज मुझें यहां पढ़ते दो साल हो गए है। कॉलेज में पढ़ाई का अप्रोच प्रैक्टिकल बेस्ड है, लेकिन कई बार यह ख्याल आता है कि अगर थोड़ी और तैयारी की ली होती है, तो किसी अच्छे गवर्नमेंट इंस्टीट्यूट मे दाखिला मिल जाता। तब शायद इतनी भारी फीस नही देनी पड़ती।

बेहतर पढ़ाई के लिए छोड़ा घर

बलिया कोठी गांव (रोहतास, बिहार) के नीतिश कुमार आगरा के एक इंजीनियरिंग कॉलेज में है , इंटर तक की पढ़ाई गांव में हुई, लेकिन इलेक्ट्रानिक्स ऐंड कम्युनिकेशन में इंजीनियरिंग करने का मेरा सपना वहां रहकर पूरा नही हो सकता था। इसलिए आगरा आया। शहर के माहौल में एडजस्ट करने मे समय लगा। इसी संस्थान से बीटेक कर रहे विनीत कुमार कहते है, अलीगढ़ में मुझे इंजीनियरिंग की पढ़ाई को लेकर सही माहौल नही मिल सका। इसलिए इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा में मैने अलीगढ़ से बाहर का कॉलेज चुना। पढ़ाई कंप्लीट करने के बाद 8 कंपनियों में इंटरव्यू दिए, तब जाकर कही सफलता मिली।

छोटे शहरों में भी करियर

शहर में करियर के बढ़ते अवसर को भुनाने के लिए पहुंचे तमाम स्टूडेंट्स से इतर भी कुछ युवा है, जिन्होने अपने शहर में ही पढ़ाई करने के बाद अच्छी नौकरी पाई है। मसलन, धनबाद स्थित बीसीसीएल में असिस्टेंट मैनेजर के पद पर कार्यरत विवेक पाठक को ही ले। विवेक कहते है, मैने इसी शहर में पढ़ाई की और आज नौकरी भी यही कर रहा हूं। इसके दो फायदे है, एक तो बाहर जाकर नौकरी करने से खर्च बढ़ जाता है। वैसे, बहुत कुछ स्टूडेंट पर निर्भर करता है कि वह अपनें करियर को कैसे आकार देना चाहता है। कई बार छोटे शहरो के कॉलेजो में भी पढ़ाई की क्वालिटी बड़े शहरों से काफी अच्छी होती है। स्वाति सिंह ने भी धनबाद से पी0जी0 कोर्स किया वे कहती है, शुरु में एक बार मन हुआ था कि बाहर रहकर पढ़ाई करुं, लेकिन फिर सबने समझाया कि दूसरों की देखा-देखी कदम आगें बढ़ाने से अच्छा होता है, खुद के लिए सही फैसला करना। आज मुझे फैमिली सपोर्ट के साथ-साथ मेट्रो शहर जैसा एक्सपोजर भी मिल रहा है।

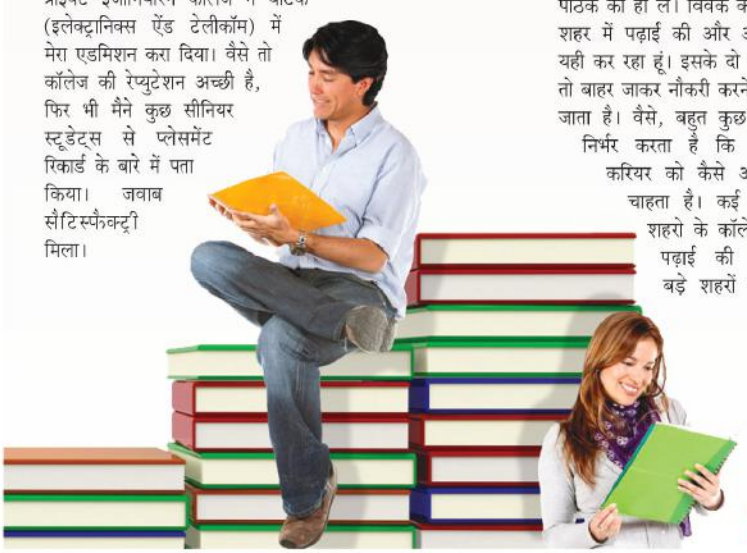

लेखक- मनप्रीत सिंह

UGC APPROVED UNIVERSITY COURES
MBA (2 Years)
Eligibility: Graduation in Any Stream
Stream Avaliaoble
• MARKETING • HRM • BANKING
• RETAIL • PROJECT MANAGEMENT • OPERATION-MANAGEMENT • TOTAL QUALITY MANAGEMENT
• HEALTH CARE SERVICES • IT
OTHER COURSES:
BBA • BCA • MAc.IT • MSc.CS • PGDCA • MCA
Special Classes For working professional on Saturday& Sunday
ASSURED SCHOLARSHIP
REGULAR CLASSES
PENTASOFT Campus
HDFC Bank के बगल, Civil Lines, Allahabad
Mob.: 9335106263, 9935053692

ले चल मुझे भुलावा देकर, मेरे नाविक धीरे-धीरे....

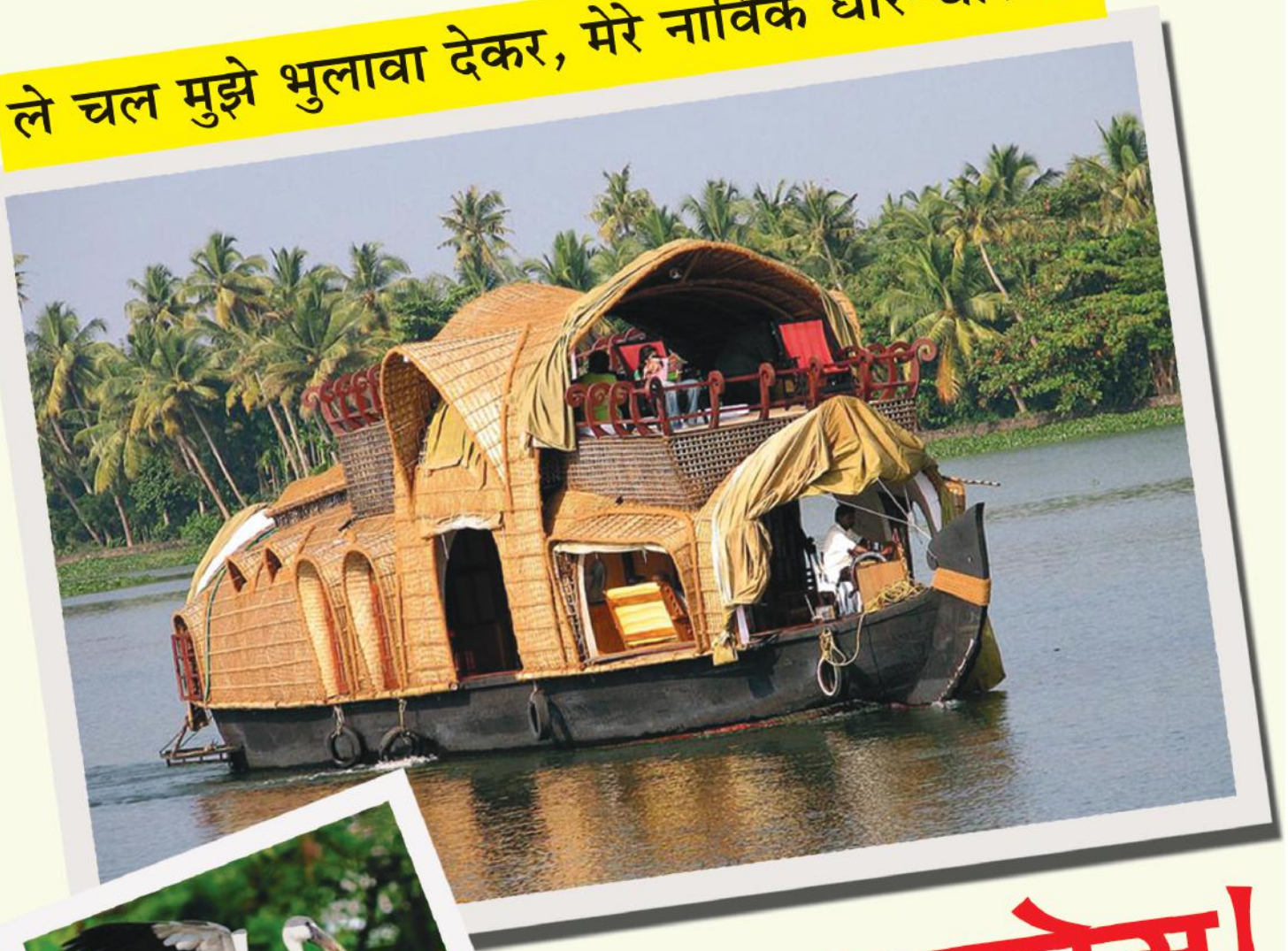

कुमारकोम!

केरल की समुद्री नहरों और 'बैकवॉटर्स' को विदेशी पर्यटक महंगी हाउसबोटों के भव्य परिवेश में बिताना पंसद करते है, लेकिन खुले आसमान तले छोटी सी नाव पर आप कुमारकोम को अपने बाहर ही नही अपने भीतर भी महसूस करेगें।

मुझे पता नही कि जयंशकर प्रसाद अपने जीवन में कभी कुमारकोम गए थे या नही, लेकिन उनकी ये पंक्तिया निश्चय ही किसी मंथर गति से डगमगाती, धीरे-धीरे पानी पर आगे बढ़ती नाव के उनींदे, स्वप्निल अनुभव से प्रेरित हुई होगी। जयशंकर प्रसाद के रचना संसार से हजारो मील दूर, केरल के उस बूढ़े नाविक का नाम कुमारन था और वह हाउसबोटो, मोटरबोटो और स्पीडबोटो की भव्यता से पटी उस धरती पर अब भी अपनी पुरानी चप्पुओ एवं बांस वाली पारम्परिक नाव के सहारे जीविका चलाने का दुस्साहस कर रहा था। दुनिया की तमाम व्यस्तताओं से परे, पानी को उथेलते चप्पुओं की हल्की ध्वनि के अलावा हर आवाज से विलग हम कुमारकोम की उस अलौकिक धरती पर थे, जिसे अक्सर ईश्वर के साम्राज्य या अंग्रेजो में 'गॉड्स आन कन्ट्री' जैसे अतिरंजनामय विशेषणो से नवाजा गया है। कुछ समय पहले ही हमने मोटरबोट चलाने वालो के दलालो, ट्रैवल एजेंटो और 'पैकेज टूर' की मरीचिका बेचने वाले व्यवसायियो से बमुश्किल जान बचायी थी। अपने-अपने वाहनों के करीब खड़े वे झील में बसे पक्षी विहार के चार-पांच किलोमीटर के पेड़ो से ढकें ट्रेक को पैदल तय करने के 'मूर्खतापूर्ण' निर्णय से हमें भरसक हतोत्साहित कर रहे थे। मेरी अपनी राय है कि कुमारकोम की यात्रा को पैदल और चप्पुओं वाली नाव से तय करने से बेहतर विकल्प दूसरा नही हो सकता। यूं केरल की समुद्री नहरों और 'बैकवॉटर्स' को विदेशी पर्यटक महंगी हाउसबोटों के भव्य परिवेश में बिताना पंसद करते है, लेकिन खुले आसमान तले छोटी सी नाव पर आप कुमारकोम को अपने बाहर ही नही, अपने भीतर भी महसूस करेंगे। समुद्र तट के भीतर दूर तक फैले दोनो और जलकुंभी की हरियाली से ढकीं इन खूबसूरत नहरों और पानी के गोशो की तुलना दुनिया के किसी भी दूसरे सुरम्य स्थान से नही की जा सकती। न इनके सामने डल झील के शिकारे टिकते है और न ही हम इन्हें वेनिस की सुरम्य पानी की नहरो से कम आंक सकते है। केरल का यह इलाका शायद यहां के सबसे हरियाले और सुरम्य प्रदेशों में है। कुमारकोम के इर्दगिर्द एक छोर से दूसरी ओर तक फैली है वेम्बानाद झील, जो 200 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में समुद्र से जुड़ी केरल की सबसे बड़ी झील है और जिसके भीतर स्थित है कुमारकोम पक्षी विहार जहां सर्दियो से सुदूर प्रदेशो के पक्षी भी दिखाई दे जाते है।

सफर का सामान

पर्यटन केंद्र के रुप में कुमारकोम का महत्व उन्नीसवीं सदी के अंत मे पहचाना गया। कहा जाता है कि 1881 में अल्फ्रेड बेकर नाम के एक अंग्रेज ने इस प्रदेश की नेसर्गिक सुंदरता से प्रभावित होकर यहां दो मंजिला मकान बनाया जो आज भी बेकर मैंशन के नाम से विख्यात है और जिसके इर्दगिर्द एक बड़ी भारतीय कंपनी ने अब एक आलीशान रिसॉट बना डाला है जहां सारी दुनिया से पर्यटक आते है। इस टापू तक पहुँचने का एकमात्र रास्ता नाव है और इसकी नहरों पर आपको कई आकारों एवं तमाम सुविधाओं से लैस नाव, हाउसबोट और छोटे-बड़े जहाज मिल जाएगें। कहा जाता है कि 1962 तक बेकर परिवार अपनी इसी मेंशन में रहा, यहां का स्थनीय भोजन और यहां की प्रसिद्ध मछली करीमीन खाते हुए। वे फर्राटे से मलयालम बोलते हुए यहां के लोगो की पारम्परिक लुंगी 'मुंडु' पहना करते थे। और इसी इतिहास को पुनः पुरअसरदार ढंग से देश की प्रख्यात अंग्रेजी लेखिका अरुंधति रॉय ने अपने बुकर पुरस्कार जीतने वाले उपन्यास 'गॉड ऑफ लिट्स थिंग्स' में दुबारा जीवित किया है। इस उपन्यास का परिवेश अयमानम है जो कुमारकोम से सटा हुआ एक छोटा सा गांव है। उपन्यास में बेकर मेंशन का जिक्र आता है, 'हिस्ट्री हाउस' नाम से जो खंडहर हो चुका है। इसमें 'बेकर साहब' भी है, 'करी साइपू' नाम के स्थानीय नाम से कुमारकोम से अयमानम पहुंचने के लिए पहले नाव द्वारा मीनाचिल नदी को पार करना पड़ता है। यदि आपने यह उपन्यास पढ़ा है तो इसके परिवेश में कुमारकोम के स्थलो को पहचानना आपके लिए काफी आसान होगा। पर्यटन स्थल के रुप में प्रसिद्धि पाने के बाद अब इस इलाके में कई बड़े-बड़े रिसॉट आ गए है और केरल सरकार ने अब कुमारकोम को एक 'महत्वपूर्ण पर्यटन क्षेत्र' का दर्जा भी दे डाला है। पुराने दिनो में जब सड़को का जाल नही बिछा था, तब कुमारकोम की ये नहरें ही यातायात का प्रमुख जरिया थी और तब कुमारन जैसे नाविक इसकी नागरिक सुविधाओं का महत्वपूर्ण हिस्सा थे। इस इलाके की मिट्टी बेहद उपजाऊ है और नारियल के अलावा यहॉ कटहल और पाइन-एप्पल भी बेहद प्रसिद्ध है। केरल की ये समुद्री नहरें या 'बैकवॉटर्स' एक तरह से समुद्र के समानान्तर चलने वाले प्रायद्वीप से है। जिनके भीतर नावों के जरिए यात्रा की जा सकती है। स्थानीय भाषा में 'कायल' नाम से जानी जाने वाली ये लहरें एक दूसरे से जुड़ी होने के कारण केरल में एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचने का सहज जरिया बन गई है। इनके भीतर से गुजरते हुए आप केरल की प्राकृतिक छटा को बहुत नजदीक से देख सकते है। केरल राज्य में इस तरह की नहरों की लंबाई कोई 1900 किलोमीटर से भी अधिक होगी। एलेप्पी शहर के भीतर इटली के वेनिस शहर की तरह इसी तरह की नहरों का जाल बिछा हुआ है, जिसके कारण कभी-कभी इसे पूर्व का वेनिस भी कहा जाता है। कुमारकोम पक्षी विहार के करीब के जंगल का चार किलोमीटर का ट्रेल कई जगह झील के तट को छूता ताड़, सुपारी और जलकुंभी के पौधों के बीच से होता हुआ इस इलाके की वनस्पति का शायद सबसे उदाहरण है। इसकी घनी छांह में आप धूप के मौसम में भी गर्मी महसूस नही करेगें और यदि फिर भी आपको प्यास सताती है तो संभवतः देश के सबसे बेहतरीन नारियल जल का सेवन आप यहां कर सकते ह।14 एकड़ के क्षेत्रफल में फैले पक्षी विहार में सर्दियों में न सिर्फ उत्तरी क्षेत्रों के पक्षी आते है, बल्कि तेज दक्षिणी हवाओं के चलने पर कई बार यहां ऑस्ट्रेलिया जैसे सुदूर दक्षिणी देशो के पक्षी भी दिखाई दे जाएगें। वेम्बानाद झील में ही यहां के समुद्री 'बैकवॉटर धाराओं के बीच से होते हुए आप पहुंच सकते है। पथिरामनल द्वीप पर, जो कुमारकोम के करीब ही 10 एकड़ का एक अन्य खूबसूरत द्वीप है जहां की सुंदरता देखते ही बनती है। कहा जाता है कि यह टापू एक जमाने में इस झील से ही बाहर निकला है।

वेम्बानाद झील और छोटी-छोटी नहरों से घिरा कुमारकोम एक छोटा सा गवंई कस्बा है जो अपनी अभूतपूर्व सुंदरता, नैसर्गिक आबोहवा और सदाबहार हरियाली के कारण अब विश्व पर्यटकों के हर नक्शे पर अपनी जगह बना चुका है। कुमारकोम केरल के शहर कोटटायम से महज 14 किलोमीटर के फासले पर स्थिर है, लेकिन केरल के लगभग ही शहर से यहां समुद्री नहरों के जरिए नाव द्वारा भी पहुंचा जा सकता है। यदि आप केरल ट्रेन द्वारा जा रहे है तो आप कोच्चि, त्रिवेंद्रम अथवा कोटटायम से सार्वजनिक नाव, कार अथवा बस द्वारा कुमारकोम आ सकते है। कुमारकोम की अपनी जेटटी है जहां सभी जगहों से नावें आती है। कोच्चि के हवाई अडडे से आप कोच्चि शहर जाने की जगह डेढ़ दो घंटे में सीधे कार द्वारा कुमारकोम का रुख कर सकते है। यदि आपके पास कुमारकोम मे बिताने के लिय पर्याप्त गेस्ट हाउसों से लेकर पांच सितारा रिसॉट तक सभी प्रकार की व्यवस्था उपलब्ध है। केरल टूरिज्म कॉर्पोरेशन भी कुमारकोम में रहने की व्यवस्था करती है। ट्रैवल एजेंट के जरिए, आप सारा समय हाउसबोट में रहकर भी कुमारकोम, अलेप्पी आदि की यात्रा कर सकते है।, बशर्ते आप पर्याप्त पैसे खर्च करने के लिए तैयार हो।

लेखक- शैलेष त्रिपाठी

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका आशा खबर सच का दम

धार्मिक अनुष्ठानों में वृक्ष

अशोक का पेड़

अशोक का पेड़ धर्म से जुड़ा है। धार्मिक ग्रंथ रामायण जब तक पढ़ा जाएगा, अशोक के पेड़ से जुड़े धार्मिक रिवाज निभाए जाएंगे। सीता माता को रावण ने अशोक वाटिका में रखा था। माना गया है कि अशोक का पेड़ कष्ट दूर करता है और जो कष्ट नही देता ।

केले का पेड़

केले के पेड़ को काफी पवित्र माना जाता है और कई धार्मिक कार्यो में इसका प्रयोग किया जाता है। भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी को केले का भोग लगाया जाता है, केले के पत्तो में प्रसाद बांटा जाता है। माना जाता है कि समृद्धि के लिए केले के पेड़ की पूजा अच्छी होती है।

तुलसी का पौधा

तुलसी का पौधा सर्वरोग निवारक एवं प्रातः स्मरणीय पौधा है। सभी सौभाग्यवती महिलाएं नित्य प्रातः तुलसी को जल चढ़ाती है। इसका वैज्ञानिक नाम **Osimum sanctum** है। जिसे **holy basil** के नाम से जाना जाता है। यह श्वेत व कृष्ण रंग की होती है। तुलसी का प्रयोग विभिन्न रोगो में औषधि के रुप में भी होता है और पूजा में तुलसी के पत्ते को चढ़ाया जाता है। तुलसी के पत्तें के सेवन से बहुत पुरानी बीमारियाँ, ज्वर यहाँ तक कि कैंसर जैसी बीमारी में भी यह लाभकारी औषधि का कार्य करती है।

आम का पेड़

हमारे देश में आम के पेड़ का खासा धार्मिक महत्व है। इसे काफी पवित्र माना जाता है। इसकी लकड़ी और पत्ते कई धार्मिक आयोजनो में इस्तेमाल किए जाते है। घर के दरवाजे पर आम के पत्ते लटकाए जाते है, हवन में आम की लकड़ी जलाई जाती है। कलश स्थापना में भी इसका इस्तेमाल होता है। वही वसंत पंचमी के दिन आम के फूलो का प्रयोग देवी सरस्वती की आराधना के लिए इस्तेमाल में लाए जाते है।

पीपल का पेड़

संस्कृत भाषा में पीपल के पेड़ को अश्वत्था कहा जाता है। प्राचीन काल से इस पेड़ की पूजा होती है। कहते है कि बुद्ध ने पीपल के पेड़ के नीचे ही ज्ञान प्राप्त किया था। इसलिए इसे बोधि वृक्ष कहा जाता है। कहते है श्रीकृष्ण भी इसी के नीचे मरे थे, जिसके बाद कलियुग शुरु हुआ। कहा जाता है कि इस पेड़ में ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों का वास है। महिलाएं पुत्र प्राप्ति के लिए इस पेड़ की पूजा करती है। पीपल के पेड़ काटना अशुभ माना जाता है। गीता में श्री कृष्ण ने कहा है वृक्षों में मैं पीपल हूँ।

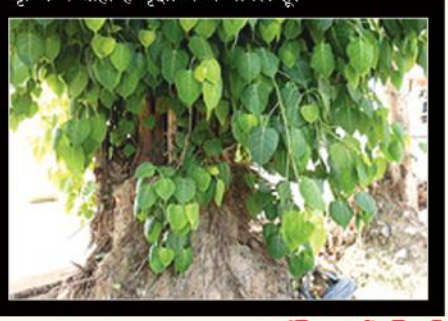

पंडित करमेंद्र तिवारी

अब रहें न बेखबर
पढ़ते रहें आशा खबर
आशा खबर
सच का दम
अब आपके शहर
इलाहाबाद
से प्रकाशित

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका
आशा खबर
सच का दम

1. बीमार नही रहती,फिर भी खाती है गोली
बच्चे, बूढ़े डर जाते सुन इसकी बोली
(बन्दूक)

2. काला मुँह लाल रुधिर,
कागज को वह खाता
रोज शाम को पेट फाड़कर
कोई उन्हें ले जाता। (लेटर बॉक्स)

3. तीन अक्षर का मेरा नाम
उल्टा सीधा एक समान। (जहाज)

4. तीन पैर की तितली
नहा धोकर घर से निकली (समोसा)

5. तीन अक्षर का मेरा नाम
प्रथम कटे तो शस्त्र बनूं
मध्य कटे तो बनूं मै आन.
बोलो क्या है मेरा नाम? (आंगन)

चुटकुले

1. आप हमारी गली में आये, थोड़ा शरमाये,थोड़ा घबराये और फिर जोर से चिल्लाये,खाली, डिब्बा, खाली बोत्तल, प्लास्टिक बेंच डालो।

2. संता का सिर फट गया,
संता - ये कैसे हुआ?
संता - मैं चप्पल से पत्थर तोड़ रहा था,मुझे एक आदमी ने बोला, कभी खोपड़ी का भी इस्तेमाल कर लिया करो।

3. संता ने लड़की को प्रोज किया
क्या तुम मुझसे शादी करोगी?
लड़की तमीज से बात करो
संता- बहन जी, क्या आप मुझसे शादी करोगी?

4. मेरी लव स्टोरी का एक अजीब एन्डिग था।
हमने प्रपोज किया मैसेज से पर कम्बख्त वो उसकी
शादी तक पेन्डिग था।

5. टीचर ने यू.पी वालो से पूछा-
टीचर- एक बात पूछो-
यू.पी वाले पूछो-2
टीचर- तुम यू.पी वाले पढ़ाई मे ध्यान क्यों नही देते।
यू.पी. वाले- क्योंकि पढ़ाई सिर्फ दो वजहो से की जाती है।
पहला- डर से
दूसरा- शौख से
फालतू के शौख हम यू.पी वाले रखते नही
और डरते तो किसी के बाप से नही।

कहानी

(किसी का दोष न देखना)

भगवान बुद्ध के एक शिष्य एक दिन भगवान के चरणों में प्रणाम किया और वह हाथ जोड़कर खड़ा हो गया-
भगवान ने उससे पूछा - तुम क्या चाहते हो ?

शिष्य यदि भगवान आज्ञा दे तो मै देश में घूमना चाहता हूँ।

भगवान लोगो में अच्छे-बुरें सब प्रकार के मनुष्य होते है बुरे लोग तुम्हारी निंदा करेगें और तुम्हें गलियां देगें उस समय तुम्हें कैसा लगेगा-

शिष्य मै समझ लूगां कि वे बहुत भले लोग है, क्योंकि उन्होंने मुझ पर धूल नही फेंकी और मुझे थप्पड़ नही मारे।

भगवान उनमें से कुछ लोग धूल भी फेंक सकते है और थप्पड़ भी मार सकते है।

शिष्य मै उन्हें भी इसलिए भला समझूगां कि वे मुझे डंडे नही मारते। भगवान- डंडे मारने वाले भी दस-पाँच मनुष्य मिल सकते है।

शिष्य वे मुझे हथियारों से नही मारते, इसलिये वे भी मुझे भले जान पड़ेगें।

भगवान देश बहुत बड़ा है। जंगलों में डाकू भी रहते है? डाकू तुम्हें हथियारों से भी मार सकते है।

शिष्य वे डाकू भी मुझे दयालु जान पड़ेगें क्योंकि उन्होने मुझे जीवित तो छोड़ा।

भगवान यह कैसे जानते हो कि डाकू जीवित ही छोड़ देगें वे मार भी डाल सकते है।

शिष्य यह संसार दुख स्वरुप है। इसमें बहुत दिन जीने से दुख ही दुख होता है आत्महत्या करना तो महापाप है। लेकिन कोई दूसरा मार दे तो यह तो उसकी दया ही है।

शिष्य इनकी बात सुनकर भगवान बुद्ध बहुत प्रसन्न हुये उन्होने कहा - अब तुम पर्यटन करने योग्य हो गये हो सच्चा साधु वही है जो कभी किसी दशा में किसी का बुरा नही देखता जो दूसरों की बुराई नही देखता, जो सबको भला ही समझता है, वही परिव्राजक होने योग्य है। दूसरो की बुरा समझना और दूसरो के दोषो की छान-बीन करना एक बहुत बड़ा दोष है। इस दोष से सभी को बचे रहना चाहिये।

अनमोल वचन

मनुष्य जितना बोलकर बिगड़ता है, उतना खामोशी से कभी नही।
गलतियों की सबसे बड़ी औषधि है उनको विस्मृत कर देना।

लेखक- संजय कुमार श्रीवास्तव

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका
आशा खबर
सच का दम

ऐश्वर्या के पास फिल्मों की लाइन लगी

बिग-बी की बहुरिया व पूर्व मिस वर्ल्ड ऐश्वर्या राय ने फिल्मों में वापसी की घोषणा क्या की कि-निर्माता-निर्देशक उनके पास दौड़ने लगे। हालत यह है कि वह तय नही कर पा रही है कि कौन सा ऑफर स्वीकारें और कौन सा ठुकरायें। जाने माने फिल्मकार संजय गुप्ता ने अपनी फिल्म 'जज्बा' के लिए ऐश्वर्या को साइन किया। इस एक्शन फिल्म में ऐश्वर्या केंद्रीय भूमिका में होगी। यह उनकी कमबैक फिल्म होगी। उधर करण जौहर ने इस खूबसूरत अदाकारा को अपनी फिल्म का ऑफर दिया है। अगर सब ठीक रहा तो यह पहला मौका होगा जब करण जौहर की फिल्म में आमिर और ऐश्वर्या एक साथ काम करेगें। वर्ष 2000 में प्रदर्शित फिल्म मेला में ऐश्वर्या ने आमिर के साथ काम किया था लेकिन इस फिल्म में उनकी भूमिका महज एक-दो- मिनट की थी। चर्चा है कि आमिर ने इसके बाद ऐश्वर्या को अपनी मंगल पांडे में काम करने का प्रस्ताव दिया था लेकिन बात नही बन सकी। अब यह पहली बार होगा कि दोनो सितारें किसी फिल्म में काम करें। कहा जा रहा है कि दोनों कलाकार एक दूसरें के साथ काम करने को लेकर उत्साहित है।

लिव इन में रणबीर-कैटरीना

बॉलीवुड के हॉट कपल रणबीर कपूर और कैटरीना कैफ के अफेयर की चर्चा पिछले काफी समय से चल रही है। अब खबर है कि ये हॉट जोड़ी एक छत के नीचे साथ रह रहे है यानी लिव-इन-रिलेशनशिप में अब एक वेबसाइट के अनुसार हॉट कपल रणबीर और कैटरीना अब एक साथ रह रहे है। सूत्रों के मुताबिक दोनों ने मुबई में एक घर भी खरीदा है, जहां दोनो एक साथ रहने वाले है। गौर हो कि हाल ही में कैटरीना रणबीर के साथ रह रही थी जब उनकी माइनर सर्जरी हुई थी।

दोनों स्टार पिछले काफी समय ये रिलेशनशिप में है। हालांकि दोनो मे से किसी ने भी इस रिश्ते को कभी नही स्वीकारा। कुछ समय पहले इनकी शादी की खबरें उड़ी थी। उल्लेखनीय है कि दोनों के अफेयर की खबरें काफी समय से चर्चा में है। दोनो को कई बार विदेशों में छुट्टियां मनाते हुए भी देखा गया है। स्पेन में एक साथ छुट्टियां बिताने गए रणबीर और कैंट की तस्वीरें काफी दिनों तक सुर्खियों मे रही थी, लेकिन इन दोनो ने खुलकर अपने रिश्ते को कभी स्वीकार नही किया।

कुछ दिन पहलें एक इंटरव्यू के दौरान कैटरीना ने रणबीर के बारे में इतना जरुर कहा था कि रणबीर मेरी जिंदगी का महत्वपूर्ण हिस्सा है, लेकिन मै शादी नही करने जा रही। पिछले महीने ही कैटरीना ने रणबीर के लिए सरप्राइज बर्थडे पार्टी भी आयोजित की थी। इन दोनों के रिश्तों के बारे में खबर यह भी आ रही थी कि ये जल्द ही शादी करने वाले है, क्योंकि दोनों की फैमली ने आपस में बातचीत की है और वे भी एक-दूसरें के पैरेंट्स से मुलाकात कर चुके है।

दोपहर का समय था, असिस्टेण्ट कलक्टर (कस्टम) अपने दल-बल के साथ तस्करों का पीछा करते काफी दूर निकल आये थे। सूरज अपनी पूर्ण तेजस्विता से आभा बिखेर रहा था। रह-रह कर पसीने की बूंदे उनके माथे पर छलछला आ रही थी। तभी हवलदार खड़क सिंह ने कलक्टर साहब से कहा- साहब! अब हिम्मत जवाब दे गई है, चला नही जाता, कही रुक कर कुछ आराम कर लेना चाहिए। कलक्टर साहब का भी बुरा हाल था, मानों उनको मुंह मागी मुराद ही मिल गई हो, बोले-हॉ खड़क ! पर कही ठौर-ठिकाना भी तो दिखाई पड़ना चाहिए। खड़क सिंह ने कुछ दूर दिखाई दे रही भव्य हवेली की ओर संकेत कर कहा- 'साहब वो क्या ठाकुर साहब की हवेली दिखाई दे रही है, वहीं चलते हैं।'

कलक्टर साहब बोले- खड़क सिंह ! क्या तुम उन्हें जानते हो ? 'हॉ साहब ! नाम सुना है। रणवीर सिंह जी हैं, इस सारे इलाके मे उनकी तूती बोलती है, उनकें आदेश के बिना परिन्दा भी पर नही मारता। इलाकें के कलक्टर साहब तो उनके खास दोस्तो में है।

'मेरा मतलब इन सब चीजों से नही था।'

'फिर क्या साहब ?'

'अरे ! ये असली ठाकुर है या किसी अन्य जाति के ।' खड़क सिंह ने मुस्कुराकर कलेक्टर साहब की ओर देखा । ''नही साहब धर्म भ्रष्ट नही होगा, मूंछो पर हाथ फेरकर कहा-एकदम असली है।''

कलक्टर साहब भी खड़क सिंह की इस अदा पर खिलखिला कर हंस पड़े। दरअसल कलक्टर साहब ब्राह्मण थे। गांव की मानसिकता और रुढ़िवादिता ने इस ओहदे पर पहुॅचने के बाद भी उनका साथ नही छोड़ा था।

कुछ ही देर में पूरा दल हवेली के सामने पहुॅच चुका था। हवेली चारों ओर से ऊँची-ऊँची दीवारों से घिरी हुई थी और सामने की ओर बीचों-बीच कोई आठ-दस फुट का काले रंग का मजबूत लोहे का गेट लगा हुआ था, जिसके भीतर दो दरवान, हाथ में बन्दूकें लिए खड़ें हुए थे। गेट के पास पहुॅचते ही हवलदार खड़क सिंह ने कड़क आवाज मे पूछा-क्यों ठाकुर साहब है?

'' क्यों क्या काम है ? मालिक आराम फरमा रहे है।''

'कस्टम कलक्टर, साहब मिलना चाहते है।'

दरवान ने एक दृष्टि खड़क सिंह पर डाली और फिर कलक्टर साहब और उनके दल-बल की ओर । खाकी वर्दी की पहचान शायद उन दरवानों को थी, दूसरा प्रश्न किये बगैर एक दरवान अन्दर की ओर चला गया, कुछ देर बाद वह लौटा और दूसरे दरवान से गेट खोलने का इशारा किया और अपने पीछे चलने को कहा!

अन्दर ईटों से बनी हुई सड़क के दोनो ओर आम, अमरुद और नारंगी के बगीचे किसी उपवन की याद दिलाने के लिए काफी थे। कहीं-कहीं पर छोटी-छोटी क्यारियों में गुलाब और गेदें के पुष्प-वृक्ष बाग की सुन्दरता मे चार चाँद लगा रहे थे। कोई डेढ़ दो सौ कदमों के चलने के बाद एक बड़े बरामदे में वो सड़क तब्दील हो गई। उस बरामदे में कुछ कुर्सियाँ, मेजो और अनाज के बोरों के ढेर फैले हुए थे। दरवान ने वही बैठने का इशारा सभी को किया और फिर सामने की ओर एक बड़े कमरे के बड़े दरवाजे के सामने जाकर कहा - मालिक उन्हे बुला लाया हूँ।

अन्दर से एक भारी आवाज सुनाई दी -अरे ! बैठने को बोला कि नही ?

'हॉ मालिक ! बरामदे में बैठा दिया है।'

'अच्छा ! बोलना मै दो मिनट मे आता हूँ।'

'अच्छा मालिक ।'

दरवान लौट कर बोला -'मालिक कुछ देर में आते है, आप सभी, कुछ देर सुस्ता लीजिए। मै आप सब के लिए पानी लेकर आता हूँ।

सभी अपनी आवश्यकतानुसार कुर्सियॉ और तख्तों पर बैठ व लेट गए। कलक्टर साहब एक बड़ी सी आराम कुर्सी पर दोनों पैर आगे की ओर फैला कर आंखे बन्द कर दोनो हाथों को बाँध सिर के नीचे पीछे की ओर लगा कर बैठ गए। खड़क सिंह एक तख्ते पर दोनों हाथ पीछे की ओर टेक कर बैठ गया, अन्य सिपाही भी जहॉ-तहॉ आराम फरमाने लगे। अभी कुछ ही समय बीता होगा कि एक भारी भरकम आवाज ने कलेक्टर साहब को चौका दिया, आंखो की पलकें अनायास ही खुल गई। सामने कोई 40-50 वर्ष का भारी भरकम आदमी खड़ा था जिसके मुख से तेज का आभास हो रहा था। बड़ी-बड़ी आखें, चौड़ा माथा, छोटे-छोटे परन्तु सिर के खड़े-खड़े बाल, बड़ी-बड़ी घनी मूॅछें किसी नृसिंह का स्मरण कराने के लिए काफी थे। ये ठाकुर रणवीर सिंह थे, सुदामापुर गांव के जमीदार, सारे इलाके पर इनका खास प्रभाव था। शासन और प्रशासन दोनो इनके दब-दबे से दबे हुए थे। इलाके के विधायक और कलक्टर दोनो इनकी स्नेह दृष्टि के आकांक्षी थे। जनता के लिए रणवीर सिंह किसी राजा से कम न थे। हाथ जोड़ कर ठाकुर साहब बोले-क्षमा चाहता हूँ आप सब को काफी प्रतीक्षा करनी पड़ी। क्या करुँ आदत पड़ गई है, स्नान से पूर्व मालिश की । फिलहाल बताइए मै आप लोगो की क्या सेवा कर सकता हूँ।

खड़क सिंह बोलने के लिए उठने ही वाला था कि कलक्टर साहब ने हाथ से उसे चुप रहने का संकेत किया और स्वत: उठ कर हाथ जोड़ कर बोले-ठाकुर साहब । मेरा नाम पद्माकर द्विवेदी है, मै नेपाल-गोरखपुर सीमा पर कस्टम कलक्टर पद पर तैनात हूँ। तस्करों का पीछा करते-करते काफी दूर निकल आया था और भूख-प्यास ने बेहद बेहाल कर दिया था, खड़क सिंह ने आपके विषय मे बताया तो मै सभी को लेकर आप के पास आ गया। तभी खड़क सिंह तपाक् से बोल पड़ा- एक बात और थी, ठाकुर साहब!

पद्माकर द्विवेदी अकस्मात् खड़क सिंह के बोलने पर कुछ कहने ही वाले थे कि ठाकुर साहब ने पूछा- वो क्या बात थी, हवलदार साहब ? 'साहब नीच जाति का पानी भी नही पीते।'

ठाकुर साहब ने पद्माकर द्विवेदी जी की ओर मुस्कुराकर अचरज भरी दृष्टि डाली, मानो कहना चाहते हो, इतनी शिक्षा और कितनी रुढ़िवादिता या धर्मभीरुता और दोनो बाहें फैलाकर कलक्टर साहब को बाहों मे भर लिया। बोले -साहब आजकल तो ब्राह्मण ..... परन्तु न जाने क्या सोच कर अपने वाक्य को अधूरा छोड़ अपने नौकरों को खाना लगाने का हुक्म दिया । थोड़ी ही देर में कई प्रकार के मिष्ठान व खाद्य पदार्थ परोस दिए गए। ठाकुर साहब ने हाथ जोड़कर सभी से खाने का निवेदन किया। पद्माकर द्विवेदी साहब ठाकुर रणवीर सिंह के साथ बैठकर भोजन करने लगे, बाकी सभी भी कलक्टर साहब को भोजन करते देख भोजन पर भूखे शेरों की तरह टूट पड़े । घण्टों में बनाया गया व्यंजन मिनटो में सफाचट हो गया। उसके बाद ठाकुर साहब ने कुछ छांछ मंगवाया। ठाकुर साहब की मेहमानवाजी से सभी के उदर त्राहि-माम् कर उठे। इससे पहले कि ठाकुर रणवीर सिंह कुछ और मंगाते सभी ने अपने हाथ खड़े कर दिये। पद्माकर द्विवेदी जी ने हंसते हुए कहा- ठाकुर साहब हम जान बचाने आए थे, जान गंवाने नही। उनके इतना कहते ही ठहाकों से पूरी हवेली गूंज उठी।

'अच्छा अब हमे चलने का हुक्म दीजिए।'

'अरे अभी तो आप आए ही है, एक दो दिन आराम कर लीजिए, शाम भी हो रही है, कल चले जाइयेगा।'

'नही शाम तक सीमा पर पहुॅचना अत्यंत आवश्यक है, सारे सिपाही भी हमारे साथ ही आ गये हैं।'

'अच्छा फिर आइयेगा साहब ! और अपनी जीप के चालक को आवाज दी- केशव ! साहब, को सीमा तक छोड़ आ तो !

'जी सरकार ! अभी जाता हूँ।'

दो आम

ठाकुर साहब से पद्माकर साहब गले मिल कर जीप पर जा बैठे । खड़क सिंह जो भोजन करने के पश्चात सोने का आदी था, खड़े - खड़े ही ऊंघ रहा था, अधखुली आंखो से कलक्टर साहब को बैठते देख, किसी घोड़े के समान छलांग मारकर जीप में जा समाया, अन्य सिपाही भी धीरे-धीरे जीप मे जा बैठे और जीप सीमा की ओर रवाना हो गई।

2

साढ़े नौ बजे सुबह का वक्त था। पं0 पद्माकर द्विवेदी आफिस में आकर बैठकर चाय की एक दो चुस्की ही लिए थे कि एक सिपाही एक अत्यंत 'सुदर्शन' व्यक्ति को साथ लिए हुए आया। वह व्यक्ति कोई छः फुट लम्बा था। गौरवर्ण, लम्बी नाक, बड़ी-बड़ी आंखे, काले-काले लम्बे बाल जो सलीके से संवारे गए थे, उसको अत्यंत मोहक रुप देने के लिए पर्याप्त थे। पहना हुआ अत्यंत कीमती भूरे रंग का कोट और चमड़े के लम्बे जूते, किसी सम्भ्रान्त परिवार से उसका सम्बंध स्वंय बयान कर रहे थे। इससे पहले की सिपाही कुछ बोलता पं0 पद्माकर द्विवेदी ने कड़कदार आवाज में अपने सिपाही से पूछा- क्यों पकड़ कर लाया है इन्हें ?

'साहब इनकी गाड़ी में मृगचर्म मिले हैं।'

'मृगचर्म मिले हैं?

'हां साहब !'यही कोई एक करोड़ के आस-पास।'

'एक करोड़ के आस-पास'? कलक्टर साहब चौकें।

'हॉ साहब ! और कुछ हाथी दातं भी मिले है।

कलेक्टर साहब ने एक नजर उस अत्यंत रोबीले व्यक्ति पर डाली और फिर उस सिपाही की ओर घूरकर देखा। सिपाही उस व्यक्ति को वही छोड़कर चला गया। कलक्टर साहब ने उस व्यक्ति से कहा -

'आप बैठ जाइये।' वह बैठ गया।

'आप का नाम क्या है ?'

'कर्नल विक्रम सिंह।'

'कहॉ रहते है?'

'सीमा पर एक गांव सुदामापुर है वही।'

कलक्टर साहब चौके- 'क्या कहा आपने सुदामापुर ? वहॉ के ठाकुर रणवीर सिंह को तो मै अच्छी तरह जानता हूँ।

'वो मेरे बड़े भाई है।'

कलक्टर साहब आश्चर्यचकित होकर बोले-क्या रणवीर सिंह जी आपके बड़े भाई हैं।

कलक्टर साहब उठ कर खड़े हो गए और अपना दायाँ हाथ विक्रम सिंह की ओर बढ़ा दिया, बोले -'मै आप लोगो के नमक का कर्जदार हूँ। आप को गिरफ्तार न करना तो राष्ट्रद्रोह होगा, परन्तु गिरफ्तार करना अपनी अन्तरात्मा के प्रति विद्रोह होगा और मै अन्तरात्मा से विद्रोह कर जी न सकूगां। आप आजाद है, कर्नल विक्रम ठाकुर ! आप जा सकते है।

'परन्तु आप की नौकरी सरकार ले सकती है, कलक्टर साहब ! 'हॉ, मै जानता हूँ। उसकी चिन्ता आप न कीजिए। पदमाकर द्विवेदी अपने उसूलो पर मर मिटेगा, परन्तु पीछें न हटेगा।'

कर्नल विक्रम सिंह ने कलक्टर से हाथ मिलाया और दरवाजे की ओर बढ़ गए। कलक्टर साहब बेचैनी से अपने दोनों हाथों को पीछे की ओर बांधे टहलने लगे।

3

जैसे ही कलक्टर साहब शाम को घर लौटे और सोफे पर बैठे ही थे कि सामने मेज पर रखा टेलीफोन घन-घना उठा। पदमाकर जी ने अत्यंत अनिच्छा से हाथ बढ़ाया और टेलीफोन को मुंह से लगा, बोले- 'हैलो' उधर से जानी पहचानी आवाज आई।

'मै कर्नल विक्रम सिंह बोल रहा हूँ। कलक्टर साहब !'

'हॉ बोलिए छोटे ठाकुर ! कैसे है आप ?'

'मै ठीक हूँ, भाई साहब ने आपको याद किया है। अगर आप आ सकें तो .....!'

'अभी तो मै कामों में लगभग एक सप्ताह व्यस्त रहूगाँ, हॉ अगले सप्ताह मै सीधा आपकी हवेली चला आऊँगा। क्यों ठीक रहेगा न ?'

'जैसी आपकी इच्छा कलक्टर साहब ! अच्छा नमस्ते ।'

'नमस्ते !' और कलक्टर साहब ने फोन रिसीवर पर रख कर ठण्डी सांस ली।

4

काठमाण्डू एयरपोर्ट पर अफरा तफरी का माहौल था। आने वाले यात्रियों को अपने परिचितों और रिश्तेदारो से जल्दी मिलने की बेचैनी थी, तो जाने वालो को फ्लाइट पकड़ने की जल्दबाजी। कर्नल विक्रम सिंह दो छोटे-छोटे मासूम बच्चों को लिए कस्टम कलक्टर पं0 पदमाकर द्विवेदी का इंतजार कर रहे थे। 10 बजकर 45 मिनट हो चुके थे, कर्नल विक्रम सिंह बार-बार अपनी 'रिस्ट वाच' को बेचैनी से निहार रहे थे, तभी करीब 10 बजकर 50 मिनट पर इण्डियन एयर लाइन्स के घोषणाकक्ष से घोषण हुई कि 10 बजकर 45 मिनट की फ्लाइट अपने निर्धारित समय से 10 मिनट देरी से आने की सम्भावना है। कर्नल विक्रम सिंह ने पुनः एक उड़ती हुई दृष्टि अपनी कलाई घड़ी पर डाली और एक गहरी सांस ली। बेचैनी की लकीरें उनके माथे पर सलवटें बनकर उभर आई थी। इंतजार का एक-एक पल कल्प के समान बीत रहा था। किसी प्रत्याशित वस्तु को शीघ्र पाने की इच्छा, व्यग्रता को अत्यंत बढ़ा देती है। निराशा में हार होती है, थकावट होती है, निरुत्साह होता है, परन्तु आशा में आवेश होता है, उमंग होती है, उत्साह होता है, जीत की ललक होती है। निराश व्यक्ति घंटो क्या दिनों हाथ पर हाथ धरे बैठा रह सकता है, परन्तु आशावान के लिए एक क्षण भी बैठना दूभर होता है। अभी कर्नल विक्रम सिंह ने कलाई को जैसे ही समय देखने के लिए उठाया ही था, वैसे ही आकाश में जोर की गड़गड़ाहट ने उनका ध्यान अपनी ओर खींच लिया। आसमान में किसी पक्षी के समान तैरता हुआ वायुयान हवाई पट्टी की तरफ बढ़ने लगा। कर्नल विक्रम सिंह बड़बड़ा उठे- ओह! प्लेन हैज एराइव्ड।"आशा ने उत्साह के साथ मिलकर चिन्ता और परेशानी को मार भगाया ।ठाकुर विक्रम सिंह दोनों बच्चों को लेकर 'एक्जिट गलियारे' की ओर उमंग से बढ़ चले। एक्जिट गलियारे मे आने वालो का स्वागत उनके परिचित उमंग व जोश से कर रहे थे। कोई हाथ उठाकर आवाज दे रहा था तो कोई चौकन्नी काग- दृष्टि से अपने स्नेही जन की खोज कर रहा था। अभी विक्रम सिंह इन्ही नजारों को देखने में खोये थे, कि किसी ने उनके कन्धे पर हाथ रखकर कहा-कहॉ खो गए है, छोटे ठाकुर खैरियत तो है ? ठाकुर विक्रम सिंह ने घूमकर देखा तो पदमाकर द्विवेदी को देख आश्चर्य से बोले-अरे ! आप नजर नही आए और नजर आए तो .....।

पदमाकर जी ने बात को बीच मे काटते हुए कहा- चिराग तले अंधेरा ही मिलेगा, छोटे ठाकुर ! कर्नल विक्रम सिंह और कलक्टर पदमाकर द्विवेदी दोनो ठहाके लगाकर हंस पड़े । तभी पदमाकर जी की नजर दोनो मासूम बच्चों पर पड़ी- 'अरे ! बड़े सुन्दर बच्चें हैं, कितने मासूम दिखते है ? , किसके है,? आपके ?' कर्नल विक्रम सिंह उनकी ओर मुस्कुराकर देखकर स्वीकृति से अपनी गर्दन हिला दिए। पदमाकर जी ने अपने चमड़े के थैले को खोला और 'दो आम' निकालकर उन बच्चों की ओर बढ़ा दिया, दोनों के हाथों में एक-एक आम आम दे, पदमाकर द्विवेदी बोले लो बेटा ! दाने-दानें पर लिखा है खाने वाले का नाम। खरीदा तो था अपने खाने के लिए पर हवाई जहाज में न खा सका। दोनों बच्चो ने दोनो आम ठाकुर विक्रम सिंह की ओर बढ़ा दिया। विक्रम सिंह ने दोनो आम हाथों में लेकर कहा- चलिए कलक्टर साहब ! घर चलते है। ड्राइवर जीप लेकर सामने आ खड़ा हुआ । सभी जीप मे सवार हो गए, जीप तूफानी गति से सुदामापुर गांव की तरफ दौड़ी जा रही थी।

5

कोई पचास किलोमीटर का सफर तय कर सभी हवेली पहुँच गये। ठाकुर 'रणवीर सिंह' स्वयं अपने आदमियों के साथ स्वागत के लिए हवेली के प्रवेश द्वार पर खड़े थे। जीप से उतरते ही उन्होने पदमाकर द्विवेदी को गले से लगा लिया और बोले -कहिए साहब ! यात्रा कैसी रही, कोई तकलीफ तो नही हुई, आने में काफी देर हो गई।

'अच्छा, अच्छा । चलिए भोजन का समय हो चुका है, बस आप सभी की प्रतीक्षा थी। सभी उसी रास्ते से होते हुए बरामदें में जा पहुँचे। मेजों पर लगे हुए तरह-तरह के व्यंजनों की खुश्बू हवा मे तैर रही थी। रसोइयें हाथ बाधें ठाकुर साहब का हुक्म बजाने के लिए तैयार खड़े थे। ठाकुर साहब ने पं0 पद्माकर जी को हाथ से बैठने का इशारा किया। नौकरों ने तहजीब से कुर्सी कलक्टर साहब के पीछे लगा दी। कलक्टर साहब बैठ गए, ठाकुर रणवीर सिंह भी सामने बैठ गए। कलक्टर साहब के बगल में विक्रम सिंह बैठ गए। तभी दोनो लड़के विक्रम सिंह के पास आये और उनमें से छोटा लड़का बोला- डैडी ! आम दो खाऊँगा । भूख लगी है।

'बेटा ताऊ जी से ले लो ।' लड़का रणवीर सिंह के पास गया। रणवीर सिंह ने दोनों आमों पर ध्यान से नजर डाली और छोटा व कच्चा आम उस लड़के की ओर बढ़ा दिया और दूसरे लड़के की ओर पका व बड़ा आम। कर्नल विक्रम सिंह एकाएक खड़े हो गये, आखें अंगारो की भांति सुलग उठी' नथुने फड़फड़ाने लगे।

चिल्ला उठे।

'भाई साहब ! दिस इज योर जजमेण्ट ? इट इज योर टेण्डेन्सी ?

यू आर ए पार्शुवल मैन ।' मुझे बंटवारा चाहिए । और अपने मुनीम को आवाज दी - 'मुनीम जी'

'जी सरकार'

'लिखा पढ़ी के कागजात तुरन्त लेकर आइये।'

'बहुत अच्छा सरकार अभी लाया।'

पल भर मे खेत नापे जाने लगे। ट्रैक्टरो की कतारें अलग-अलग लगा दी गई । अनाजो के बोरों के ढेर अलगा दिये गये। हवेली के बीचों - बीच दीवार को खड़ा करने का काम शुरु हो गया। घर के बड़े-बूढ़े, नौकर चाकर यह सब देखकर हैरान् थे। स्त्रियाँ कातर निगाहों से दोनो ठाकुरों की ओर झरोखों से झांक रही थीं। पं0 पदमाकर द्विवेदी के समझने का भगीरथ प्रयत्न भी बेकार हो गया । जब दिल बंट गए फिर जागीरें बंटने मे कितनी देर लगती है। ठाकुर की हवेली ठाकुरों की हवेली बन गई। प्रेम का स्थान द्वेष ने ले लिया । नफरत घर मे नई नवेली बहू बनकर आ गई और प्रेम के सारे कुटुम्ब को घर से निकाल दिया गया। कलक्टर साहब अपने किये पर पश्चाताप कर रहे थे। दोनो बच्चे एक दूसरे के कन्धों पर हाथ रखे आमो को खाते हुए खेल रहे थे।

लेखक-पुनीत शुक्ला

मटर का कमाल

ठंड के मौसम में आप भी अपनी डाइट में मटर को शामिल करती ही होगी। तो क्यों न मटर की कुछ स्वादिष्ट डिश भी बनाई जाए। बता रही है....

मटर पुलाव

कितने लोगो के लिए	4
कुकिंग टाइम	25 मिनट

सामग्री

1.	बासमती चावल	1 कप
5.	मटर	2 कप
2.	घी	2 चम्मच
6.	धनिया पाउडर	2 चम्मच
3.	जीरा	1 चम्मच
7.	गरम मसाला	1 चम्मच
4.	कद्दूकस किया अदरक	1 चम्मच
8.	नमक	स्वादानुसार
9.	पानी	आवश्यकतानुसार

विधि-

बासमती चावल को पानी से धोकर कम-से-कम एक घंटे तक पानी में भिगोने के बाद हवा में सूखा लें। कड़ाही में घी गर्म करें और उसमें जीरा और अदरक डालें। जब अदरक का रंग सुनहरा हो जाए तो कड़ाही में चावल, मटर, गरम मसाला, नमक और हल्दी डालें। अच्छी तरह से भुनें और कुछ देर के लिए धीमी आंच पर छोड़ दें। चार कप पानी डालें और एक उबाल आने दें। आंच धीमी करके ढंककर लगभग दस मिनट पकाएं। गर्मागर्म सर्व करें।

खोवा मटर

कितने लोगो के लिए	4
कुकिंग टाइम	25 मिनट

सामग्री

खोया	250
मटर	1 कटोरी
घी	2 चम्मच
गरम मासाला	1 चम्मच
जीरा	1 चम्मच
लाल मिर्च	स्वादानुसार
टोमैटो प्यूरी	1 कप
नमक	स्वादानुसार
अदरक पेस्ट	1 चम्मच
धनिया पत्ती	गानिशिंग के लिए
पानी	आवश्यकतानुसार

विधि

कड़ाही में घी गर्म करें और उसमें जीरा डालें। जब जीरा पक जाए तो कड़ाही में टमाटर और अदरक डालें। घी के अलग होने तक पकांए। मटर डाले और अच्छी तरह से मिलाएं। नमक, लाल मिर्च, पाउडर और हल्दी डालें। मटर के मुलायम होने तक पकाएं। खोवा डालें, मिलाएं। थोड़ा- सा पानी डालें। धीमी आंच पर कुछ देर पकाएं गरम मसाला और धनिया पत्ती से गार्निश करें और सर्व करें।

कीमा मटर

कितने लोगो के लिए	4
कुकिंग टाइम	40 मिनट

सामग्री

बारीक कटा मीट	1/2 किलो
अदरक	लहसुन का पेस्ट 2 चम्मच
मटर	1 कप
बारीक कटा टमाटर	2 कप
घी	1/2 कप
नमक	स्वादानुसार
जीरा	2 चम्मच
धनिया पाउडर	1 चम्मच
लौंग	4
हल्दी पाउडर	1/2 चम्मच
दालचीनी	1 टुकड़ा
लाल मिर्च पाउडर	1/2 चम्मच
काली मिर्च	4
बारीक कटी धनिया पत्ती	1 चम्मच
बड़ी इलायची	1
तेज पत्ता	2
कद्दूकस किया प्याज	1 कप

विधि

कड़ाही में घी गर्म करें और उसमें जीरा, लौंग, दालचीनी, काली मिर्च, इलायची और तेजपत्ता डालें। जब जीरा तड़क जाए तो उसमें अदरक लहसुन पेस्ट और प्याज डालें। घी के अलग होने तक पकाएं। अब कड़ाही में टमाटर, नमक, धनिया पाउडर, हल्दी और लाल मिर्च पाउडर डालें। जब घी अलग हो जाए तो आंच तेज करें और कड़ाही में मीट और मटर डालें। कुछ देर तेज आंच पर मीट को भुनने के बाद आंच धीमी करके मीट को पकाएं। जब मीट पक जाए और घी अलग हो जाए तो धनिया पत्ती से गर्निश करें और गर्मागर्म सर्व करें।

मटर-पुदीना सूप

कितने लोगो के लिए	- 4
कुकिंग टाइम	45 मिनट

सामग्री

मटर	500 ग्राम
बारीक कटा हरा प्याज	1 कप
तेल	2 चम्मच
चिकन स्टॉक	1.25 लीटर
लहसुन	10 कली
नमक	स्वादानुसार
काली मिर्च	स्वादानुसार
क्रीम	1 चम्मच
फ्रेश पुदीना	1 गुच्छा

विधि

पुदीना को साफ करके और धोकर चिकन स्टॉक में डाल दें। एक कड़ाही में तेल गर्म करें और उसमें लहसुन, प्याज और मटर डालें। दो से तीन मिनट तक पकाएं। अब कड़ाही में चिकन स्टॉक डाले। नमक और काली मिर्च डालें। जब स्टॉक में एक उबाल आ जाए तो आंच धीमी करके आठ से दस मिनट तक पकाएं। हैंड ब्लेंडर से इस मिश्रण को मिलाएं। क्रीम डालें और कुछ देर और मिलाएं। गर्मागर्म सर्व करें।

हरी मटर

पूरे भारत में उपलब्ध होने वाली मटर सर्दी के मौसम में बाजार में अधिक मात्रा और उचित दामों पर उपलब्ध होती है। मटर का उपयोग सब्जियों आदि में विभिन्न प्रकार से होता है। मुलायम एवं स्वादिष्ट मटर स्वास्थ्य के लिए कितनी लाभप्रद है आइए चर्चा करें।

शरीर के वजन को कम करती है-

मटर एक कम कैलोरी (एक कप मटर में मात्र 118 कैलोरी) परन्तु अधिक पोषणीय तत्व वाली है। इसके सेवन से पेट काफी समय के लिए भरा रहता है। इससे आप कम भोजन करते है और शरीर का वजन भी कम रहता है।

हृदय के लिए उत्तम-

मटर में नियासिन होता है जो क्लोस्ट्राल को कम करता है। संतुलित क्लोस्ट्राल होने से हृदय से सम्बन्धित रोगो से बचाव हो सकता है। मटर में विभिन्न एन्टीआक्सीडेन्ट है जो शरीर के ब्लड सेल्स, आर्टरीज में जमने वाले ब्लड को रोकते है। मटर का सूप रक्त चाप को भी कम करता है।

कब्ज में लाभप्रद-

मटर एक प्रमुख फाइबर युक्त सब्जी है जिसके सेवन से शरीर की पाचन क्रिया ठीक रहती है। इससे कब्ज होने से बचा जा सकता है।

हड्डियों के लिए लाभप्रद-

मटर में विटामिन K होता है। शरीर में स्वस्थ हड्डियों के लिए कैलशियम को सोखने का कार्य करता है। शरीर में विटामिन K 1 की आवश्यकता व्यक्ति के शरीर में उम्र का प्रभाव कम पड़ता है।

डिप्रेशन (उदासी खिन्नता) डिप्रेस्ड व्यक्ति को सलाह दी जाती है वह एन्टीआक्सीडेन्ट भोजन का सेवन करें। मटर में एन्टीआक्सीडेन्ट तत्व है। जो मटर में फोलेट होने से यह डिप्रेस्ड व्यक्ति के लिए लाभदायक है।

पेट के कैंसर में लाभदायक-

मटर में एन्टीआक्सीडेन्ट एवं एन्टी इन्फ्लामेटरी एजेन्ट तत्व होते है। यह शरीर को स्वस्थ रखते है और कैंसर से बचाव करते है। विशेष रुप से पोलिफिनोल (कोलेस्ट्राल) कैंसर होने की सम्भावना कम करता है।

प्रतिरोधक क्षमता-

आपके शरीर का प्रतिरोधक सिस्टम यह निश्चित करता है कि आपके शरीर में इन्फेक्शन से दूर रहने की क्षमता है और बिमारियों से दूर रखता है। मटर विटामिन C एवं अन्य न्यूट्रियन्टस का अच्छा स्रोत है जो आपके शरीर की प्रतिरोधक क्षमता मं वृद्धि लाते है।

एनिमिया एवं थकान से बचाव-

मटर आइरन युक्त होने से शरीर को एनिमिक होने से रोकती है और प्रचुर मात्रा में विटामिन होने से आप थकान से दूर रहते है।

बच्चो के शारीरिक विकास-

मटर प्रोटीनयुक्त है तो बच्चों के लिए एक आदर्श आहार है। मटर को आप कई रुप में भोजन में प्रयोग कर सकते है जैसे मटर सेंडविच या मटर का सूप आदि। बच्चे इसे बड़ें शौक से खाना पसन्द करेगें।

अपने भोजन में मटर को उपयोग में लाएं और स्वस्थ जीवन बिताएं।

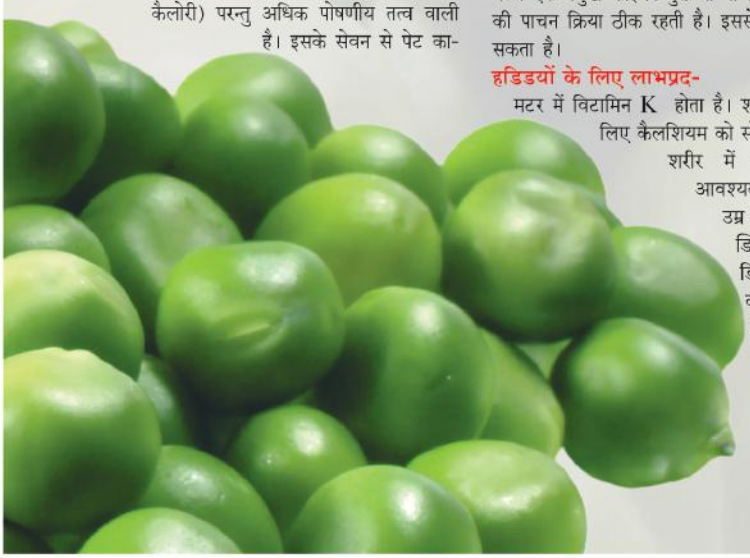

आशा खबर

अपने अभिन्न मित्रों, परिचितों, रिश्तेदारों तक अपना सन्देश और भावनाओं को ''आशा खबर'' पत्रिका के माध्यम से उनके घर तक पहुंचायें या उनके जन्म दिन, शादी की वर्षगाठ अन्य खुशी के शुभ अवसर पर पत्रिका की सदस्यता उन्हें उपहार स्वरूप भेंट करें।

हाँ, मैं आशा खबर पत्रिका का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ।
श्री/श्रीमती .....
जन्मतिथि.....मकान नं.....
पोस्ट.....जिला.....पिन.....
प्रदेश.....मोबाइल नं.....
ई मेल.....
कृपया "Asha Khabar" के नाम रू.....का डी.डी/चेक नं.....
.....Dated.....बैंक का नाम.....प्राप्त करे।

सदस्यता शुल्क

वार्षिक	रूपये 499
द्वि-वार्षिक	रूपये 999
त्रि- वार्षिक	रूपये 1499

नियम व शर्ते

1. यह योजना भारत में मान्य है। 2. आपका पहला अंक आप तक पहंचने में 4-5 सप्ताह तक का समय लग सकता है। 3. पत्रिका साधारण डाक से ही भेजी जायेगी, गुम हो जाने पर संस्थान की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी, सूचना मिलने पर यदि अंक उपलब्ध है तो पुनः अंक निःशुल्क भेज दिया जायेगां 4. कोरियर/रजिस्टर्ड डाक से मंगवाने पर कोरियर व डाक का अतिरिक्त खर्च सदस्य को ही वहन करना होगा। 5. सभी विवादों का निस्तारण डलाहाबाद के सक्षम न्यायालय के अधीन होगा।

सम्पादकीय कार्यालय
81/6/2ए, चकदोंदी, नैनी
इलाहाबाद - 211008
फोन न. - 9415680998-0523-2694058
www.ashakhabar.com
e-mail :- editor@ashakhabar.com

पंजीकरण पत्र

आशा खबर

सच का दम
राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

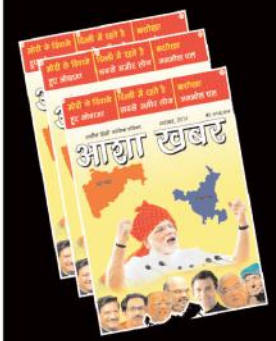

Business Explorer Search Engin

मुफ्त Entry

मूल्य	साइज शब्दो में	विशेष	पत्रिका सदस्यता
₹499	25 शब्द	साधारण	6 माह
₹999	25 शब्द	मोटा बाक्स में	12 माह

मैं 'आशा खबर' राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका द्वारा प्रस्तुत 'आपका बाजार आपके द्वार' की सदस्यता ले रहा/ रही हूँ।

श्री/ श्रीमति.....
पता.....
जिला.....पिन कोड.....
सहयोग राशि..... अवधि.....
मो. न..... इ मेल .....

प्राप्ति रशीद

नाम.....
सदस्यता.....अवधिहेतु.....रू
प्राप्त किये.....मो.....

सम्पादकीय कार्यालय

81/6/2A Chakdondi, Industrial Area , Naini, Allahabad-8
Web site: www.ashakhabar.com, Contact.0532- 2694058, 9415680998

1 सदस्यता लेने के अगले माह से आशा खबर पत्रिका आपको साधारण डाक द्वारा आपके द्वारा दिये गये पते पर भेजी जायेगी।

2 पता बदलने के स्थिति में नये पते की सूचना कार्यालय को 15 दिन पहले अवश्य करा दें। ताकि आपकी पत्रिका नियमित रूप से आपको प्राप्त होती रहें। 3 आपका बाजार आपके द्वार द्वारा एक प्रति मुफ्त दी जायेगी। 4 वार्षिक सदस्यता शूल्क प्राप्ति सुनिश्चित होने पर सदस्यता क्रम संख्या आपके मोबाइल पर एसएमएस के माध्यम से भेजी जायेगी।

आवश्यकता है..

प्रत्येक जिलों में आवश्यकता है जिला/तहसील/ब्लॉक एवं वार्ड स्तर तक संवाददाता एवं विज्ञापन प्रतिनिधियों की

अगर आपमें है वो दम

और अपने कॅरियर को देना चाहते है नया मोड़ तो, "आशा खबर" में आपना बायोडाटा भेजकर शीघ्र सम्पर्क करें।

Web site: www.ashakhabar.com, Contact.0532- 2694058, 9415680998

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका आशा खबर सच का दम

सुहागरात के लिए 10 टिप्स

सुहागरात पर नए जोड़े के मन में संकोच बना रहता है। यह सच है कि हर दंपति के जीवन का अनिवार्य हिस्सा है शारीरिक संबंध । लेकिन, इसे लेकर जो तमाम आशंकाएँ और बाते हमारे अवचेतन मन में कही बैठी है, उनके चलते कई लोग इसका भरपूर आनंद उठा नही पाते। भारतीय समाज में कामसूत्र जैसा महान् ग्रंथ रचा गया, लेकिन बावजूद इसके हमारे यहाँ इस विषय पर चर्चा करना वर्जनीय माना जाता है।

जहाँ एक तरफ सुहागरात नई जिदंगी की शुरुआत है, वही दूसरी तरफ शारीरिक संबंध भी इस रात का अहम हिस्सा माना जाता है। शादी की पहली रात को पुरुष शारीरिक संबंध के प्रति बेहद चिंतित रहते है। मन में यह चिंता रहती है कि वे अपने साथी को खुश कर पाएँगे या नही। उन्हें इस बात का डर रहता है कि कही इस रात की कोई गलती उन्हें सारी उम्र के लिए परेशानी में न डाल दें। लेकिन हम आपको कुछ टिप्स बता रहे है जो आपकी मदद कर सकते है।

शादी की पहली रात सम्भोग के 10 टिप्स

1. सुहागरात में शारीरिक सम्बन्ध बनाने से पहले रोमांटिक माहौल बनाइए। अपने कमरे में विशेष प्रकार के रंग और खुशबू का प्रयोग कीजिए। ये सैक्स हॉर्मोन को उकसाते है। इसके लिए अरोमा कैंडल जलाइए, हल्का संगीत बजाइए, हल्की रोशनी रखिए।
2. सैक्स क्रिया करने के लिए जल्दबाजी न करें। इससे पहले एक-दूसरे को समझने की कोशिश कीजिए। ऐसा करने से दोनो के एक-दूसरें के करीब आएँगे और सैक्स करने में ज्यादा झिझक नही होगी।
3. सैक्सुअल होने से पहले अपने साथी से अच्छी तरह बात कीजिए। अपनी सारी शंकाओं का समाधान बातचीत के जरिए पहले निकाल लीजिए नही तो सैक्स के दौरान मन में झुंझलाहट बनी रहेगी।
4. सम्भोग करने से पहले पार्टनर को सरप्राइज करने की कोशिश कीजिए। इसके लिए आप उसे कोई गिफ्ट दीजिए, हनीमून पैकेज या ज्वैलरी देकर आप अपने पार्टनर को खुश कर सकते है।
5. सुहागरात में सैक्स से पहले फोरप्ले बहुत जरुरी है। फोरप्ले करने से सैक्स करने का आनंद बढ़ जाता है। इसके लिए उसे किस कीजिए। उसके खास अंगो पर आपका प्यारा सा स्पर्श सैक्स हार्मोन उत्तेजित करने में मदद करेगें।
6. सैक्सुअल फैंटेसीज का भी सहारा ले सकते है। सुहागरात में पार्टनर से सैक्सी बातें करे, इससे दोनों उत्तेजित होगें और सैक्स की इच्छा बढ़ेगी। वात्स्यायन द्वारा रचित कामसूत्र के बारे में बात कर सकते है।
7. सुहागरात में एल्कोहल और सिगरेट बिल्कुल न पीये। क्योंकि सैक्स से तुरंत पहले ज्यादा एल्कोहल लेने से पुरुषों में इरेक्टाइल प्रॉब्लम्स और स्त्रियों मे वजाइनल ड्राइनेस (योनि में शुष्कता) की समस्या हो सकती है।
8. सुहागरात में भी सैक्स करने से पहले सुरक्षा का ध्यान दीजिए। इसके लिए कंडोम का प्रयोग करें। इससे यौन बीमारियों के होने का खतरा कम होता है और बिना प्लानिंग के प्रेग्नेंसी का डर भी नही होता है।
9. मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक तौर पर फिट रहे। अंतरंग पलों से पहले अपने साथी की पसंदीदा ड्रैस पहनें। इससे सैक्स क्रिया रोमांचक बनेगी।
10. किसी भी प्रकार का प्रयोग करने से बचें सुहागरात मे सैक्स संबंध बनाते वक्त ऐसे आसनो को अपनाएँ जो आसान हो और जिनको करने से कोई दिक्कत न हो।

डॉ. राहुल

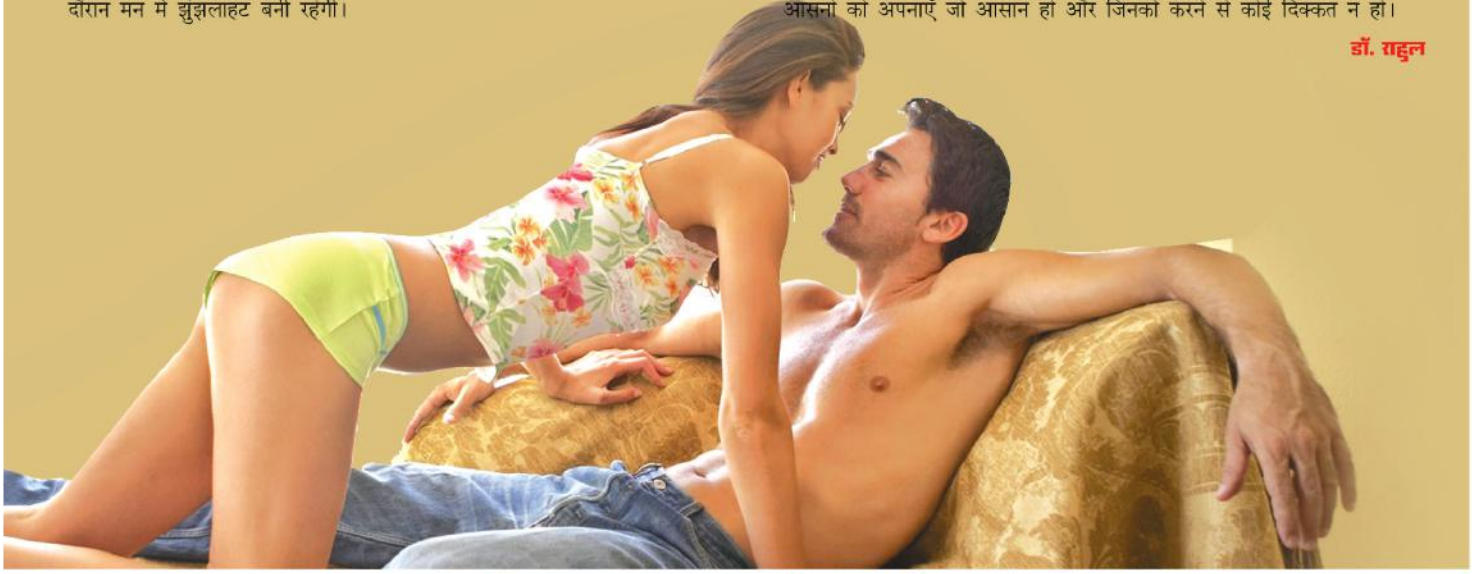

निराश क्यो...?

डा. राहुल M.D. (सेक्सोलॉजिस्ट)

स्त्री व पुरूष की आन्तरिक कमजोरी, ल्यूकोरिया स्वप्नदोष, अत्यन्त कम शुक्राणु अथवा निल शुक्राणु वाले पुरूषों को भी सन्तान सुख निः सन्तान दम्पति, यौन रोग सम्बन्धिता सम्पूर्ण समस्याओं के निदान हेतू एक मात्र चिकित्सा केंद्र

केसरवानी होमियो क्लीनिक एण्ड रिसर्च सेंटर 893/1325 होमियो पैथिक भवन मुट्ठीगंज, इलाहाबाद 0532-2414040

फुटबॉल दुनिया को क्रिकेट

फुटबॉल और क्रिकेट दोनो खेल काफी पुराने है. लेकिन फुटबॉल का खेल क्रिकेट से भी पुराना है. इन दोनो खेलो ने लोगो का मन मोह लिया. कुछ देशो में फुटबॉल, तो कुछ में क्रिकेट ज्यादा लोकप्रिय है, कई देशो में तो दोनो ही खेल लोकप्रिय है, इन मे भारत भी एक है. फुटबॉल क्रिकेट से कम खर्चीला खेल है. फुटबॉल का खेल ज्यादा गतिशील और फुर्तीला है और इस में समय भी कम लगता है और हारजीत का फैसला शीघ्र हो जाता है, जबकि क्रिकेट में काफी समय लगता है. फुटबॉल के खिलाड़ी काफी आक्रमणकारी होते है और उन्हें काफी सर्तक रहना पड़ता है ताकि वे गोल दाग सकें. दूसरी तरफ क्रिकेट में सिर्फ एक बल्लेबाज पर सब की नजरें टिकी होती है, फुटबॉल का खेल लोगो को ज्यादा भाता है क्योंकि यह एक अति तीव्र गति वाला खेल है, साथ ही फुटबॉल कब, किस के खेमे में पहुंच जाए, यह कोई नही जानता....

फुटबॉल खेलने में शक्ति का अधिक प्रदर्शन होता है ताकि खिलाड़ी दूर से ही गोल कर सके, मगर फुर्तीला गोलकीपर विपक्ष को गोल करने में कामयाब नही होने देता और तुरंत बॉल को रोक लेता है, यह दृश्य काफी रोमांचकारी- होता है और दर्शको को भी इस में बहुत आनंद आता है, कई बार गोलकीपर की छोटी सी गलती या चूक काफी मंहगी पड़ जाती है, फुटबॉल में धक्कामुक्की बहुत होती है, क्योंकि हर खिलाड़ी बॉल अपने पाले में लेना चाहता है ताकि आसानी से गोल कर सके, आज फुटबॉल में ज्यादा पैसा और शोहरत है,फुटबॉल की अपेक्षा क्रिकेट का खेल सुस्त और मंद है, क्रिकेट मे न तो फुटबॉल जितना शक्ति प्रदर्शन होता है और न ही फुटबौल जितना जोश और उमंग होती है, वैसे तो फुटबॉल और क्रिकेट दोनो खेलो में ही सही भविष्यवाणी करना मुश्किल है, मगर लोकप्रियता के हिसाब से फुटबॉल क्रिकेट से काफी आगें है.

क्रिकेट और फुटबॉल दोनो में ही अथक परिश्रम और प्रयास की आवश्यकता होती है मगर फुटबॉल लोगो को इसलिए ज्यादा भाता है, क्योंकि इस में करो या मरो की स्थिति होती है और सारे खिलाड़ी जीतने का जीतोड़ प्रयास करते है. हर हालत में उन्हें गोल दागने की धुन सवार रहती है, यही कारण है कि फुटबॉल लोगों को क्रिकेट से ज्यादा पंसद है।

से ज्यादा क्यों भाता है ?

फुटबॉल मैच में क्रिकेट की तुलना में ज्यादा रोमांच होता है. इस खेल को खेलने के लिए खिलाड़ियो को मानसिक रुप से सावधान रहना पड़ता है और यही स्थिति फुटबॉल के दर्शकों की भी होती है. अगर थोड़ा सा ध्यान भटका तो दर्शक को कुछ समझ नही आता, इस खेल से दिमागी ताजगी के साथ कसरत भी हो जाती है.

इसी वर्ष फीफा वर्ल्डकप के दौरान लोगो में इस के प्रति अधिक उत्साह देखने को मिला, क्योंकि फुटबॉल के सारे मैच रात में होते थे, जिस से कामकाजी लोग भी आराम से मैच देख लेते थे,

क्रिकेट देशों के बीच एकता व भाईचारे को बढ़ावा देता है तथा शांति बनाए रखने के लिए खेला जाता है, लेकिन इस से देशवासियों को कोई खास लाभ नही होता जबकि फुटबॉल के जरिए समाज के जरुरत-मंदो को लाभ मिलता है, यह खेल एकता व शांति के लिए भी खेला जाता है. इस तरह फुटबॉल का खेल 2 उद्देश्यों को पूरा करता है, यही कारण है जो फुटबॉल को क्रिकेट से भिन्न और लोकप्रिय बनाता है।

फुटबॉल का खेल क्रिकेट से भी पहले शुरु हुआ था यह राजामहाराजाओं के समय से खेला जाता है, जबकि क्रिकेट के खेल को अंगरेजो ने शुरु किया.

फुटबॉल की लोकप्रियता का विशेष कारण यह भी है कि प्राचीन होने के कारण लोग अपनी पारंपरिक चीजों को अन्य चीजों के मुकाबले ज्यादा पंसद करते है।

दूसरी बात यह है कि फुटबॉल मैच बहुत कम देखने को मिलते है जबकि क्रिकेट मैच आएदिन होते रहते है. इसलिए जब कोई चीज कम होती है या दिखती है तो वह हमें ज्यादा पसंद आती है और हम उसकी जानकारी रखने लगते है.

दुनिया मे फुटबॉल को क्रिकेट से ज्यादा पसंद किया जाता है, क्योंकि यह फुर्तीला खेल है और इस में सभी खिलाड़ी बराबर की भागीदारी निभाते है, जबकि क्रिकेट एक सुस्त खेल है।

संकलन - अनुप कुमार

विश्व कप फुटबॉल : आयोजन एवं परिणाम

क्रम	आयोजनवर्ष	आयोजनस्थल	विजेता	उपविजेता
1	1930	उरुग्वे	उरुग्वे	अर्जेण्टाइना
2	1934	इटली	इटली	चेकोस्लोवाकिया
3	1938	फ्रांस	इटली	चेकोस्लोवाकिया
4	1950	ब्राजील	उरुग्वे	ब्राजील
5	1954	स्विट्जरलैंड	प. जर्मनी	हंगरी
6	1958	स्वीडेन	ब्राजील	स्वीडेन
7	1962	चिली	ब्राजील	चेकोस्लोवाकिया
8	1966	इंग्लैण्ड	इंग्लैण्ड	प. जर्मनी
9	1970	मेक्सिको	ब्राजील	इटली
10	1974	प. जर्मनीप.	जर्मनी	हॉलैण्ड
11	1978	अर्जेण्टाइना	अर्जेण्टाइना	हॉलैण्ड
12	1982	स्पेन	इटली	पं. जर्मनी
13	1986	मेक्सिको	अर्जेण्टाइना	पं. जर्मनी
14	1990	इटली.	जर्मनी	अर्जेण्टाइना
15	1994	सं. रा. अमेरिका	ब्राजील	इटली
16	1998	फ्रांस	फ्रांस	ब्राजील
17	2002	जापान-द. कोरिया	ब्राजील	जापान
18	2006	जर्मनी	इटली	जापान
19	2010	द. अफ्रीका	स्पेन	नीदरलैण्ड
20	2014	ब्राजील	अर्जेंटीना	जर्मनी

धोनी का टेस्ट से

जीत से शुरुआत और हार से अंत तक!

2009 में धोनी की कप्तानी से टीम इंडिया टेस्ट में नंबर वन बनी

01 धोनी ने पहला टेस्ट शतक (148 रन) पाकिस्तान के खिलाफ फैसलाबाद में लगाया जोकि किसी भारतीय विकेटकीपर का सबसे तेज शतक था।

2013 में धोनी, सौरव गांगुली को पछाड़कर भारत के सर्वश्रेष्ठ टेस्ट कप्तान बने। सौरव की कप्तानी में टीम ने 49 टेस्ट में से 21 मे जीते जबकि धोनी की कप्तानी में टीम ने 22 जीत का आंकड़ा पार किया। -----

726/9 रन का सर्वोच्च टेस्ट स्कोर टीम इंडिया ने धोनी की कप्तानी में 2009 में श्रीलंका के खिलाफ बनाया।

2012 में आस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट मैच में धीमी ओवर गति के लिए उन पर एक मैच का प्रतिबंध लगा ----

11 टेस्ट मैचों में लगातार टीम इंडिया ने धोनी की कप्तानी में कोई मैच नही गंवाया। इनमें से भारत ने आठ जीते और तीन ड्रॉ रहे।

02 बार धोनी टेस्ट में मैन ऑफ द मैच बने 2008 में मोहाली में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 92 और 68 रन की पारी खेलने के लिए और 2013 में चेन्नई में 224 रन की पारी खेलने पर

193 रन का धोनी का स्कोर तक विकेटकीपर के रुप में किसी भारतीय विकेटकीपर का सर्वाधिक स्कोर है। धोनी ने बुद्धि कुंदेरन द्वारा 1964 में बनाए 192 रन की पीछे छोड़ा।

4000 रन पूरे करने वाले धोनी पहले भारतीय विकेटकीपर है।

03 बार 2009, 2010 और 2013 में आइसीसी विश्व टेस्ट एकादश टीम मे चुने गए।

संन्यास, विराट युग शुरु

वनडे और टी-20 में करते रहेंगे भारत का प्रतिनिधित्व

करियर के दौरान ही क्रिकेट जगत के महानतम कप्तानों में अपना नाम शुमार करा चुके 'कैप्टन कूल' महेंद्र सिंह धौनी ने सभी को चौकाते हुए टेस्ट क्रिकेट से संन्यास की घोषणा कर दी। मेलबर्न में तीसरे टेस्ट मैच की समाप्ति के बाद धौनी ने अपना फैसला सुनाया। इसकी पुष्टि बीसीसीआई ने भी कर दी। बीसीसीआई ने इसके साथ ही भारतीय टेस्ट क्रिकेट में यह कहते हुए नए युग की भी घोषणा कर दी कि टीम इंडिया की कमान अब दिल्ली के दिलेर विराट कोहली संभालेगें। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सिडनी में होने वाले चौथे टेस्ट मे टीम उनकी ही अगुआई में मैदान पर उतरेगी। धौनी मेलबर्न मैच के बाद टीम के साथ तो रहेंगें, पर टेस्ट खिलाड़ी के तौर पर नही।

बीसीसीआई ने कहा कि टेस्ट रैंकिंग में भारत को नंबर वन बनाने वाले महानतम टेस्ट कप्तानों में से एक महेंद्र सिंह धौनी ने क्रिकेट से संन्यास लेने फैसला किया है। बीसीसीआई के सचिव संजय पटेल के बयान के अनुसार, महेंद्र धौनी ने वनडे और टी-20 प्रारुपों पर ध्यान लेने के लिए तुरंत प्रभाव से टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने का फैसला किया है। टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद महेंद्र सिंह धोनी के फैसले का सम्मान करते हुए बीसीसीआई टेस्ट क्रिकेट में उनके योगदान और भारत को दिलाए गौरवपूर्ण लम्हों के लिए उन्हें धन्यवाद देता है।

विवादो से भी रहा कैप्टन कूल का नाता

आज तक धौनी ने कोई बड़बोला बयान नही दिया न ही कभी उन्होने ऐसी बात की, जिससे लगा हो कि सफलता का नशा उनके सिर पर सवार हो गया हो। लेकिन विवादो से उनका नाता नही हो रहा हो, ऐसा भी नही, उन पर हमेशा अपने पसंदीदा खिलाड़ियों को टीम में जगह देने के आरोप लगते रहे है। कुछ लोग उन्हें हठी और जिद्दी कहते है। ये बात उनके नजदीकी भी स्वीकार करते है। वह बेशक रिएक्ट नही करते। सबकी बात सुनते भी है लेकिन जो एक बार सोच लेते है करते वही है। जब टीम में सीनियर खिलाड़ी हुआ करते थे, तो उनमें कई के साथ धोनी के सम्बन्ध कोल्डवार सरीखे बताए जाते है।

टकराने वालो का हुआ करियर खराब

धोनी की एक छवि चुप्पा कूटनीतिज्ञ की भी है। चले चलते है लेकिन चुपचाप उनकी पंसद और नापसंद भी एकदम तय है। टीम इंडिया में ऐसा कोई भी नही रह पाया, जिसने उनका विरोध किया। एक जमाने मे जिन स्टार क्रिकेटरो के बारे में माना जाता था कि उन्हें टीम को हटाना मुश्किल होगा और जिन क्रिकेटर को कप्तान की दौड़ में उनका प्रतिद्वंद्वी माना जाता रहा वो अब टीम में नही है और इस तरह बाहर हुए है कि उनके अन्तर्राष्ट्रीय करियर पर भी पूर्ण विराम लग गया सा माना जा सकता है।

बन गए अकूत संपत्ति के मालिक

धोनी की जीवनशैली समय के साथ बदलती गई। वह भारतीय क्रिकेट में सबसे ज्यादा पैसा कमाने वाले खिलाड़ी है। उनके पास प्रचुर संपत्ति है। तमाम जगहो पर धन निवेश कर रखा है। महंगी कारो और बाइक का काफिला है उनके पास देश के महानगरो में उनके पास आलीशान फ्लैट है। रांची में उनका नया बंगला वहा के सबसे शानदार घरो में है। इसके बावजूद उनके दोस्त कहते है कि वह आज भी नही बदले है। जमीन से उतने ही जुड़े है, कितना पहले थे। सफलता के बावजूद उनका व्यक्तिगत्व सामान्य लोगो जैसा ही है। आज भी वह उतने ही शर्मीले है जितना पहले थे।

सचिन के बाद सबसे बड़ा नाम

देश की बहुर्राष्ट्रीय, कंपनियों, कॉरपोरट जगत और खेल प्रेमियों को सचिन तेंदुलकर के बाद जिस बड़े आयकन की तलाश थी, वो धोनी पर आकर खत्म होती हुई लगी। ब्रॉड धोनी को और बड़ा बनाने का काम कभी उनके साथ रणजी ट्रॉफी में खेल चुके वाराणसी के एक युवक अरुण पांडे ने किया। करीब 16 साल पहले अरुण पांडे उन्हे लेप आम स्पिन गेंद कर रहे थे।

संकलन- अनुप कुमार

टेस्ट क्रिकेट में धौनी सबसे आगे

भारतीय कप्तान	मैच	जीते	हारे	ड्रॉ	जीतप्रतिशत
एमएस धौनी	60	27	18	15	45.00
सौरभ गांगुली	49	21	13	15	42.85
मुहम्मद अजहरुद्दीन	47	14	14	19	29.78
सुनील गावस्कर	47	9	8	30	19.14
नवाब पटौदी	40	9	9	22	22.50

फरवरी माह के जन्में व्यक्तियों का अंक -ज्योतिष फल

मूलांक 1

जन्म तिथि 1,10,19, 28 फरवरी

सूर्य, यूरेनस और शनि आपके शुभ ग्रह है।

आर्थिक दशा जुए और सट्टेबाजी से बचिए। कभी-2 शीघ्र धन कमाने के प्रयास में आप सीमा का अतिक्रमण करने लगेगें।

स्वास्थ्य 1,10,19 फरवरी को जन्म लेने पर आपमें प्रचुर मानसिक शक्ति होगी किन्तु 28 फरवरी को जन्में व्यक्ति के समान शारीरिक नही होगी।

रंग- सूर्य सुनहरा, पीला, नारंगी, भूरा।

भारत रत्न है हीरा, नीलम, अम्बर और पुखराज।

मूलांक 2

जन्म तिथि 2,11,20,29 फरवरी

ग्रह है चन्द्रमा और नेप्च्यून।

आर्थिक दशा अपनी योग्यता से ही आप जीवन के अन्तिम वर्षो में धनी होने की सम्भावना है, लेकिन धन या सम्पत्ति विरासत में भी मिल सकती है।

स्वास्थ्य आपके शरीर का अच्छा गठन होगा और 'सादा जीवन' बिताने के लिए कुछ नियम बना लेगें

रंग- सफेद, क्रीम **रत्न-** मोती

मूलांक 3

जन्म तिथि 3,12,21,30 फरवरी

आपके कारक ग्रह गुरु और शनि है।

आर्थिक दशा आप कोई काम करें, सामान्य से अधिक सफलता और पदा-लाभ की दशा कर सकते है। कभी-कभी बुद्धिमत्ता के बावजूद आपको धन-हानि सामना करना पड़ सकता है।

स्वास्थ्य आपको पांव का दर्द, जिगर में सूजन, रक्त शिराओं का और धमनियों का कड़ा पड़ना और उच्च रक्तचाप जैसे रोगो का खतरा हो सकता है।

रंग हल्का , जामुनी, हल्का फाल सई।

रत्न कटैल (अमैथिस्ट) और जामुनी रंग के नग।

मूलांक 4

जन्म तिथि 4,13,22 फरवरी

आपके कारक ग्रह यूरेनस, सूर्य शनि है।

आर्थिक दशा पैसा आपको उतना आकर्षित नही करेगा जिसका एक औसत आदमी को करता है।

स्वास्थ्य जब तक आप मन से प्रसन्न है और अपने काम दिलचस्पी से करते है, आप स्वस्थ रहेगें और रोग आपके पास नही फटकेगें।

मूलांक 5

जन्म तिथि 5,14,23 फरवरी

आपका कारक ग्रह है शनि के साथ बुध

आर्थिक दशा ये दिमाग लगाकर अक्सर धन कमा लेते है लेकिन पैसो को बचा नही पाते।

स्वास्थ्य इनकों कभी-कभी जिगर, तिल्ली गुर्दा और पित्ताशय की शिकायत हो जाएगी।

रंग सभी हल्के रंग, विशेषकर सफेद या चमकीले।

रत्न हीरे तथा सफेद चमकीले नग।

मूलांक 6

जन्म तिथि 6,15,24 फरवरी

इनके कारक ग्रह शुक्र और शनि है।

आर्थिक दशा आर्थिक मामलो में आप अनेक मूर्खतापूर्ण काम कर सकते है और हवाई योजना में फंस जाते है। सार्वजनिक उद्यमों अथवा जनता के सहयोग वाले कामों में सफल होगें।

स्वास्थ्य ये प्राय: पेट के रोगो से ग्रस्त रहते है। इन लोगो को जहां तक हो सके मदद के पदार्थो और दवाओ से बचे।

भाग्यवर्धक रंग हल्के से गहरे तक नीला।

मूलांक 7

जन्म तिथि 7,16,25 फरवरी

ग्रह - नेपच्यून, चन्द्र, यूरेनस और शनि है।

आर्थिक दशा - आप मे भौतिक लाभ की चिन्ता नही करते है, आप को परामर्श दिया जाता है कि सरकारी बॉंड जैसी चीजो पर कम आय से संतुष्ट रहें व जुए से बचे

स्वास्थ्य -आप प्राय पेट के रोगो से ग्रस्त रहते है आपसे जहा तक सम्भव हो सके मादक पदार्थो व दवाओं (मादकयुक्त) से बचें।

रंग- हरा, क्रीम, सफेद, कबूतरी रंग।

मूलांक 8

जन्म तिथि 8,17,26 फरवरी

आपके ग्रह है शनि (सौम्य) और यूरेनस।

आर्थिक दशा यदि पक्का इरादा कर ले तो पैसा कमा सकते है, विशेषकर 26 फरवरी में जन्मे व्यक्ति। लेकिन विपरित लिंगियों की कार्रवाइयों अथवा मुकदमें बाजी या धोखाधड़ी से उसे गंवा देने की सम्भावना है।

स्वास्थ्य अंदर से जैसे है, उसकी अपेक्षा ऊपर से अधिक स्वस्थ दिखाई देगें। बीमारी के पूर्व चेतावनी बहुत कम मिलती है या बिल्कुल नही मिल पाती। आकस्मात् दिल के दौरे से या दिमाग मे खून का थक्का जमने के खतरें है।

भाग्यवर्धक रंग गहरे नीले और लाल को छोड़ अन्य गहरे रंग।

भाग्यवर्धक रत्न नीलम, काला मोती और काला हीरा।

मूलांक 9

जन्म तिथि 9,18,27 फरवरी

आपके कारक ग्रह है मंगल और शनि (सौम्य)।

आर्थिक दशा धन के उपयोग का आपका ढंग दूसरों को आश्चर्य में डाल देगा। बहुत सम्भव है कि किसी गैर परम्परागत ढंग से अपने जीवनकाल में ही उससे छुटकारा पाले, उसे किसी ट्रस्ट को सौंप दे।

स्वास्थ्य स्वास्थ्य के बारे में अधिक भय नही होगा। उसके बारे में कम सोचेगें शायद इसलिए आम बीमारियों से बच जायेगें, किन्तु आपको फेफड़ो और दिल का ध्यान रखना चाहिए।

रंग आपके लिए सबसे अनुकूल रंग लाल है।

रत्न लाल, तामड़ा और सभी लाल नग।

पंडित जनार्दन शुक्ल

पंडित आनंद गुरूजी

भविष्य और आपका कल

मेष (मार्च 21 अप्रैल 19)

Aries

आपके लिए यह माह तनाव लेकर आ सकता है। आपको अपने लिए सही दिशा का चुनाव करना होगा। आर्थिक क्षेत्र में भी बहुत समझदारी से काम लेना होगा। आप दूसरों की मदद भी ले सकते है। भाग्यशाली रंग - हल्का नीला ।

वृषभ (अप्रैल 20 से मई 20)

Taurus

अक्टूबर माह आपके जीवन में कुछ बदलाव लेकर आएगा कार्यक्षेत्र में नयी शुरुआत होगी। सकारात्मक व्यवहार अपनाना होगा। आर्थिक लाभ होगा। स्वास्थ्य को लेकर सर्तकता बरतनी पड़ सकती है। भाग्यशाली रंग - सफेद ।

मिथुन (मई 21 से जून 20)

Gemini

पूरा माह ऊर्जा से भरपूर रहेगा। कार्यक्षेत्र में तरक्की मिलेगी। रिश्तों के मामले में भी थोड़ा - बहुत तनाव झेलना पड़ सकता है। धन लाभ होगा। आत्मविश्वास बनाये रखें स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। भाग्यशाली रंग - हरा नीला।

कर्क (जून 21 से जुलाई 22)

Cancer

इस माह आपके कार्ड्स स्थान-परिवर्तन के बारे में बता रहें है। कार्यक्षेत्र में पुराने अनुभवो का प्रयोंग करें। सफलता अवश्य मिलेगी। धन लाभ हो सकता है। खुशियां प्राप्त होगी। नये रास्ते खुलते नजर आएगें भाग्यशाली रंग - सफेद / बैंगनी।

तुला (सितम्बर 23 से अक्टूबर 22)

Libra

अक्टूबर माह में अर्थव्यवस्था गड़बड़ हो सकती है । नई चुनौतियां आपका इंतजार कर रही है। पैसे का सही निवेश आवश्यक रहेगा। यात्रा की संभावना है। स्वास्थ्य अच्छा रहेंगा । भाग्यशाली रंग - हल्का नीला।

मकर (दिसम्बर 22 से जनवरी 19)

Capricorn

अक्टूबर माह में आपके लिए यात्रा के संजोग बन रहे है। यदि आपका मन किसी काम को करने की गवाही नही दे रहा, तो उसे मत करें । किसी कार्य में पैसे लगाने पड़ सकते है। भाग्यशाली रंग - सफेद ।

सिंह (जुलाई 23से अगस्त 22)

Leo

माह के प्रारभ में परिस्थितियां असमंजस से भरपूर रहेंगी। आर्थिक दृष्टि से लाभ मिलेगा। अपने कार्य व रिश्तो मे संतुलन बना पायेगें। व्यवहार में खुलापन लाना होगा। भाग्यशाली रंग - पीला/हरा ।

वृश्चिक अक्टूबर 23 से नवम्बर 21)

Scorpio

माह की शुरुआत संवेदनाओं व भावनाओं के साथ होगी। उपल्बधियों और अवसरों के बीच अच्छा संतुलन बना पायेगें। माह के अंत में सफलता प्राप्त होगी। स्वास्थ्य के प्रति सतर्कता बरतनी होगी। भाग्यशाली रंग - हरा।

कुंभ (जनवर 20 से फरवरी 18)

Aquarius

आपके लिए यह माह काफी मिला-जुला रहेगा। शुरुआत में आर्थिक निवेश को लेकर बड़ो के साथ कुछ कहा सुनी हो सकती है। आपके जीवन में काफी सक्रिय बदलाव आएंगे। भाग्यशाली - नारंगी।

कन्या (अगस्त 23 से सितम्बर 22)

Virgo

आपके लिए यह माह अति उत्तम रहेगा। माह की शुरुआत किसी अच्छी खबर के साथ होगी । कार्यक्षेत्र में कामयाबी मिलेगी। किसी भी कागज पर पढ़े बिना हस्ताक्षर न करें। भाग्यशाली रंग - लाल

धनु (नवम्बर 22 से दिसम्बर 21)

Sagittarius

माह की शुरुआत कड़ी मेंहनत के साथ होगी। आपको इसके अच्छे परिणाम भी मिलेंगे। आपको अपना आत्म-मूल्यांकन करने और आत्मविश्वास बढाने की जरुरत है। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा । भाग्यशाली रंग - बैगनी।

मीन (फरवरी 19 से मार्च 20)

Pisces

माह की शुरुआत थोड़ी-बहुत रुकावटो के साथ होगी । लेकिन, इसके बाद कामयाबी, तरक्की व खुशियों का स्वाद भी चखने को मिलेगा । कार्यक्षेत्र में काफी बड़ी जिम्मेदारियां मिल सकती है। भाग्यशाली रंग - गुलाबी।

Vrishali

Mamta

Farihaya Akhatar

Manpreet

Shiv, Nitin, Ritu, Gyanendra, Manpreet, Rishi, Istafa

उत्सव

मौका था पेंटासॉफ्ट के वार्षिक उत्सव का जिसमें छात्र-छात्राओं के साथ अध्यापकों ने भी खूब मौज-मस्ती की।

Ajeetesh

Heena

Pragya, Hena, Vrishali, Prekshe, Karan, Vishal

Pankaj, Pawan, Arvind

Penta Group

Nidhi

हल्ला मत मचाओ अपने को देखो और सुधारो!

मतददाता जागरण अभियान

जातिवाद, झूठी शान छोड़ो — देश से नाता जोड़ो

निवेदक : डॉ. नीरज राष्ट्रीय संयोजक

क्रांतिकारियों देश भक्तों ने अपने प्राण की बाजी लगाकर इस देश से अंग्रेजों को भगाया तथा लोकतंत्र की रक्षा के लिए मतदान कर व्यवस्था कराई, पर मतदाता देशहित-क्षेत्रहित आने वाली पीढ़ियों. क्रांतिकारियों के सम्मान अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को छोड़कर जातिवाद, झूठीशान, शराब की पन्नी, पूड़ी-कचौड़ी, पचास -सौ रूपायों आदि गन्दे विचारों के आधार पर मतदान करता है। वोटों की गन्दी राजनीति पूरे समाज को खाये जा रही है। यदि मतदाता देशहित-क्षेत्रहित आनेवाली पीढ़ियों, क्रान्तिकारियों के सम्मान, अपनी मूलभूत आवश्यकाताओं, शिक्षा, चिकित्सा आदि मुद्दों के आधार पर मतादान करें तो कोई भी नेता जातिवाद, पार्टीवाद,क्षेत्रवाद,धर्मवाद आदि के आधार पर चुनाव लड़ने का टिकट लेकर आपके बीच नहीं आयेगा, बस ऐसा करके ही मतदाता का खोया सम्मान वापस आ जायेगा। क्योंकि मतदाता का खोया सम्मान वापस आना ही 'दूसरी आजादी का आन्दोलन' है।

- मतदाता की छोटी- सी भूल देश व आने वाली पीढ़ियों का सर्वनाश कर सकती है।
- यह दुर्भाग्य है कि जिन्हें देश और आने वाली पीढ़ियों के हित के लिए कार्य करना चाहिए वे लोग किसी एक व्यक्ति अथवा एक दल के लिए कार्य कर रहे है।
- आज की राजनीति उसी तरह की हो गयी है जैसे पट्टीदारों का झगड़ा, यह न तो समग्र समाज के हिम में, न ही देशहित में है ।
- क्रांतिकारियों और देशभक्तों ने अपने जान की बाजी लगाकर लोकतंत्र दिया, परंतु आज हम वोटों की गन्दी राजनीति कर, बुरे समाज में फसकर उनके समने को चकनाचूर करने पर तुले है।
- वोटों की गन्दी राजनीति पूरे समाज को खाये जा रही है।
- लोकतंत्र की व्यवस्था में मतदान न करना क्रांतिकारियों का अपमान है।
- जब हम अपने बच्चों के लिए अच्छा मकान और अच्छी शिक्षा देने को प्रयत्नशील है तो अच्छा समाज बनाना भी हमारी ही जिम्मेदारी है।
- बुद्धिजीवियों, समाजसेवियों का अपमान आज नहीं तो कल समाज के लिए बहुत महंगा होगा।
- पूरी व्यवस्था जनता के पैसे से चल रही है, पर जनता समझती है कि सरकार हमारा पेट भरती है।
- दूसरी आजादी आन्दोलन की शुरूआत 20 नवम्बर 1997 को हुई।

प्रिय मतदाताओं देश के नवनिर्माण में सहयोग करें!

डॉ. नीरज राष्ट्रीय संयोजक, दूसरी आजादी आन्दोलन

RNI.UPHIN/2014/45465

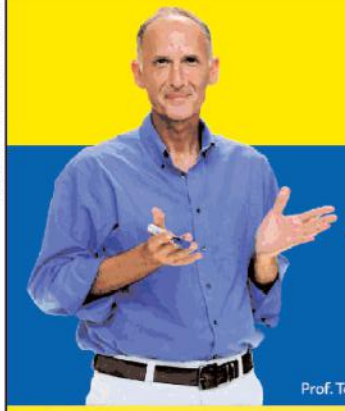

Just Success or Global Success?

Explore the new horizons of education with
International faculty and World-class curriculum.
Come see it to believe it!

Prof. Tony Summers (London, UK)

Sharda - A Truly Global University
Our 360° Global Approach

- A galaxy of permanent foreign faculty from renowned institutes all over the world - because there are no borders in learning.
- 100 students from over 15 countries including Australia, the US and Canada to name a few. This allows maximum cross-cultural exchange and learning. Many more have chosen Sharda University over others this year.

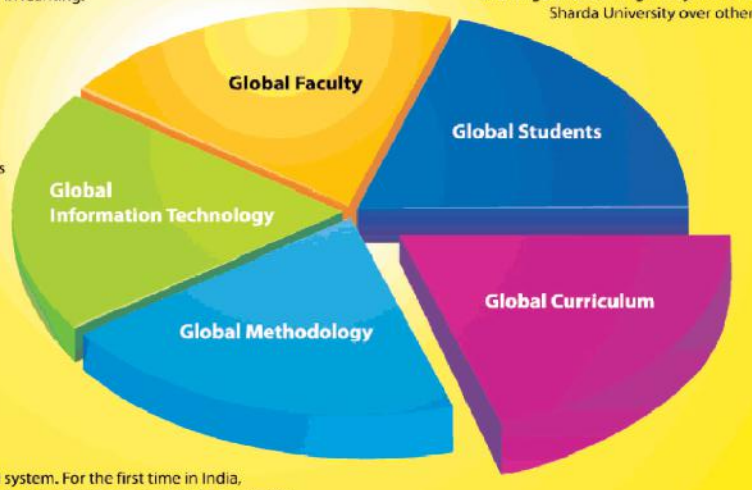

- Over US$ 2 millions have been invested in world class software & IT solutions.
- Fully flexible credit based system. For the first time in India, students can opt for interdepartmental courses, which means you can choose subjects of your choice and excel in them.
- Best modern learning practices of the UK and the US and a world class course curriculum are in place, which focus on application based learning instead of conventional memory based approach.

FIGURE/1068

No Donations/Capitation fee are taken for admission at Sharda University. Any such demand should be reported to complaint@sharda.ac.in • Ragging free campus.

Sharda University with its Global vision is bringing a new thinking in education to meet the emerging aspirations of the next generation.

Most Preferred University in NCR Apart from students of over 15 countries, there are students from 28 Indian states and Union Territories. Fusion of races, ethnicity and cultures makes it a multi-cultural and multi-dimensional campus with respect and space for all.

World-Class Campus Sharda University's fully wi-fi, 63 acre campus with two million sq.ft. built-up area, has AC networked classrooms with AV aids and complete Digital Learning Management System with 24x7 connectivity. It is the only university which offers multi-sports complex, dedicated fields for cricket, football, hockey etc. and facilities for basketball, badminton, gym and billiards room. Upcoming facilities include 2 lac sq.ft. sports complex, Olympic size swimming pool, indoor stadium and an auditorium to seat over 1000 people. Separate boys and girls hostel to accommodate over 1500 students (AC options available), 500 bed multi speciality medical hospital and several food courts are there on campus. Sharda University is just 25 minutes drive from Delhi.

Campus life Apart from academics, Sharda University campus is abuzz with activities, sports & cultural festivals, and various student initiatives all the year round. Chorus is the Annual College Fest.

SGI Heritage Largest educational group of North India • 15 years' experience in education sector • Over 20,000 students • 12,000+ alumni • 100+ programs • More than 167 acres of campus in 3 locations- Agra, Mathura & Greater Noida • 1200+ Indian & International faculty • 4,00,000+ sq. mtr. built up area • Over 80% placement record.

UGC Approved Courses Over 75 courses in Management, Medical, Dental, Engineering, Mass Comm, Biotechnology and Clinical Research to choose from. Another first is a 500 Bed Hospital on the campus for Medical and Allied Sciences. For details of specializations in each course, log on to www.sharda.ac.in

BBA MBA	MBBS* BDS*	B.Tech M.Tech
BCA MCA	B.Com (Prof.)	Biotechnology
Mass Comm.	Nursing	Clinical Research

Sharda University has received the **Best Private University Award 2010** in Uttar Pradesh.

Join us on : YouTube

http://twitter.com/shardauniv
http://youtube.com/shardauniv

Last Date 21st August 2010

*Conditions Apply

63 acre Greater Noida Campus

For details log on to:
www.sharda.ac.in Live Chat
Toll Free: 1800-102-6999
(7am to 8pm)
SMS: SHARDA to 53030

Campus: Plot No. 32-34, Knowledge Park 3, Gr. Noida 201306. Ph.: 0120-3121001.
Delhi Corporate Off.: M-11, South Extn. Part-II, New Delhi 110049. Ph.: 011-26262992/3/4

SHARDA UNIVERSITY
Beyond Boundaries

Approved vide Act no. 14 of 2009 of UP Govt. and recognised by UGC.